

राष्ट्रीय शिक्षा नीति और साहित्य

(राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी में प्रस्तुत चुने हुए प्रपत्र का संकलन)

संपादक

डॉ. संगीता घाटे

डॉ. रमेश बहादुर क्षत्रिय

डॉ. अजय रावल

प्रकाशक

सुरभि पब्लिकेशन, अहमदाबाद

राष्ट्रीय शिक्षा नीति और साहित्य (राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी में प्रस्तुत चुने हुए प्रपत्र का संकलन), संपा. डॉ. संगीता घाटे, डॉ. रमेश बहादुर क्षत्रिय, डॉ. अजय रावल

ISBN 978-93-93608-10-9

© श्री उमिया आटर्स एण्ड कामर्स कालेज फॉर गल्स, सोला, अहमदाबाद

प्रथम संस्करण: 2022

पृष्ठ संख्या 64

मूल्य: 65

प्रकाशक

सुरभि पब्लिकेशन, अहमदाबाद

टाइप-सेटिंग्स

अजित मकवाणा

से. 13/ए, प्लॉट नं. 662/2,

गांधीनगर-382016

मुद्रक

ब्रिगर मीडिया प्रा.लि.

86-3/5, अग्रवाल इन्ड. एस्टेट, माधुपुरा पोलीस स्टेशन के पास,

महेंदी कुआ रोड, शाहपुर, अहमदाबाद-380004

श्री मेघमणी परिवार एण्ड श्री भाईलाल भाई पटेल (देक्तोजवाला) श्री उमिया आर्ट्स एण्ड कामर्स कालेज फॉर गल्स, सोला, अहमदाबाद का प्रारम्भ कुछ विशेष उद्देश्यों को लेकर हुआ है। कम से कम खर्च में उत्तम, गुणवत्तापूर्ण, बहुउद्देशीय शिक्षण विशेषकर ग्रामीण क्षेत्र की लड़कियों को प्रदान करना रहा है।

महाविद्यालय का प्रत्येक विभाग समय के अनुरूप वर्तमान प्रवाह को ध्यान में रखते हुए विभागीय आयोजन करता रहा है। ऐसे विभागीय आयोजनों को आयोजित करने में हिन्दी विभाग का विशेष स्थान है। हिन्दी विभाग समय-समय पर विभिन्न विषयों पर वक्तव्य के लिए अतिथि विषय विशेषज्ञों को आमंत्रित करता रहा है। हिन्दी विभाग ने कुछ वर्ष पूर्व यूजीसी सायोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया था। जिसमें देश के प्रख्यात विद्वान पधारे थे। प्रो. नामवर सिंह, प्रो. रामदरश मिश्रा, प्रो. रघुवीर चौधरी, प्रो. तुलसीराम, प्रो. महावीर सिंह चौहान, प्रो. अवधेश कुमार सिंह, पुष्पामैती जैसे अनेक विद्वान एवं सर्जक साहित्य के प्रजातंत्र में दलित एवं सभी विषय पर विभिन्न दृष्टिकोणों से अपने विचार रखे थे। इसी निरंतरता में हमारे महाविद्यालय के हिन्दी विभाग और केन्द्रीय विश्वविद्यालय गुजरात ने संयुक्त रूप से राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी को आयोजित किया था। इस राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2025 के विविध आयामों पर चर्चा हुई। ‘राष्ट्रीय शिक्षा नीति और साहित्य’ शीर्षक के संदर्भ में संगोष्ठी को चार सत्रों में, विद्वानोंने सम्बोधित किया।

मिलों, हम सब जानते हैं कि अथाक परिश्रम के पश्चात वर्षों बाद नई राष्ट्रीय शिक्षण नीति -2020 तैयार की गयी है। इसका क्रियात्वनन भी प्रारम्भ हो गया है। साथ ही साथ हम सभी यह भी जानते हैं कि भारत अत्यंत प्राचीन एवं विशाल देश है। इसकी सभ्यता और संस्कृति भी उतनी ही प्राचीन एवं समृद्ध है।

‘सर्वे भवन्तु सुखिन्’ और ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ का आदर्श विश्व के समक्ष प्रस्तुत करने

वाला भारत राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 के माध्यम से भावी पीढ़ि में विज्ञान और तकनीकी शिक्षा के साथ-साथ भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, नैतिक मूल्यों की उच्चता के संरक्षण और संवर्धन के लिए प्रतिबद्ध है ।

इन सभी पहलुओं को ध्यान में रखकर 21 मार्च, 2022 को इस राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी को आयोजित किया गया । इस राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का प्रारंभ ज्ञानपीठ पुरस्कार से पुरस्कृत साहित्यकार प्रो. रघुवीर चौधरी के उद्घोषन से हुआ । बिच वक्तव्य देते हुए केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमाशंकर दुबे ने भारत के प्राचीन गौरवशाली सभ्यता और संस्कृति को याद करते हुए विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से अपनी बात रखी । चार सत्रों में विभाजित इस राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी के पहले सत्र के वक्ता काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के बनारस के प्रो. सदानन्द शाही एवं केन्द्रीय विश्वविद्यालय गुजरात प्रमोटरकुमार तिवारी थे । विज्ञान वक्ताओं ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं के संरक्षण के संकल्पों का उल्लेख करते हुए भारतीय भाषाओं में निहित ज्ञान की समृद्ध परम्परा को रेखांकित किया । डॉ. गजेन्द्र मीणा ने आदिवासी भाषाओं की विशेषताओं पर प्रकाश डाला । दूसरा सत्र प्रादेशिक भाषा - गुजराती साहित्य पर केन्द्रित था । डॉ. शिल्पा पोपट एवं डॉ. अजय चौहान इस सत्र के प्रमुख वक्ता थे । वक्ताओं ने गुजराती साहित्य माध्यम से प्रादेशिक भाषाओं में व्यक्त भारतीयता, समाज और उनके मूल्यों की चर्चा की । तीसरे सत्र के प्रमुख वक्ता प्रो. बद्रीनारायण और प्रो. संजीव दुबे थे । विद्वान वक्ताओंने साहित्य के और समाज के पारस्परिक संबन्धों पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला । चौथे सत्र में प्रपत्रों का वाचन हुआ । कुछ प्रपत्र ई-मेल से प्राप्त हुए थे । इन्हीं प्रपत्रों में से कुछ प्रपत्रों को मुद्रित कर आप सभी के सामने प्रस्तुत करने में मुझे हर्ष हो रहा है । मुद्रित जौ प्रपत्र है । डॉ. संगीता घाटे, डॉ. अजय रावल, प्रो. गार्गी गोहिल, डॉ. बलदेव प्रजापति, डॉ. विपिन वाघेला, प्रो. मानसी पटेल, प्रो. सुमित्रा पटेल, डॉ. अरविन्द वाघेला, निर्मला जोशी के प्रपत्र मुद्रित किए गये हैं । इन प्रपत्रों में कुछ प्रपत्र प्रस्तुत कर्ताओं ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सैद्धान्तिक पहलुओं की चर्चा की है, तो कुछ ने साहित्य के माध्यम से अपनी बात रखी है । आशा करता हूँ की विद्या कार्य आपको उपयोगी होगा ।

धन्यवाद,

डॉ. संगीता घाटे
डॉ. रमेश बहादुरसिंह क्षत्रिय

अनुक्रम

१. राष्ट्रीय शिक्षा नीति और उच्च शिक्षा.....	डॉ. संगीता घाटे.....	०७
२. राष्ट्रीय शिक्षा नीति में विदेशी भाषा का समावेशः चीनी भाषा के संदर्भ में.....	स्वामी कुंदन किशोर	१२
३. फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में लोक संस्कृति	प्रो. सुमित्राबेन के. पटेल	१३
४. New Education Policy-2020: Approaches, Opportunities and Challenges for the Teachers.....	Gargi Gohel	१९
५. National Education Policy-2022.....	Dr. Bipin M. Vaghela... ६. उच्च शिक्षणना संदर्भमां भारतनी नवी राष्ट्रीय शिक्षा नीति.....	२४
७. राष्ट्रीय शिक्षणनीति-२०२० अने मातृभाषा.....	प्रो. मानसीबेन जे. पटेल..... डॉ. बण्डेव प्रजापति	२७ ३५
८. 'शानसुधा' अने प्रार्थनासमाज	अजय रावल	४१
९. कुटुंबकथा निभिते भारतीय मूल्योनी शोध करती प्रशिक्षि उडिया नवलकथा:	'माटीनो मानवी'	५३
१०. 'युगवंदना' - जवेरचंद मेधाषी.....	डॉ. अरविंद वाघेला..... प्रो. निर्भवा जोशी.....	६२

राष्ट्रीय शिक्षा नीति और उच्च शिक्षा

डॉ. संगीता घाटे

प्राचार्या, श्री उमीया आर्ट्स और कॉर्मस कॉलेज फॉर गल्स, सोला

- नई शिक्षा नीति 2020 का मुख्य उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण बहुमुखी प्रतिभा वाले रचनात्मक व्यक्तियों का विकास करना है। छात्रों के चरित्र निर्माण नैतिक एवं संवैधानिक मूल्यों, बौद्धिक जिज्ञासा, वैज्ञानिक तथा व्यावसायिक तकनीकी विषयों सहित विभिन्न विषयों में विकसित करना मुख्य उद्देश्य है। इसके तहत विश्वविद्यालयों द्वारा नए पाठ्यक्रम तैयार किए जा रहे हैं जिसमें कला एवं मानवीकी के छात्र विज्ञान सीखे और सभी व्यावसायिक विषय और व्यवहारिक कौशल सॉफ्ट स्किल को हासिल करें।
- भारतीय शिक्षा और बहु विषयक वातावरण को प्रोत्साहित करने के लिए इन विषयों में सभी सातक उपाधि कार्यक्रमों में क्रेडिट सिस्टम का प्रावधान रखा गया है।
- डिग्री कार्यक्रमों की अवधि और संरचना में सातक उपाधि 3 या 4 वर्ष की रखी है जिसमें उपयुक्त प्रमाण पत्र के साथ निकास के कई विकल्प रखे गए हैं, उदाहरण के तौर पर व्यवस्थाएं तथा पेशेवर क्षेत्र सहित किसी भी विषय अथवा क्षेत्र में 1 साल पूरा करने पर सर्टिफिकेट 2 साल पूरा करने पर डिप्लोमा या 3 साल के कार्यक्रम के बाद सातक की डिग्री 4 वर्षीय सातक प्रोग्राम जिसमें बहुत विषयक शिक्षा को बढ़ावा दिया जाना मुख्य है।
- छात्रों के प्रवेश तथा एग्जिट में लचीलापन - फ्लैक्सिबिलिटी रखी गई है।
- लगभग सभी विश्वविद्यालयों ने नए स्वनिर्भर पाठ्यक्रम शुरू किए हैं।
- विश्वविद्यालयों में डिजिटल लॉकर की व्यवस्था की जा रही है जिससे छात्रों की डिप्रियां उस पर अपलोड की जाएंगी, साथ ही इनक्यूबेशन सेंटर, प्रौद्योगिकी विकास केंद्र, अनुसंधान के प्रमुख क्षेत्रों के केंद्र, सेंटर ऑफ एक्सीलेंस की स्थापना विश्वविद्यालय में की जा रही है।
- ओपन डिस्टेंस लर्निंग के माध्यम से अभ्यासक्रम उपलब्ध कराए जाने का प्रावधान विश्वविद्यालयों द्वारा किया जा रहा है।
- स्थानीय उद्योग व्यवसाय, कलाकार, शिल्पकार आदि के साथ इंटर्नशिप और अध्यापकों और शोधार्थियों के साथ शोध इंटर्नशिप का प्रावधान किया गया है।
- विश्वविद्यालयों में शिक्षकों के ट्रेनिंग कार्यक्रमों को प्रभावी बनाने के लिए योजना बनायी जा रही है।

- विश्वविद्यालयों एवं सभी शैक्षणिक संस्थाओं को नवाचार के लिए प्रोत्साहित किया गया है। साथ ही नवाचार की कोई भी नई बात अन्य विश्वविद्यालयों के साथ में भी साझा करने के लिए विश्वविद्यालयों को निर्देश दिए हैं।
- विश्वविद्यालयों ने अन्य शैक्षणिक संस्थाओं औद्योगिक संस्थान के साथ में एमओयू किए जा रही है।
- सभी विश्वविद्यालयों को इनफार्मेशन कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी का महत्तम उपयोग करने के निर्देश दिए गए हैं तथा विश्वविद्यालयों ने महत्तम उपयोग करना शुरू किया है।
- छात्रों को स्कॉलरशिप, आर्थिक सहायता तथा सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार योजना भी विश्वविद्यालयों ने शुरू की है।
- इंटर डिपार्टमेंट साथ ही इंट्रा डिपार्टमेंट क्रेडिट ट्रांसफर की व्यवस्था, इसी तरह से छात्रों को रिसर्च में इंट्राडिसिप्लिनरी शोध को बढ़ावा देने के लिए, मेजर माइनर रिसर्च प्रोजेक्ट, मल्टीडिसीप्लिनरी अभ्यासक्रम को बढ़ावा देने के लिए पहल की गई है।
- ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं के उत्कर्ष एवं प्रगति के लिए विश्वविद्यालयों द्वारा महिला अध्ययन केंद्र की स्थापना की गई है।

नई शिक्षा नीति 2020 : अमल एवं सुझाव

नई शिक्षा नीति 2020 का मुख्य उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण, अच्छे चिंतनशील, बहुमुखी प्रतिभा वाले, रचनात्मक व्यक्तियों का विकास करना है। यह एक व्यक्ति को एक या एक से अधिक विशिष्ट क्षेत्रों में गहन स्तर पर अध्ययन करने में सक्षम बनाती है और साथ ही चरित्र, नैतिक और संवैधानिक मूल्यों बौद्धिक जिज्ञासा, वैज्ञानिक स्वभाव, रचनात्मकता सेवा की भावना और विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, मानवीकी, भाषा, साथ ही व्यावसायिक, तकनीकी और व्यवसायिक विषयों सहित विभिन्न विषयों में विकसित करना मुख्य उद्देश्य है।

- NEP-2020 के तहत उच्च शिक्षण संस्थानों में सकल नामांकन अनुपात' (Gross Enrolment Ratio) को 26.3% (वर्ष 2018) से बढ़ाकर 50% तक करने का लक्ष्य रखा गया है।
- युवाओं की आकांक्षा के अनुरूप गुणवत्तापूर्ण समान अवसर देने वाली एवं समावेशी उच्चतर शिक्षा देने का उद्देश्य है। बहु विषयक सातक शिक्षा की ओर बढ़ना मुख्य उद्देश्य है।
- शिक्षा के साथ कला एवं मानविकी के छात्र भी विज्ञान सीखे कोशिश यही होगी कि सभी व्यावसायिक विषय और व्यावहारिक कौशल (सॉफ्ट स्किल्स) को हासिल करें।

- विश्वविद्यालय को छात्रों के लिए समाजोपयोगी नीड बेस्ड - अभ्यासक्रम / पाठ्यक्रम तैयार करने होंगे ।
- भारतीय शिक्षा और बहु विषयक वातावरण को प्रोत्साहित करने के लिए मजबूत करना इन विषयों में सभी सातक उपाधि कार्यक्रमों में क्रेडिट दिया जाय ।
- डिग्री कार्यक्रमों की अवधि और संरचना में सातक उपाधि 3 या 4 वर्ष की अवधि की होगी जिसमें उपयुक्त प्रमाण पत्र के साथ निकास के कई विकल्प होंगे । उदाहरण के तौर पर व्यवस्थाएं तथा पेशेवर क्षेत्र सहित किसी भी विषय अथवा क्षेत्र में 1 साल पूरा करने पर सर्टिफिकेट, 2 साल पूरा करने पर डिप्लोमा या 3 साल के कार्यक्रम के बाद सातक की डिग्री, 4 वर्षीय सातक प्रोग्राम जिसमें बहु विषयक शिक्षा को बढ़ावा दिया जाएगा ।
- एक अकादमिक क्रेडिट बैंक स्थापित किया जाएगा जो अलग-अलग मान्यता प्राप्त उच्च शिक्षण संस्थानों से प्राप्त क्रेडिट को डिजिटल रूप से संकलित करेगा ताकि प्राप्त क्रेडिट के आधार पर उच्च शिक्षण संस्थान द्वारा डिग्री दी जा सके ।
- स्टार्टअप, इनक्यूबेशन सेंटर, प्रौद्योगिकी विकास केंद्र, अनुसंधान के प्रमुख क्षेत्रों के केंद्र, अधिकतम उद्योग, अकादमिक जुड़ाव और मानविकी और सामाजिक विज्ञान अनुसंधान सहित अंतर विषय अनुसंधान की स्थापना करके अनुसंधान और नवाचार पर फोकस करना ज़रूरी है ।
- छात्र समुदाय के बीच नवाचार को बढ़ावा देने के लिए उचित प्रशिक्षण संस्थान विशिष्ट हैंडहोल्डिंग तंत्र विकसित करेगा ।
- सीखने के लिए सर्वोत्तम वातावरण व छात्रों को सहयोग शैक्षणिक संस्थाओं की तरफ से प्राप्त होगा । इसके लिए विश्वविद्यालय को व्यवस्था करनी होगी ।
- ओपन डिस्टेंस लर्निंग (ओडीएल) और ऑनलाइन शिक्षा गुणवत्ता पूर्ण उच्चतर शिक्षा तक पहुंच सुनिश्चित करने के लिए ओपन डिजीटल लर्निंग विस्तार की दिशा में ठोस प्रयासों के माध्यम से नवीनीकृत किया जाए ।
- ओपन डिस्टेंस लर्निंग (ओडीएल) कार्यक्रम उच्चतम गुणवत्ता वाले, इनका कलास कार्यक्रमों के बराबर होने का लक्ष्य होना चाहिए ।
- ओडीएल के माध्यम से अभ्यासक्रम उपलब्ध कराए जाए इसके लिए विश्वविद्यालयों को नवीन पाठ्यक्रम में क्रेडिट आधारित पाठ्यक्रम और सामुदायिक जुड़ाव, सेवा, पर्यावरण शिक्षा, मूल्य आधारित शिक्षा के क्षेत्र, समग्र शिक्षा के अंतर्गत उच्चतर शिक्षा संस्थान अपने ही संस्थानों में या अन्य शोध संस्थानों में इंटर्नशिप के अवसर उपलब्ध कराएंगे ।
- स्थानीय उद्योग, व्यवसाय, कलाकार, शिल्पकार आदि के साथ इंटर्नशिप और अध्यापकों और शोधार्थियों के साथ शोध इंटर्नशिप ताकि छात्र सक्रिय रूप से अपने सीखने के

व्यवहारिक पक्ष के साथ जुड़े और साथ ही स्वयं के रोजगार की संभावनाओं को भी बना सके।

- एससी, एसटी, ओबीसी और अन्य सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित समूहों से संबंधित मेधावी छात्रों को प्रोत्साहन के रूप में वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी।
- डिजिटल शिक्षा संसाधनों को विकसित करने के लिये अलग प्रौद्योगिकी इकाई का विकास किया जाए जो डिजिटल बुनियादी ढाँचे, सामग्री और क्षमता निर्माण हेतु समन्वयन का कार्य करेगी।
- शिक्षकों की नियुक्ति में प्रभावी और पारदर्शी प्रक्रिया का पालन तथा समय-समय पर किये गए कार्य-प्रदर्शन आकलन के आधार पर पदोन्नति।
- भारत में पढ़ने वाले अंतरराष्ट्रीय छात्रों की संख्या बढ़ाने के लिए विश्वविद्यालय को कार्य करना होगा।
- विदेश के संस्थानों में शोध करने क्रेडिट स्थानांतरित करने या इसके बाहर शोध की इच्छा रखने वाले छात्रों को और यही सब अंतरराष्ट्रीय छात्रों के लिए हमारे यहां पर व्यवस्था हो।
- छात्र गतिविधियों और भागीदारी के लिए जीवंत कैंपस आवश्यक है।
- इस दिशा में छात्रों को खेल, संस्कृति, कला क्लब, पर्यावरण क्लब, गतिविधि क्लब, सामुदायिक सेवा परियोजना आदि में शामिल करना है।
- ग्रामीण पृष्ठभूमि के छात्रों को अपेक्षित सहायता प्रदान करना, आवश्यकता अनुसार छात्रावास की सुविधाएं बढ़ाना, सभी उच्च शैक्षणिक संस्थाओं में गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सुविधाएं सुनिश्चित करना है।
- उच्चतर शैक्षणिक संस्थाओं में स्वच्छ पेयजल, स्वच्छ शौचालय, ब्लैक बोर्ड, कार्यालय शिक्षण, सामग्री, पुस्तकालय, प्रयोगशाला और सुखद कक्षा वातावरण और परिसर जैसी आवश्यक बुनियादी सुविधाएं आवश्यक हैं।
- विश्वविद्यालयों में कार्यरत संकाय सदस्यों की गुणवत्ता बहुत ही आवश्यक है।
- उत्कृष्ट कार्यों को उपयुक्त पुरस्कार, पदोन्नति कार्यों की सराहना के साथ ही साथ संस्थागत नेतृत्व कर्ताओं में उचित स्थान सुनिश्चित करके बढ़ावा दिया जाए।
- साथ ही साथ उन संकाय सदस्यों की जवाबदेही भी तय की जाए जो कि निर्धारित बुनियादी मापदंडों के अनुसार कार्य नहीं कर पा रहे हैं।
- शिक्षण संस्थानों में संकाय सदस्यों की भर्ती से संबंधित प्रक्रिया है और मानदंड स्पष्ट रूप से पारिभाषित, स्वतंत्र और पारदर्शी होने चाहिए।
- उत्कृष्टता को सुनिश्चित करने के लिए एक कार्यकाल ट्रैक प्रणाली सुनिश्चित करनी चाहिए। उत्कृष्टता और नवाचारों को बढ़ावा देने वाले उत्कृष्ट और उत्साही संस्थागत

नेतृत्व कर्ताओं की हमें जरूरत है। शिक्षकों की एक टीम के निर्माण में अध्यापक शिक्षण की भूमिका महत्वपूर्ण है। विश्वविद्यालय ने इस और क्या कार्य किया बहुत ही आवश्यक है।

- विश्वविद्यालयों एवं सभी शैक्षणिक संस्थाओं द्वारा नवाचार अत्यंत आवश्यक है। नवाचार की कोई भी नई बात अन्य विश्वविद्यालयों के साथ में शेयर करना साझा करना अति आवश्यक है।
- चॉइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम सभी विश्वविद्यालयों में होना आवश्यक है।
- विश्वविद्यालयों ने अन्य शैक्षणिक संस्थाओं और औद्योगिक संस्थान या अन्य किसी संस्थाओं के साथ में एमओयू (मेमोरेंडम आफ अंडरस्टैडिंग) करना अति आवश्यक है।
- छात्रों के प्रवेश तथा एग्जिट में लचीलापन-फ्लैक्सिबिलिटी होना अति आवश्यक है।
- इंटर डिपार्टमेंट साथ ही इंट्रा डिपार्टमेंटल क्रेडिट ट्रांसफर की व्यवस्था होना आवश्यक है।
- इसी तरह से छात्रों को भी रिसर्च में इंट्राडिसिप्लिनरी शोध को बढ़ावा देना चाहिए। मेजर माइनर रिसर्च प्रोजेक्ट संस्था में होना जरूरी है। मल्टीडिसिप्लिनरी अभ्यासक्रम को बढ़ावा देना आवश्यक है।
- छात्रों को स्कॉलरशिप, आर्थिक सहायता करना, सर्व श्रेष्ठ शोध पुरस्कार योजना विश्वविद्यालय को शुरू करनी चाहिए।
- आज जब ऑनलाइन शिक्षा प्रचलन में है तो विश्वविद्यालयों द्वारा व्याख्यान ऑडियो वीडियो लाइब्रेरी में स्टोर करने की व्यवस्था करना जरूरी है।
- सभी विश्वविद्यालयों को आई टी के क्षेत्र में टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में आगे बढ़ना अत्यंत आवश्यक है।



राष्ट्रीय शिक्षा नीति में विदेशी भाषा का समावेशः चीनी भाषा के संदर्भ में स्वामी कुंदन किशोर

राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० में भाषा एक महत्वपूर्ण इकाई है, विशेषकर विदेशी भाषा। इकाई ४.२० में यह उल्लेख मिलता है कि विदेशी भाषाएँ भी माध्यमिक स्तर पर व्यापक रूप से अध्ययन हेतु उपलब्ध करवाई जाएंगी, ताकि विद्यार्थी विश्व संस्कृतियों के बारे में जानें, और अपनी रुचियों और आकांक्षाओं के अनुसार अपने वैश्विक ज्ञान को और दुनिया भर में धूमने-फिरने को सहजता से बढ़ा सकें।

केन्द्रीय मंत्रिमंडल द्वारा अनुमोदित राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० में माध्यमिक स्तर के छात्रों को दी जाने वाली वैकल्पिक विदेशी भाषाओं की सूची में चीनी भाषा का उल्लेख नहीं मिलता। हालांकि नीति के २०१९ मसौदे संस्करण में चीनी भाषा का उल्लेख किया गया था, पर स्वीकृत एनईपी २०२० में भारतीय भाषाओं और अंग्रेजी के साथ केवल कोरियाई, जापानी, थाई, फ्रेंच, जर्मन, स्पेनिश, पुर्तगाली और रुसी का ही हवाला दिया गया है।

किसी भी देश की सभ्यता, संस्कृति और राजनीति को समझने के लिये वहां की भाषा को जानना-सीखना आवश्यक होता है। फिर यदि वह आपका पड़ोसी देश हो और जिससे सीमा विवाद हो, तब तो यह अत्यंत ही महत्वपूर्ण हो जाता है कि हम उस देश की भाषा को अधिक से अधिक जानें, क्योंकि भाषा में ही उस देश की संस्कृति, उस देश की सोंच और उस देश की विदेश नीति समाहित होती है।

यह प्रपत्र इन्हीं बिन्दुओं पर प्रकाश डालेगा कि आखिर हमें अपने पड़ोसी देश की भाषा क्यों सीखनी चाहिए, खास कर चीन की चीनी भाषा जिससे हमारा सीमा विवाद है और जिसका उल्लेख राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० में नहीं मिलता।

कुंजीशब्द - राष्ट्रीय शिक्षा नीति, चीनी भाषा, भारत-चीन संबंध, भारत-चीन सीमा विवाद



फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में लोक संस्कृति

प्रो. सुमित्राबेन के. पटेल

लोककथा जीवन के अनेक पक्षों के बीच संस्कृतिक जीवन का वर्णन करते समय लेखक ने अपने हृदय की सारी ममता उड़ेल दी है। उसका एक कारण है लेखक का लोकजीवन का आन्मीयतापूर्ण ज्ञान। लेखक वहाँ की मिट्टी से प्यार करता है। ग्रामीण जनों के नीरस जीवन को सरस बनाने में लोकगीतों, लोकनृत्यों के रूप में वहाँ के संस्कृतिक जीवन का विशद वर्णन किया है। भिन्न जतियों के परस्पर/ वैमनस्य अंधविश्वास, झुँडियों, गरीबी, झागड़ों ने यदि वहाँ के जीवन का धूल और कीचड़ भरा बना दिया है तो वहाँ के नेसर्गिक भोलेपन, सांस्कृतिक, लोकगीत और लोकनृत्य उसे चन्दन की सुगंधित प्रदान करते हैं।

रेणु के उपन्यासों में लोकगीत प्रचुर मात्रा में प्रयुक्त हुए हैं। ‘मैला आँचल’ में अवतरित लोकगीतों के सम्बन्ध में डॉ. शांतिस्वरूप गुप्त लिखते हैं, “लोकगीत उनका मनोरंजन तो करते ही हैं दैनिक समस्याओं के विषय में सीधे-सादे देहातियों की भावनाओं को व्यक्त करते हैं।”

‘परती-परिकथा’ उपन्यास में अवतरित लोकगीतों के सम्बन्ध में डॉ. कृष्णानन्दन पीयूष लिखते हैं, ‘परती-परिकथा’ का आधार लोकगीत की मर्मभूमि है। फलतः इसमें पूर्णिया जिले में गए जाने वाले गीतों का सुन्दर संकलन हुआ है।”

लोकगीत

लोकगीत प्रत्येक समाज में पाए जाते हैं। विशेष रूप से यह ग्रामीण अंचल समाज के संस्कृतिक तत्व है। परंपरा के रूप में गए जाने वाले गीत जिनके रचयिताओं का कोई उल्लेख नहीं है कभी कभी उनके गायकों के व्यक्तित्व के साथ धुलमिलकर एकमेक हो जाते हैं। रेणु ने इन लोकगीतों को खेत खलिहानों से उड़ाकर अपनें उपन्यासों के अमर पृष्ठों के साथ जोड़ दिया है। लोकगीतों का सम्बन्ध प्रायः किसी घटना या विशिष्ट अवसर से संपृक्त होता है। विभिन्न अवसरों पर विभिन्न प्रकार के गीत गए जाते हैं जैसे शादी, व्याह द्वारा पुजा के समय, फेरे लगते समय, सिंदूर लगाते समय, विदाई आदि के समय लोकगीत गाए जाते हैं। विभिन्न त्योहार का वातावरण गीतमय हो उठता है। ‘मैला आँचल’ उपन्यास में होली का रंग सबसे अधिक गाढ़ा है। होली की मस्ती का वर्णन कराते हुए फगुवा, भडौआ और जोगीड़ा के गीत रेणु के उपन्यास में आए हैं। होली के अवसर पर होली गाने के अलावा जोगीड़ा के गीत रेणु के उपन्यास में आए हैं। होली के अवसर पर होली गाने के अलावा जोगीड़ा गाने का भी गाँवों, घरों और कस्बों में प्रचलन रहा है। जोगीड़ा गायन की बंधी हुई

लय होती है और बँधी हुई लय पर विधान किए जाते हैं। जोगीड़ा के अधिकांश पद हास्य, व्यंग्य और अश्लीलता से सम्बद्ध होते हैं। जैसे –

“असे बहियाँ पकड़ि झकझोर श्याम रे / फूटल रेसम जोड़ी चूड़ी
मसकि गई चोली भिगावल साड़ी / आँचल उड़ि जाए हो
एसी होरी मचाओ श्याम रे ।”

ग्रामीण जन भावो की अभिव्यक्ति सामान्य तौर पर करते हुए हिचकते हैं उन भावो की अभिव्यक्ति लोकगीतों के माध्यम से विभिन्न पर्वों एवं उत्सवों पर बड़े आहाद के साथ करते हैं। होली के भड़ावा जो आम जीवन में आज भी प्रचलित है उसके द्वारा रेणु ने व्यवस्था के प्रति कठाक्ष किया है। जहा ब्राह्मण भंगिन, चमारिन को कुटे पर पानी नहीं भरने देता किन्तु उसके साथ रात रात बिताना बुरा नहीं मानता-

“अरे हो बुडबक चमना चुम्मा लेवे मै जात नहीं जाए रे ।”

होली के गीतों में आए तत्कालीन युगबोध की अभिव्यक्ति निम्न लोकगीत द्वारा अभिव्यक्ति हुई है।

“होली है । कोई बुरा न माने होली है । / बरसो गड़ठे जब जाते हैं भर
बेग हजारों उनमें करते हैं टर्ट / वैसे ही राजा आज कांग्रेस का
लीडर बने हैं सभी कल के गीड़ / जोगी जी / सर-र-र-र- ।
जोगीजी ताल न टूटे / जोगीजी तक धिनाधिन ।
चर्खा कातो, खदड़ पहनो, रहे हाथ में झोली, दिन दहाड़े करो
डकैती, बोल सुराजी बोलो जोगी जी सर-र-र- ।”

गाँव की फुलिया अपने पति खलासी के साथ शहर जाने से साफ मना कर देती है। खलासी जब रुठ कर जाने लगे तो फागुन की मस्ती में डूबी फुलिया गाँव के रामजूदास के आँगन में अपनी मस्तीभरी धमकी देती है –

“नैनामिलनी करी ले रे सैया नयना मिलनी करी ले ।
अब की बेर हम नैहर रहवों जो दिल चाहे सो करी ले ।”

‘मैला आँचल’ में मेरीगंज में वर्षा न होने पर इन्द्र को रिङ्गाने के लिए महिलाएँ जाट जाटन खेल खेलती और गति हें –

“सुनरी हमर जटिनियाँ हो बाबूजी / पातरी बाँस के छोकिनियाँ हो बाबूजी
चाँदनी रात के इजोरिया हो बाबूजी / नन्ही-नन्ही दंतवा पातल ठोखा
छटके जैसन बिजलियाँ ।”

‘मैला आँचल’ उपन्यास में ऐसे कई गीत हैं जो विशेष अवसरों और विशेष क्रिया कलापों से जुड़े हुए हैं जो अपने भीतर से अतिरिक्त अर्थ व्यक्त कर कथानक के विन्यास में योगदान देते हैं। गाड़ीवाले का दल यह गीत गाता हुआ जा रहा है-

“चलती जवानी मोरा अंग-अंग फड़के से /कब होइ है गवना हमारा हो भउजिया ।”

ननदिया के दिल की हूक गाड़ीवान के गले की कूक बनकर निकलती है और यह कूक सीधे कमली के दर्द की कथा बन जाती है । जन्म-मरण आदि के अवसरों पर भी गीत गाये जाते हैं । नीलोत्पल के जन्मोत्सव में सोहर गाया गया है और गाँधीवध के बाद गाए गए समदाउन को सुनकर गाँव वालों के दिल कलप उठे हैं लेखक ने पतों के जीवन के अनुकूल गीतों को प्रयुक्त करके उपन्यास के प्रसंग को अधिक प्रभावशाली बनाया है । डॉक्टर प्रशांत और कमली के प्रेमोन्मत प्रसंग में विद्यापति की पंक्तियों को उद्धृत किया है ।

‘मैला आँचल’ में राजनीतिक गतिविधियों का महत्वपूर्ण स्थान है । इसलिए वहाँ भी प्रसंगानुकूल गीत गाए हैं ।

“उठ मेहनत कश अब होश में आ ।”

रेणुजी लिखते हैं की औरतें रोते समय भी पद जोड़कर गा गाकर रोती है ? पधमय रुदन । अभी उसी दिन एक औरत रो रही थी सुरपति ने नोट कर लिया है “बाबा हो बाबा सेमारी के फूल फुलल देखि घर भड़क भरम गमकु बेठिया बतिडल नदी में भंसउल ।”

रेणुजी ने अपने प्रदेश के प्रसिद्ध प्राचीन कवि विद्यापति के बहुप्रचलित लोकगीतों की प्रशस्ति भी की है और उनका उद्भव स्रोत भी बताया है । डॉक्टर सोचता है विद्यापति की चर्चा होते ही कविवर दिनकर का एक प्रश्न बरबस सामने आकार खड़ा हो जाता है । विद्यापति कवि का गाना कहाँ से । बहुत दिनों बाद मन में उलझे हुए उस प्रश्न का जवाब दिया भर बेगारी खटने वाले अनपढ़ गँवार अर्धनंगों ने कहा । “विद्यापति के गण हमारी झोंपड़ियों में जिंदकी के मधु रस बरसा रहे हैं ।” इस तरह लेखक के प्रमुख पात्र भी लोकगीतों के विशेष प्रेमी हैं । “यह डॉक्टर तो ग्राम्यगीतों को सुनकर केस हिस्ट्री लिखना भी भूल जाता है ।”

अनेक स्थलों पर मैथिली के इन लोकगीतों में भाव सौन्दर्य दिखाई देता है । मध्यराति के बीच संतुष्ट पिया गहरी नींद में सो गया है । सिरहने बैठी प्रिया पंखा झल रही है । तभी कोयल कूक उठती है । प्रिया को भय होता है कि कहीं चैन से सो रहे प्रियतम की नींद न टूट जाय । नींद के साथ सपना न बिखर जाए ।

“सब दिन बोले कोयला भोर बिसरवा वा-वा

बैरिन कोयलिया आजु बोलय आधी रितया हो रामा आं-आं

सतूल प्रिया को जगावे हो राम आं-आं ।”

प्रेयसी चाहती है कि उसे प्यार किया जाए । लेकिन इसके साथ ही वह यह भी अवश्य चाहती है कि उसके प्रति प्रिय का प्रेम स्थायी हो । प्रेम में क्षणिक सुख के प्रति उसका आकर्षण नहीं है । प्राणों में धुले हुए रंगों के मोह में वह स्थायी रूप से अपनें में सजो लेना चाहती है-

“छोटी मोटी पुखरी चरकुलिया पिंड रे / पोरोशनी फुटे लाल लाल

पाचसे तेरी फूल देखी फुलय लाकेलब / पाचसे तेरी आधा दिन लगति ।”

प्रेयसी के प्रिय का रूप स्वर्णवर्णी है । सोने कि मुंदड़ि को देखकर उसे अपने प्रिय कि सृति हो आती है-

“सोनारे रूप रुपे रो रूप / सोनों रो रूप लेका गाते जा मेलाय”

संथाल युवतियों दारा गाए गए ये प्रणय गीत उनके भावों को मुखरित करने में सक्षम है ।

प्रिया का प्रिय परदेश जाने वाला है । अब आषाढ़ चढ़ आया है । यदि गाव की कमला नदी में बाढ़ आ जाए तो प्रिय का जाना रूप सकता है ।

“अरे मास आषाढ़ है । गरजे घन / बिजुरी ई चमके सखि हे ए ए ।

मोहे तजी कंता जाए परदेसा आ-आ । / है रे । है रे ।”

और जिन प्रियाओं के प्रिय इस मौसम में परदेस से लौट आए हैं उनकी कंठों की रागिनी झूलनी के माध्यम से घर-घर में गूंज रही है-

“मास आषाढ़ चढ़त बरसती / घर-घर सर्वी सब झूलनी लगाती

झूली जावे / झूली गावति मंगल बानी

सावन सखि अलि हे मस्त जवानी / देखो देखो ।”

रेणु के अंचलिक उपन्यासों में लोकनृत्य की समृद्ध परम्परा के दर्शन होते हैं । ग्रामों में मनोरंजन दारा हृदय की प्रसन्नता प्रदर्शन करने का माध्यम लोकनृत्य है ।

“मैला औँचल” मे बिहार जिला के मेरीगंज गाँव में होने वाले विविध नृत्यों का बड़ा जीवन्त रूप अंकित हुआ है । वहां जालिमसिंह नाच, विदापत नाच, ठेकर कम्पनी नाच, विदेशिया नाच आदि लोकनृत्य प्रचलित हैं । नाच में मृदंग, करताल, झाल सभी बजते हैं । यह अटपटी पोषाक पहनकर बड़ी विचित्र आकृतिया बताने हैं-

“धिनगि धिन्न तिरगानि तिन्ना / धिनक धिनता तिरकत ग-द-धा ।

आहे चलहु सखि सुख धाम चल हू । / आहे कन्हैया जहा सखि है

रास रचाओल है । चल हु हे चल हू । / धिन्न तिन्न ना त्रिधिन्ना ।

आहे सिर बिर नाबन कुंज गलिन में / कान्हु चरवात धेनु

आहे अब ग्रिहे रहलोनि / जाए चलहु हे चलहु ।”

खम्हार खुलने के अवसर पर विदापत नाच का आयोजन विश्वनाथ प्रसाद ने किया है । यह नाच बिकटै (कॉमिक) होता है । बिकटै कि रचना पात्र निर्मिति होती है । सरस्वती मटा की वंदना करने के बाद नटवा अपनी कुशलता प्रकट करता है । इसी प्रसंग का डॉक्टर प्रशांत ने अंचलिक बोली के माधुर्य को अनुभव किया था । विदापत नाच के अतिरिक्त सावित्री नाच के गीत भी ग्रामीण अंचल में लहरा उठते हैं – आहे सखि फुलवारी देखे हैं ।

अंचलिक जीवन जिंदगी से भरपूर है । खुला आकाश, हरियाली से भरे खेत गाँव के

व्यक्तियों को आनंद से भर देते हैं। यहीं से हृदय के उल्लास और लोकनृत्य, लोकगीतों की गाथा शुरू होती है। निराला ने लोकगीतों को काव्यात्मक शैली में परिभाषित कराते हुए कहा था कि गाँव की मिट्ठी को छूकर जो हवा नदी, ताल, तलैया, घाटी, वन और फूलों से गुजरती है वहीं से लोकगीत फूटते हैं और पैरों में नूपुर बजने लगते हैं।” गाँव ही हमारी कला और संस्कृति के सच्चे दावेदार है।

लोकमानस में प्रचलित कथाएँ लोककथाएँ होती हैं। इसका आधार लोककण्ठ होता है और उसी के सहारे पीढ़ी दर पीढ़ी परम्परा के रूप में स्थापित होता रहता है। यह भारतीय ग्रामीण संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग है। ‘मैला आँचल’ में रेणुजी ने अंचल के संस्कृतिक जीवन को अभिव्यक्त करने के लिए अनेक लोक उपदानों का प्रयोग किया है। फनिशवरनाथ रेणु के ‘मैला आँचल’ उपन्यास में प्रयुक्त हुई लोककथाएँ हमारा ध्यान आकर्षित करती हैं। मेरीगंज गाँव में अनेक लोककथाएँ प्रचलित हैं।

“मैला आँचल” और ‘परती-परिकथा’ से गंध निकले ना निकले किन्तु लोककथाएँ अवश्य निकल रही हैं।”

सारंग सदाब्रिज और बिजेभान की कथाएँ यहाँ विशेष महत्ता रखती हैं। ये कथाएँ शताब्दियों से स्थानीय जीवन की मोजमस्ती को मुखरित करती आ रही हैं। इन कथाओं को गा गाकर प्रस्तुत किया जाता है इसके साथ उपन्यास में और भी कई कथाओं का प्रयोग किया गया है जिनसे वहाँ के जीवन की मान्यताओं और विश्वासों पर प्रकाश पड़ता है। जैसे मेरीगंज की कथा, मार्टिन मेरी की कथा, लेरिका की कथा, कमला मैया की कथा आदि।

बूढ़ी भैरो की माँ बड़ी चाव से मेरी की सुंदरता की कथा कहती है। सारंग सदाब्रिज की कथा खलासी जी अपने गले से पूरे लोच के साथ सुनते हैं।

“नहीं तोरा आहं प्यारी तेग तरबारिया से / कौनहि चीजवा से मारलू बटोहिया के धरती लोटा बेला बे पीर जी ई-ई-ई !”

इसी प्रकार बन्ध्या धरती की कथा, चिरर्झ चुनमून की कथा, पंडुकी की कथा, कोसका महारानी की कथा, गुणमती जोगमनी की कथा, दुलारीदाय की कथा इन कथाओं का ‘परती-परिकथा’ उपन्यास में विस्तृत विवरण है।

सुन्नरि नैका और दंता राक्स की कथा जिसे रघु रामायनी ने प्रभावोत्पादक रूप में सुनाई है। इसको सुनाते सुनाते रघु रामायनी की आँखों में आँसू झारने लगते हैं।

भोर में नाचती आई सुन्नरि नैका। देखा एक कुण्ड पानी से लबालब भरा है। कुण्ड के पानी में पुरनिमा का चांद सोने चाँदी को एक साथ घोलने के लिए रुक गया थोड़ी देर उस ताक की फुनगी के पास। नाची सुंदरी नैका छम्म छम्म आं। रात भर के थके राक्सों को मानो महूए के रस में मधु घोलकर पिला दिया गया।

“झूम उठे छम्मा छम्मा / करिके सोलहो सिंगार

गले मोतियन के हार / केथिया धती लोटाय
 चुन्नी पन्ना बिखराव छमा छमा नाचे सुंदरी नैका ।”
 सुन्नरी नैका का प्रसंग है जिसमें सहस्र राक्षसों के आगमन से पृथ्वी और आकाश की स्थिति का धन्यात्मक विम्ब प्रस्तुत होता है ।
 “धरती डोल गई भाइयों घर घर पर पर पार / धडिंग धडिंग गिंडपन गाग
 कहाँ कुकका / जी – धड़-धड़ धड़के धरती माय
 धड़क धड़ा धड़ हाय रे बाप / थर थर काँपे चान ।”

सारंगा सदाब्रिज कथा के प्रसंग में सदाब्रिज पर आसक्त स्त्री का कथन है । वह कहती है –

“सासु मोरा भरेहो मरे मोरा बहिनी से मरे ननद जेठ मोर जी ।
 मरे हमार सब कुछ पलि विश्वासे फसी गईली परेम की ढोर जी ।
 इतना कहकर वह सदा ब्रिज के पास आई और प्रेम की बातें करने लगी ।
 आज की रतिया हो प्यारे यही बिताओं जी ।”

गाँव के लोग बड़े शौक से सुरंगा सदाब्रिज की कथा का रसपान कराते हैं । इस प्रकार ‘मैला आँचल’ और ‘परती-परिकथा’ उपन्यासों में लोककथाओं की अभिव्यक्ति हुई है । यह लोक जीवन की संस्कृति का प्रमुख अंग है ।

संदर्भ

1. डॉ. शान्तिस्वरूप गुप्ता, हिन्दी उपन्यास महाकाव्य के स्वर
2. डॉ. कृष्णानन्द पियूष, चिन्तन अनुचिन्तन
3. कणीश्वरनाथ रेणु, मैला आँचल
4. कणीश्वरनाथ रेणु, परती-परिकथा



New Education Policy 2020

Approaches, Opportunities and Challenges for the Teachers

Gargi Gohel

Abstract : The National education policy 2020 envisions an Indian-centered education system that contributes directly to transforming our nation sustainably into an equitable and vibrant knowledge society, by providing high quality education to all. The present conceptual study reflects the objectives of National Education Policy 2020, features and role of teachers with prime aims (i) To understand the basic element of NEP 2020. (ii) To discuss the Features of NEP 2020. (iii) To discuss the role of teachers as per NEP 2020. (iv) To discuss the basic observations related to NEP 2020.

The present paper focuses on New Education Policy 2020- Approaches, Opportunities and Challenges for the Teachers and role of teachers for nation building , as a Teacher is to shape the minds of the younger generation. The students- teacher interaction is very significant in the new education era.

Keywords: Features of NEP, Role of Teacher

The National Education Policy gives equal right to education. It incorporates school education as an elementary part and makes it compulsory for every child. There have been provisions of multiple entry and exits for secondary students and extends to Undergraduate, Post Graduate and research levels. It allows the flexibility for a student to complete his education at any point of time the student thinks so and has mainly been framed for students who had to discontinue their studies midway due to work or family pressure. The policy aims to provide a strong base of liberal arts along with Vocational Training at Undergraduate levels. A candidate who is in the fourth year of the Undergraduate course can seamlessly integrate itself at Masters and Doctoral levels which in the long run will help in bringing professional education into mainstream undergraduate education.

Vocational Education will also be an integral part of the Education Policy. The main objective of this is to develop streamlined critical thinking, higher order thinking, having more grip on the subjects and domain, to develop problem solving skills along with team work and communication skills.

Approaches:

The Higher Education sector has been combined with liberal arts with Mathematics, Sciences, Technology and Engineering. The main objective of this is to develop streamlined critical thinking, higher-order thinking, having more grip on the subjects and domain, to develop problem-solving skills along with teamwork and communication skills. The postgraduate and the doctorate levels have been given the options of one year, two-year and five-year degree. The post-graduation will have more research level concepts and will have for professional competence. The National Research Foundation has been constructed whose main objective would be to focus of the Education System mainly at College and University levels. It will also take care of research capacity expansion and monitoring the same with a more formal mechanism.

Opportunities:

The most important component of this Education Policy is Digital literacy and Computational thinking. The emphasis would be given to make students digitally literate and also will be trained in programming and coding to enhance their IT skills. NEP has been entrusted to integrate ICT in education so that the process becomes fast , focused and transparent. ICT will enable the students to have a better education through proper monitoring. NEP has also plans to integrate online education into the education process so that the students can maximize their educational experience. The policy talks about the inclusion of disruptive technologies into the system. It will include Artificial Intelligence, Cognitive tools to ensure that online education is guided by student learning and student growth at an individual level. It plans for huge IT infrastructure and technology platforms. It plans to have more and more online courses and expects to have tie-ups with top-level Universities and Institutes to have more Massive Open Online Courses (MOOC's).

Challenges:

However, the challenge is its implementation. Different states have different education systems and hence accepting one uniform education policy would be a bit challenging. However, we need to understand that through proper participation we can overcome this challenge and make it successful across the country.

The National Education Policy also seeks to address the challenges of: (i) access, (ii) equity, (iii) quality, (iv) affordability and (v) accountability faced by the current education system. This National Education Policy 2020 aims to provide reforms at all levels of education from school to higher education.

Role of a Teacher and Challenges:

- By 2022 a set of National Professional Standards for Teachers (NPST) will be created that will determine all aspects of teacher career management, including tenure, continuous professional development efforts, salary increases, promotions, and other recognitions.
- NEP 2020 also talks of Teacher Audit or Performance Appraisals that will be carried at regular intervals. These standards for performance appraisal, will also be formulated. Henceforth, promotions and salary increases will not occur based on the length of tenure or seniority, but only based on such appraisal.

Enculturation of Teacher Empowerment

Teacher empowerment means investing teachers with the right to participate in determining goals and policies and to exercise professional judgement about what and how to teach. (Bolin, 1989) When teachers are engaged in the reform process, they need freedom and control over their own work. This makes them feel empowered, motivates them to work harder and enhances their commitment to their learners.

- Recognising the contribution teachers can make in reforming pedagogy to improve the learning outcomes, the NEP 2020 gives Teachers autonomy in selecting appropriate pedagogy and encourages them to also ensure socio-emotional learning of their students, which is a critical aspect of holistic development.
- Innovative teaching methods adopted by teachers to improve the

learning outcomes will be recognised, documented, and shared widely as recommended practices.

- Close collaboration is recommended as it will reduce teacher isolation experienced by teachers working and create vibrant teacher communities that work collaboratively sharing their best teaching practices.
- To help HEI complexes evolve into vibrant, caring, and inclusive communities of teachers, students, parents, principals, the managements have been directed to ensure adequate and safe infrastructure, basic amenities and hygiene, computing devices, internet, libraries, and sports and recreational resources to all teachers and students.

In Conclusion

Benjamin Disraeli had said, ‘The secret of success is to be ready when your opportunity comes!’ For Indian teachers’ time has come to seize the opportunity and become makers of their own destiny. To do this- Dream and work hard to achieve your dreams. Become an aware, enthusiastic, and empowered practitioner. Share your ideas, grow by experimenting and researching. Gain insights also from the thoughts, beliefs, and experiences of your peer-practitioners.

The NEP has certainly created a need for perspective planning at the central as well as the State level to be able to achieve the policy goals. Themes such as scale, autonomy, accreditation reiterate the requirement of efficient usage of academic as well as non-academic resources, i.e. faculty, infrastructural capacity (such as school complex), digital mode of delivery, greater funding etc. to be tuned for purpose. The vision is to institutionalise national-level accreditation and standard-setting bodies, which will drive quality and will focus on enhancing learning outcomes in their core and, at the same time, instil the optimal amount of flexibility and autonomy in the overall administrative framework. The NEP 2020 is expected to put India on the track to attain goal four of the 2030 agenda for sustainable development by ensuring inclusive and equitable quality education and promoting lifelong learning opportunities for all in the next decade.

References:

- Best J.W. (2006), Research in Education. (9th Edition) New Delhi: Prentice Hall of India Pvt. Ltd. Draft National Education Policy 2020
- MHRD- Government of India (2020)- Ministry of Human resource development- New Education Policy 2020 booklet
- NCERT (2005), National curriculum framework 2005
- Putnam, J. W. (1998). The process of cooperative learning. In J. W. Putnam (Ed.), Cooperative learning and strategies for inclusion: Celebrating diversity in the classroom (pp. 17-47) Baltimore:
- Paul H. Brookes. Richards, J.C., Rodgers S.T. (2001). Approaches & Methods in Language Teaching, Cambridge: Cambridge University Press
- Radha Mohan (2011). Research Methods in Education. New Delhi: Neel Kamal Publications Pvt. Ltd, Educational Resurgence Journal Volume 2, Issue 3, Jan. 2020 ISSN 2581-9100 42
- S. K. Mangal (2012). Statistics in Psychology and Education, 2nd edition, New Delhi: PHI Learning Private Limited.
- S.J. Sakhare (2011, January 13). Effect of Constructivist Approach in Teaching Paper Presented in, National Conference. Mumbai.
- S.R. Pandya (2013), Educational Research, New Delhi: APH Publishing Corporation.
- C. A. Tomlinson, (2001). How to differentiate instruction in mixed ability classrooms (2nd ed.), Alexandria, VA: Association for Supervision and Curriculum Development



National Education Policy 2022

Dr. Bipin M. Vaghela

Assistant Prof., Umiya Arts & Commerce College, Sola

The national education policy was approved on 29 July 2020 by the union cabinet of India. It replaced the existing education policy of India. Which was made in 1986. This policy brings a big positive change in the education of India. It is a framework for elementary education till higher education which includes vocational training in both urban and rural areas. The main aim of launching the National Education policy 2022 is to remodel. India's education policy under this new national education policy, nobody is forced to take any particular language. Now the student can choose the language according to their interest.

What is NEP?

The old policy is replaced by the national education policy to bring education to a nationalized level under NEP the different benefits will be provided to the students. These changes will help children to grow in various fields this is quite a great initiative which has been taken by the ministry of education so as to improve the quality of education for all the student of India along with the education more focus will be given to the student's mental health and social work.

Implementation of NEP in Higher Education Institutions:

As well all know that the National Education policy has done a lot of work in reshaping and revamping all the aspects of the undergraduate education system which really need the vision to improve Now NEP is all set to change the background of higher education institution in the current academic year. The discussion for implementing the national education policy in the higher education institution was going on various platforms. After year of remission and comments from the stakeholders now it has been decided to bring an ambitious Expectation from higher education institutions.

Objective of National Education Policy

As well all know before the launching of the national education policy. The education of India works only at the nationalized level. And due to this the students of India are not able to utilize their talent at the global level. By keeping this in mind the Government of India has changed the old education policy with National Education Policy. The main objective of this policy is to bring education provided in India to the global level. The main target of this scheme is to universalize.

Education through national education policy several amendments have been made to the old education policy through the government.

- The main objective of launching a National Education Policy is to bring a positive change in the education society of India.
- NEP scheme will help in Improving the children to get a good education

New Timeline of National Education Policy

As we all know that the pandemic of Covid-19 has affected the lives of students in several ways. Recently the chairman of UGC said after the normalized condition of this pandemic the implementation of NEP will be done at a faster pace. Also the chairman said that now the Minimum qualification for teaching the student in various schools will be 4 years integrated B.Ed. Also, the reservation norms will be revised by the education Minister Ramesh Pokhriyal Nishank soon. Soon the better education system for the student will be finalized and given to the students to build a better future.

Languages:

After releasing the national education policy, the Government of India has declared that preference will be given to the mother tongue and regional languages. These languages will be used until class 5. The preference will also be given to Sanskrit and foreign languages and implementation of these languages.

School Education

As mentioned above the previous pattern of 10 + 2 which was followed by the Indian education system is now replaced with the 5 + 3 + 3 + 4 model. The detail of 5 + 3 + 3 + 4 is as apply.

Higher Education

Under the national education policy A-4 year multidisciplinary Bachelor's degree will be provided to the student with a certificate each year the degree of M.Phil. will be discontinued the National Higher education regulatory Council will regulate higher education that includes teachers and excludes medical and legal education. The national testing agency will be assigned the responsibility of conducting entrance exam the changes under IIT will be made with regard to the diversity of learning: The students will be provided with internationalized education in India.

Other Major Changes:

- The prime minister of India will head the national education Commission
- Academic Bank of Credit will be made to provide help in education by Utilizing credit
- The National Research Foundation will improve research and innovation
- The preference will be given to the representative group in disadvantaged reason by creating a special education zone
- A new platform will be created to facilitate the exchange of ideas to improve learning on a platform of National education Technology

Outcomes of NEP 2020

- Universalisation from ECCE to secondary Education by 2030 aligning with SDG4
- Attaining Foundational Learning & Numeracy skill through National Mission by 2025
- 100% GER in pre- School to secondary Level by 2030
- Teachers to be prepared for assessment reforms by 2023
- Inclusive & equitable Education system by 2030
- Board Exams to test core concepts and application of knowledge
- Every child will come out of school adept in at least one skill
- Common standards of Learning in public & private schools



ઉચ્ચ શિક્ષણના સંદર્ભમાં ભારતની નવી રાષ્ટ્રીય શિક્ષા નીતિ

પ્રો. માનસીબેન જે. પટેલ

આસ્ટ્રેલિયા આટ્રેસ & કોમર્સ કોલેજ ફોર ગર્લ્સ, સોલા

સારાંશ

માનવવ્યક્તિત્વના નિર્માણ અને ઘડતર માટે શિક્ષણ અવિભાજ્ય તેમજ ખૂબ જ મહત્વનું છે. યોગ્ય શિક્ષણ દેશના દરેક નાગરિકને મળી રહે તે જોવાની ફરજ દરેક દેશની સરકારોની છે, જેના માટે સરકારના શિક્ષણ વિભાગ દ્વારા શૈક્ષણિક ક્ષેત્રે વખતોવખત સુધારાઓ કરે છે. ભારતીય શિક્ષણને વૈશ્વિક સ્તરનું બનાવવા માટે તેમજ શિક્ષણ પ્રાણાલીમાં સુધારો કરવાના હેતુસર ભારત સરકારે રાષ્ટ્રીય શિક્ષણનીતિ-2020 પ્રસ્તુત કરી છે. આ શિક્ષણનીતિમાં ઉચ્ચ શિક્ષણને લગતા ઘણા બધા સુધારા કરવામાં આવ્યા છે, જેની રજૂઆત કરવાનો પ્રયત્ન પ્રસ્તુત પેપરમાં કરવામાં આવ્યો છે. જેમાં ભારતીય શિક્ષણનીતિમાં મર્યાદાઓ તેમજ તેને દૂર કરવા નવી શિક્ષણનીતિમાં કરવામાં આવેલા સુધારાઓ તેમજ ઉચ્ચશિક્ષણ સંસ્થાનો માટેની વિવિધ તક્ષેની છણાવાટ કરવાનો પ્રયત્ન કરવામાં આવ્યો છે.

પ્રસ્તાવના

શિક્ષણ માનવીના વિચારો અને જીવનઘડતરમાં ખૂબ જ મહત્વપૂર્ણ ફાળો આપે છે. વ્યક્તિના શિક્ષણ પરથી તેમનું વ્યક્તિત્વ અને ચરિત્ર ઘડાય છે. જે તેમને તેમના ભવિષ્યનિર્માણમાં મદદરૂપ બને છે. ભારતીય શિક્ષણની વાત કરવામાં આવે તો ભારતની સતત કથળતી જતી શિક્ષણવ્યવસ્થા ખૂબ જ ચિંતાનો વિષય છેલ્લા કેટલાય સમયથી રહ્યો છે. દેશની આર્થિક નીતિઓથી માંડીને ઔદ્યોગિક, કૃષિ, વેપાર વગેરે નીતિઓને સમયે સમયે જરૂરિયાત મુજબ સુધારવામાં આવી છે, પણ શિક્ષણનીતિ તરફ છેલ્લા ત્રણ દાયકાઓથી કોઈ જ વિશેષ ધ્યાન આપવામાં આવ્યું નથી. આવામાં તાજેતરમાં ભારતીય વર્તમાન શિક્ષણપ્રાણીમાં સુધારો કરવાની તત્ત્વી જરૂરિયાત ઊભી થઈ અને તેના ફળસ્વરૂપે સરકાર દ્વારા રજૂ કરવામાં આવેલી નવી રાષ્ટ્રીય શિક્ષણનીતિ-2020 શિક્ષણક્ષેત્રે સુધારા માટે આશાસ્પદ પુરવાર થશે તેમ કહી શકાય.

માનવીય અને સામાજિક સુખાકારીને પ્રોત્સાહન આપવા તથા ભારતના બંધારણમાં કરેલી કલ્યાણાનું ભારત કે જે લોકશાહી, ચ્યાથી, સામાજિક રીતે સભાન, સંસ્કારી અને માનવ રાષ્ટ્ર હોય કે જ્યાં સ્વતંત્ર, સમાનતા, બંધુત્વ અને સૌને માટે સમાન ન્યાય હોય તેવા ભારતના વિકસસમાં ઉચ્ચ શિક્ષણ અત્યંત મહત્વની ભૂમિકા નિભાવે છે. ઉચ્ચ શિક્ષણ રાષ્ટ્રની સાતત્યપૂર્ણ આજીવિકા અને આર્થિક ક્ષેત્રેના વિકસસમાં નોંધપાત્ર ફાળો આપે છે. જેમ જેમ ભારત જ્ઞાન આધ્યારિત અર્થવ્યવસ્થા અને સમાજ બનવા તરફ આગળ વધે છે, તેમ તેમ વધુ ને વધુ ભારતીય યુવાનો ઉચ્ચ શિક્ષણની આશા રાખે છે. જેને પૂર્ણ કરવાનો ઉદ્દેશ નવી રાષ્ટ્રીય શિક્ષણનીતિનો છે.

સાહિત્યની પૃષ્ઠભૂમિ અને સમીક્ષા

કોકારી કમિશન (1964-1966)ના અહેવાલ અને ભલામણોના આધારે, વડાપ્રધાન ઠન્ડિરા ગાંધીની સરકાર રચાઈ ત્યાર બાદ 1968માં શિક્ષણ પર પ્રથમ રાષ્ટ્રીય નીતિ, જેમાં આમૂલ સુધારા અને સમાન શૈક્ષણિક માટે હિમાયત કરી, રાષ્ટ્રીય એકીકરણ અને વધુ સારી રીતે પ્રોત્સાહન આપવાની તકો સાંસ્કૃતિક અને આર્થિક વૃદ્ધિ, 1968ના એન.પી.ઇ. માટે શિક્ષણખર્યમાં વધારો કરવા માટે પ્રોત્સાહન આપવામાં આવ્યું હતું. રાજીવ ગાંધીની સરકારે શિક્ષણ પર બીજી રાષ્ટ્રીય નીતિ શરૂ કરી 1986માં, જે પાછળથી કેટલાક ફેરફારો સાથે સુધારેલ છે. તેમાં વડાપ્રધાન પી.વી. નરસિંહા રાવ દ્વારા 1992માં આવેલી સરકારે 1986 રાષ્ટ્રીય શિક્ષણનીતિમાં માહિતી ટેક્નોલોજીના ઉપયોગ પર ભાર મૂક્યો હતો.

શિક્ષણપ્રણાલીને આધુનિક બનાવવા માટે વધુ ભાર શિક્ષક શિક્ષણને પુનઃરચના કરવા પર મૂકવામાં આવ્યું છે. બાળપણની સંભાળ, મહિલા સશક્તિકરણ, વિસ્તરણ શિષ્યવૃત્તિ, પછાત અને ગ્રામીણ સમુદાયો માટે જોગવાઈ અને પુખ્ત સાક્ષરતા અંગે પણ ભલામણ કરી હતી. જે યુનિવર્સિટીઓ અને કોલેજોને વધુ સ્વાપ્તતા આપે છે. શિક્ષણની ગુણવત્તામાં વધારો કરશે. જોકે, NEP 1986 શૈક્ષણિક ગુણવત્તા વધારવામાં નિઝલ ગયું છે. રોજગારયોગ્ય કોશલ્યો સાથે સ્નાતકો અને ઉત્પાદન કરવા માટે પણ પેટન્ટના સ્વરૂપમાં પ્રમાણભૂત સંશોધન આઉટપુટ અને વિક્રતાપૂર્ણ લેખો અંગે 2019માં, HRD મંત્રાલયે જારી કરેલ નવી શિક્ષણનીતિનો ડ્રાફ્ટ અનુસરવામાં આવ્યો હતો. અનેક જાહેર પ્રતિસાદ અને ચર્ચાઓની શ્રેષ્ઠી દ્વારા અને આખરે વડાપ્રધાન નરેન્દ્ર મોહિં દ્વારા મંજૂરી આપવામાં આવી. 29 જુલાઈ, 2020ના રોજ ડેઝિનેટે બીજી શિક્ષણનીતિ અથવા NEP-2020ની જોગવાઈ કરી. જેમાં અભ્યાસક્રમના પુનરાવર્તન માટે અને વધુ સર્વત્રાહી અનુભવ માટે, ચર્ચા-આધ્યારિત અને વિશ્વેષણ-આધ્યારિત શિક્ષણ તેમજ અન્ય ઘડી વસ્તુઓ સાથે શિક્ષણશાસ્ત્રના માળખામાં ફેરફારનો ઉલ્લેખ કરે છે.

આજાદી બાદથી બંધારણે જણાવ્યું છે 14 વર્ષની ઉંમર સુધી શિક્ષણ મહિત અને ફરજિયાત હોવું જોઈએ. અગાઉની બે રાષ્ટ્રીય શિક્ષણનીતિઓ અને તાજેતરના શિક્ષણ અધિકાર અધિનિયમે (RTE-2010) પણ આ જેવી જોગવાઈએ કરી હતી. જોકે, એક દેશ તરીકે આપણી પાસે હજુ સુધી તેનાં લક્ષ્યો હંસલ કરવા માટે ઉચ્ચ શિક્ષણમાં પ્રવેશનો અભાવ, ખાસ કરીને સામાજિક-આર્થિક રીતે વંચિતોમાં વિસ્તારો, ગુણવત્તાયુક્ત શિક્ષકોનો અભાવ, ઈન્ફ્રાસ્ટ્રક્ચર અને ઉચ્ચ શિક્ષણમાં નવીનતા લાવવા માટે સંસ્થાકીય સ્વાયત્તતા, વિદ્યાર્થીઓને આકર્ષવા માટે, અપૂર્તી પદ્ધતિઓ, કારકિર્દી માટે પ્રમાણભૂત સંશોધન અને નવીનતાનો અભાવ, મૌય ભાગની યુનિવર્સિટીઓ અને કોલેજો અને નૈતિક શાસન અને ઉચ્ચ શિક્ષણ સંસ્થાઓમાં નેતૃત્વ અને વિશાળ ફેફલ્ટી ભરતીમાં દાન અને પાછલા દરવાજાની એન્ટ્રીઓના વિભાજન આ માટેનાં કેટલાંક કારણો છે.

ભારતમાં ઉચ્ચ શિક્ષણ (HE) સિસ્ટમને બદલવા માટે, નવી નીતિની જરૂર હતી. એવા સમયે તાજેતરમાં કરાયેલી રાષ્ટ્રીય શિક્ષણની જાહેરાત આવી જરૂરિયાતોને સંબોધતી જણાય છે. લાંબા ગાળાની આ નીતિનો ધ્યેય “સારા, વિચારશીલ, સારી ગુણવત્તાયુક્ત અને સર્જનાત્મક વ્યક્તિઓનો વિકસ કરવાનો છે. એક અથવા વધુ વિશિષ્ટ ક્ષેત્રોનો અભ્યાસ કરવા માટે વ્યક્તિ ઊંડા સ્તરે રસ ધરાવે, પાત્રનો વિકસ કરે, નૈતિક અને બંધારણીય મૂલ્યો, બૌદ્ધિક જિજ્ઞાસા, વૈજ્ઞાનિક સ્વભાવ, સર્જનાત્મકતા, સેવાની ભાવના અને વિવિધ શાખાઓમાં સદીની ક્ષમતાઓ વિશ્વાન, સામાજિક વિજ્ઞાન, કળા, માનવતા સહિત ભાષાઓ તેમજ વ્યાવસાયિક, તકનીકી અને વ્યાવસાયિક વિષયો માટે તે સક્ષમ હોવું જોઈએ. (રાષ્ટ્રીય શિક્ષણ નીતિ-2020) તે ચોક્કસાપણે આપણા દેશને એ દિશામાં ગતિશીલ બનાવે છે. જ્યાં દરેકને જ્ઞાન, સમજ અને ઉચ્ચ ગુણવત્તાનું શિક્ષણ મળે છે.

આ સંદર્ભે અગાઉનાં સંશોધનો પણ આવકારદાયક જણાય છે. સરકારનું આ પગલું આઈથલ અને આઈથલએ અવલોકન્યું છે, જે મુજબ “દેશના દરેક નાગરિકનો સમાવેશ કરવા માટે GERમાં સુધારો કરવો એ ઉચ્ચ શિક્ષણ તકોમાંની જવાબદારી છે.” (સરકારનો શિક્ષણ વિભાગ) ભારતની રાષ્ટ્રીય શિક્ષણનીતિ-2020 આગળ વધી રહી છે, જેમાં શિક્ષણનીતિને નવીન બનાવીને આવા ઉદ્દેશને હંસલ કરવા તરફ ધ્યાન કેન્દ્રિત કરવામાં આવ્યું છે. પવન કલ્યાણી શોધે છે, “આમાં ઘણી નવી વસ્તુઓ પ્રસ્તાવિત છે. યોગ્ય સમયે યોગ્ય ક્રોશાલ્ય મેળવવા માટે NEP-2020 યોગ્ય પુરવાર થશે, જેમ કે, જો વિદ્યાર્થીઓ યોગ્ય અભ્યાસક્રમ અથવા વિષય સંયોજન પસંદ કરે છે તો નિયમિત અભ્યાસ સાથે વ્યાવસાયિક અભ્યાસક્રમો વિદ્યાર્થી પ્રતિભા અને ઉદ્યોગો વચ્ચેનું અંતર નજીકના ભવિષ્યમાં પૂરું કરવામાં આવશે.”

કુમાર અને નાગરાણીએ શોધી કાઢ્યું, “એકંદરે નવી શિક્ષણનીતિ આ દેશમાં શૈક્ષણિક લેન્ડર્સેપ બદલવા માટે એક મહાન વિઝન છે.”

ઉપરોક્ત સંશોધનો શોધે છે કે NEP-2020 એક સીમાચિહ્નનું સુધારો છે ઉચ્ચ શિક્ષણના ઇતિહાસમાં આ નીતિ અને તેની સફળતા માટે તેનું અસરકારક અને સમયસર અમલીકરણ થવું જરૂરી છે.

ભારતમાં ઉચ્ચ શિક્ષણપ્રણાલીમાં રહેલી કેટલીક મુખ્ય સમસ્યાઓ
ભારતમાં ઉચ્ચ શિક્ષણક્ષેત્રે રહેલી સમસ્યાઓને નીચે મુજબ વર્ણવી શકાય:

- (ક) ગંભીર રૂપથી ખંડિત ઉચ્ચ શિક્ષણનું પરિતંત્ર
- (ખ) શાનાત્મક ડૌશાલ્યો અને અધ્યયન નીપણો પર ઓછો ભાર
- (ગ) વિદ્યાશાખાઓનું ચુસ્ત વિભાજન, વિદ્યાર્થીઓને ખૂબ વહેલા વિશેષ વિષયના અભ્યાસનાં સંકુચિત ક્ષેત્રોમાં ધકેલી દેવા
- (ઘ) મર્યાદિત વ્યાપ, ખાસ કરીને સામાજિક અને આર્થિક રીતે વંચિત ક્ષેત્રો કે જ્યાં કેટલીક જ ઉચ્ચ શિક્ષણસંસ્થાઓ સ્થાનિક ભાષામાં શીખવે છે.
- (ય) શિક્ષક અને સંસ્થાની મર્યાદિત સ્વાયત્તતા
- (ઇ) વિદ્યાશાખા અને સંસ્થાના આગેવાનો માટે યોગ્યતા આધારિત કારકિર્દિના વ્યવસ્થાપન અને પ્રગતિ માટે અપૂરતી વ્યવસ્થા
- (ઈ) મોટા ભાગનાં વિશ્વવિદ્યાલ્યો અને મહાવિદ્યાલ્યોમાં સંશોધન પર ઓછો ભાર તથા વિદ્યાશાખાઓમાં પ્રતિસ્પદ્ધી-સહભાગી (peer) સમીક્ષા પામેલ સંશોધન ભંડોળનો અભાવ
- (ઝ) ઉચ્ચ શિક્ષણસંસ્થાઓમાં પ્રણાસન અને નેતૃત્વની ક્ષમતાઓનો અભાવ
- (ટ) બિનઅસરકારક નિયમનકારી પ્રણાલી; અને
- (ઠ) વિશાળ સંલગ્નતાવાળાં વિશ્વવિદ્યાલ્યો જે સ્નાતક કક્ષાએ નિભન ગુણવત્તા યુક્ત શિક્ષણમાં પરિણામતાં હોવાં જેવી વિવિધ સમસ્યાઓ જોવા મળે છે.

NEP 2020ની મુખ્ય વિશેષતાઓ

- શિક્ષકો તેમજ વાલીઓએ દરેક વિદ્યાર્થીનાં શૈક્ષણિક અને બિન-શૈક્ષણિક ક્ષેત્રોમાં સર્વીંગી વિકાસને વેગ આપવા દરેક વિદ્યાર્થીની અનન્ય ક્ષમતાઓને ઓળખવી અને પ્રોત્સાહન આપવું.
- વિદ્યાર્થીઓ તેમની શીખવાની પદ્ધતિ અને કાર્યક્રમો પસંદ કરી શકે, તે માટે સુગમતા આપવી, જેથી તેમની પ્રતિભા અને રૂચિઓ અનુસાર જીવનમાં તેમના પોતાના માર્ગો પસંદ કરી શકે.

- व्यावसायिक अने शैक्षणिक प्रवाहो वर्गेरे वर्चोनी प्रवृत्तिओ अने शिक्षणां विविध क्षेत्रो वर्चोनी हानिकारकता दूर करवा माटे. कला अने विज्ञान वर्चे, अभ्यासकम अने अत्यासेतर वर्चे कोई संभत विभाजन राखवामां आवशे नहीं.
- विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, रस्तो वर्गेरे क्षेत्रोमां एकता अने अभंडितताने सुनिश्चित करवा माटे मानवतावाही अने बहुशाखाधीय शिक्षण आपवुं.
- परीक्षा माटे भाषावा अने शीखवाने बदले वैचारिक समज्ञा पर भार.
- तार्किक निर्णय लेवा अने नवीनताने प्रोत्साहित करवा माटे सर्जनात्मकता अने जटिल विचारसंराशी पर भार मूँकवो.
- नैतिकता, मानवीय अने बंधारणीय मूल्यो जेम के सहानुभूति, अन्य लोको माटे आदर, स्वरूपता, सौजन्य, लोकशाही भावना, सेवानी भावना, जाहेर मिलकत माटे आदर, वैज्ञानिक स्वभाव, स्वतंत्रता, जवाबदारी, बहुमतीवाद, समानता अने न्याय वर्गेरेने प्रोत्साहित करवा.
- शिक्षण अने शिक्षणामां बहुभाषीवाद अने भाषानी शक्तिने प्रोत्साहन आपवुं.
- छवन ड्रैशल्यो जेम के संचार, सहकार, ठीम वर्क अने स्थितिस्थापकताने प्रोत्साहित करवां.
- शीखवावा अने अध्ययनमां टेक्नोलोज्नो व्यापक उपयोग, भाषाना अवरोधो दूर करवा, दिव्यांग विद्यार्थीओ अने शैक्षणिक आयोजन अने व्यवस्थापन माटे प्रवेशनी सरणता वधारती संगवडो ऊझी करवी.
- विविधता माटे आदर अने तमाम अभ्यासकम, शिक्षण शास्त्र अने नीतिमां स्थानिक संदर्भ माटे आदर आपवो. हंमेशा ध्यानमां राखवुं के शिक्षण ऐ समवर्ती विषय छे.
- विद्यार्थीओ शिक्षणप्रश्नालीमां विकास पामवा सक्षम छे तेनी खातरी करवा माटे तमाम शैक्षणिक निर्णयोना पायाना पथ्थर तरीके संपूर्ण समानता जगववी.
- प्रारंभिक बागपञ्चनी संभाग अने शिक्षणाथी, शायाशिक्षणाथी उच्च शिक्षण सुधी शिक्षणाना तमाम स्तरोमां अभ्यासकममां सुमेज साधवो.
- शैक्षणिक निष्पातो द्वारा सतत संशोधन अने नियमित मूल्यांकनना आधारे प्रगतिनी सतत समीक्षा करवी.
- शिक्षण ऐ जाहेर सेवा छे, माटे दरेक बागकने गुणवत्तायुक्त शिक्षणानी पहेंचनो मूलभूत अधिकार मणवो जोईअे.
- खानगी अने जाहेर समुदायनी भागीदारीने मजबूत, गतिशील जाहेर शिक्षणप्रश्नालीमां नोंधपात्र रोकाणा माटे प्रोत्साहन अने सुविधा पूरी पाडवी.

ઉચ્ચ શિક્ષણસંસ્થાનો માટેની તકો

- ભૂમિકાઓના સ્પર્ધ સીમાંડનને, વિવિધ ઉચ્ચ વર્ષેની જવાબદારીઓ, શિક્ષણસંસ્થાઓનું સમગ્ર નિયમન, માન્યતા, બંડોળ અને શૈક્ષણિક માનકના નિશ્ચિત ધારાધોરણને કારણે HEI શરૂ કરવા અને ચલાવવાની સરળતા રહેશે.
- તમામ HEIની શૈક્ષણિક અને વહીવટી ગુણવત્તામાં સ્વાયત્તતા ઉન્નતીકરણ વધારો થવાના પરિણામે નાણાકીય અને બિન-નાણાકીય લાભો પ્રાપ્ત થશે જેવા કે સુધારેલ પ્રતિષ્ઠા, વિદ્યાર્થીઓની નોંધણીની ગુણવત્તા, ફેકલ્ટી પ્રેરણ વગેરેના સ્તરો પર સુધારો જોવા મળશે.
- એનલાઈન નોંધણીમાં વધારો, બીજા દેશોમાં શાખા સંકુળને કારણે અને વૃદ્ધિ અને વિતરણની તકો પ્રાપ્ત થશે.
- ખાનગી HEI માટે ઉન્નત તકો તેમજ સંશોધન બંડોળ મેળવવા મેરિટ આધારિત અને પીઅર રિવ્યૂ પર ભાર મૂકવામાં આવશે.

ઉપસંહાર

ઉપરોક્ત સુધારાઓ અને પગલાંઓને જોતાં એવું કહી શકાય કે આ નીતિ ઉચ્ચતર શિક્ષણપ્રણાલીમાં આમૂલ પરિવર્તન અને નવી ઊર્જાના સંચાર માટે ઉપરોક્ત પડકારોને દૂર કરી ન્યાયી અને સમાવેશક ઉચ્ચ કક્ષાના ઉચ્ચ શિક્ષણની પરિકલ્પના, યુવાનોની આકંક્ષાને અનુરૂપ ગુણવત્તાપૂર્ણ, સમાન અવસર આપે તેવું સમાવેશી ઉચ્ચતર શિક્ષણ મળે તેવાં પરિવર્તન સામેલ છે.

- (ક) એવી ઉચ્ચ શિક્ષણવ્યવસ્થા તરફ આગળ વધવું જ્યાં વિશાળ બહુવિદ્યાશાખાકીય વિશ્વવિદ્યાલય અને મહાવિદ્યાલય હોય, જ્યાં પ્રત્યેક જિલ્લામાં કે તેની નજીક ઓછામાં ઓછી એક અને સંપૂર્ણ ભારતમાં મહત્તમ ઉચ્ચ શિક્ષણસંસ્થાઓ હોય, જે સ્થાનિક /ભારતીય ભાષામાં શિક્ષણ કે કાર્યક્રમો ચલાવતી હોય.
- (ખ) બહુવિદ્યાશાખાકીય સ્નાતક શિક્ષણ તરફ આગળ વધવું.
- (ગ) વિદ્યાશાખા અને સંસ્થાગત સ્વાયત્તતા તરફ આગળ વધવું.
- (ઘ) વિદ્યાર્થીઓના અનુભવોની વૃદ્ધિ માટે અભ્યાસક્રમ, અધ્યાપનશાસ્ત્ર, મૂલ્યાંકન અને વિદ્યાર્થી સહાયમાં સુધારા લાવવા.
- (ય) શિક્ષણ, સંશોધન અને સેવાના આધાર પર યોગ્ય નિયુક્તિ અને કારકિર્દીમાં પ્રગતિની તક દ્વારા અધ્યાપકો તથા સંસ્થાગત નેતૃત્વના ઐક્યની પુષ્ટિ કરવી.
- (ઇ) સંશોધન વિશ્વવિદ્યાલય અને મહાવિદ્યાલયમાં ઉત્તમ સાથી સમીક્ષા પામેલ સંશોધનોને નાણાકીય સહાય પૂરી પાડવા અને સક્રિય રૂપથી સંશોધનની સ્થાપના.
- (જ) શૈક્ષણિક અને પ્રશાસનિક સ્વાયત્તતા વાળા ઉચ્ચ યોગ્યતા ધરાવતા સ્વતંત્ર બોર્ડ

દ્વારા ઉચ્ચ શિક્ષણસંસ્થાઓનું નિયંત્રણ.

- (જ) ઉચ્ચ શિક્ષણમાં એક જ નિયમનકાર દ્વારા 'હળવું છતાં ચુસ્ત' નિયમન.
- (ઝ) ઉત્કૃષ્ટ જાહેર શિક્ષણ માટેની વિશાળ તકો સહિતનાં પગલાંની શ્રેણી દ્વારા પહોંચ, સમતા અને સમાવેશનમાં વૃદ્ધિ; સમકાળીન અને વંચિત વિદ્યાર્થીઓ માટે ખાનગી/લોકકલ્યાણ માટે કામ કરતાં વિશ્વવિદ્યાલયો દ્વારા શિષ્યવૃત્તિ; ઓનલાઈન શિક્ષણ અને મુક્ત દૂરસ્થ શિક્ષણ (ODL) તથા વિકલાંગતા ધરાવતા વિદ્યાર્થીઓ માટે તમામ ભૌતિક સુવિધાઓ અને અધ્યયન સામગ્રીની ઉપલબ્ધિ વગેરે જેવાં પરિવર્તનોને સમાવિષ્ટ કરવાની દૂરદર્શિતાનો સમાવેશ થાય છે.

આમ, નવી શિક્ષણનીતિ ભારતીય શિક્ષણ સ્તરને સુધારવામાં મહત્વની પુરવાર થશે જેની મદદથી શિક્ષણક્ષેત્રે રહેલી ખામીઓ દૂર કરી અને વિદ્યાર્થીઓ સમાન અને સર્વીંગી શિક્ષણનો લાભ મેળવી શકશે.

સંદર્ભસૂચિ

- રાષ્ટ્રીય શિક્ષણનીતિ 2020, ભારત સરકાર, 2020
- Kurien, Ajay & Chandramana, Sudeep. (2020). Impact of New Education Policy 2020 on Higher Education. 10.6084/m9.figshare.13332413.v1.
- Malik, Dr. (2021). National Education Policy 2020 and It's Comparative Analysis with RTE. American Research Journal of Humanities and Social Sciences. 7. 1-7. 10.21694/2378-7031.21003.
- Verma, Dr & Kumar, Adarsh. (2021). New Education Policy 2020 of India: A Theoretical Analysis. International Journal of Business and Management Research. 9.302-306. 10.37391/IJBM.R090308.
- Nawale, Arvind & Nawale, Apurva. (2022). National Education Policy-2020 and Higher Education: A Road towards Reform. 60. 16-21.
- Kalyani, Pawan (2020). An Empirical Study on NEP 2020 [National Education Policy] with Special Reference to the Future of Indian Education System and Its effects on the Stakeholders. Journal of Management Engineering and Information Technology, vol. 7, no. 5, Oct. 2020, pp. 1-17.
- Kumar, Sai, P., and Komal, Nagrani (2020). The Study of New

Education Policy 2020. International Journal of All Research Education and Scientific Methods, vol. 8, no. 10, Oct.,52020, pp. 527-529, www.ijaresm.com/ uploaded_files/document_file/B.V._D._S_Sai_Pavan_Kumar_bxxI.pdf.

- Aithal, P. S., and Shubhrajyotsna Aithal (2020). Analysis of the Indian National Education Policy 2020 towards Achieving its Objectives. International Journal of Management, Technology, and Social Sciences, vol. 5, no. 2, Aug. 2020, pp. 19-41.
- British Council (2020). India's New Education Policy 2020: Highlights and Opportunities. British Council - Collaborate and Recruit Internationally | Collaborate and Recruit Internationally, 24 Aug. 2020.education-services.britishcouncil.org/insights-blog/india%E2%80%99s-new-education-policy-2020-highlights-and-opportunities.
- Govt of India, Ministry of Education (2020). AISHE 2019-20. Major Initiatives | Government of India, Ministry of Education, 2020, www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/statistics_new/aishe_eng.pdf.
- 26UN-Ppr-NEP-2022.pdf. (n.d.).
- 5294663_Salient-Featuresofnep-Eng-merged.pdf. (n.d.).
- National Educational Policy 2020—Gujarati Version.pdf. (n.d.).
- Network, digitalLEARNING. (2021, September 27). National Education Policy 2020: Reforms in Higher Education. DigitalLEARNING Magazine. <https://digitallearning.eletsonline.com/2021/09/national-education-policy-2020-reforms-in-higher-education/>



રાષ્ટ્રીય શિક્ષણનીતિ-૨૦૨૦ અને માતૃભાષા

ડૉ. બળદેવ પ્રજાપતિ

ગુજરાત કેન્દ્રીય વિશ્વવિદ્યાલય, ગાંધીનગર

આપણો આ વર્ષને ‘આજાદીના અમૃત મહોત્સવ’ તરીકે જ્યારે ઊજવી રહ્યા હોએ ત્યારે અનેક વિષયો વિષે ચિંતા અને ચિંતન કરવાની આવશ્યકતા છે. કોરોના જેવી મહામારીના કારણે વિશ્વમાં ખૂબ પરિવર્તન આવ્યું છે તો, એણિયા અને યુકેન વચ્ચેનું યુદ્ધ પણ વિશ્વયુદ્ધના વિચાર તરફ દોરી જતું હોય તેવા ભણકારા વાગી રહ્યા છે. ત્યારે “પરં વૈભવં નેતુમેતત્ત્વ સ્વરાષ્ટ્રમ्” – આ રાષ્ટ્રને પરમ વૈભવના શિખરે લઈ જવા માટે નચિકેતાઓની જરૂર જણાઈ રહી છે, તો બીજી તરફ રાષ્ટ્રના સજજનોએ સક્રિય થવાની જરૂર છે. નવીન ટેક્નોલોજીના યુગમાં વિશ્વ હરાણક્ષણ ભરી રહ્યું ત્યારે આપણો ક્યાં? અને આપણું રાષ્ટ્ર ક્યાં? એનો વિચાર આપણો સૌએ મળીને કરવો પડશે. સ્વતંત્ર થયાને ત્યે વર્ષ થયાં પણ ખરા અર્થમાં શું લાગે છે? જ્યારે આપણો દેશ આત્મનિર્ભર બને, ભારતીય વિચાર પ્રમાણો દેશ ચાલે, અને ભારતીય શિક્ષણપ્રણાલી અમલમાં આવશે ત્યારે રાષ્ટ્રની સંસ્કૃતિ અને જીવનમૂલ્યો ધબકતાં થશે.

એકવીસમી સદી એ શાનની સહી છે. શાનના પડકારોને ધ્યાનમાં રાખીને ભારત સરકારે મજબૂત રાષ્ટ્રનું નિર્માણ કરવા, વૈશ્વિક મહાસત્તા તરીકે આ રાષ્ટ્રને સ્થાપિત કરવા, રાષ્ટ્રીય શિક્ષણનીતિ-૨૦૨૦ જાહેર કરીને એક ઐતિહાસિક અને કાંતિકારી પગલું બર્થું છે. વાસ્તવમાં ઘણા જમયથી શિક્ષણ માટે વિચાર કરવાની આવશ્યકતા હતી. ત૪ વર્ષ પછી વિદ્યાર્થીને શારીરિક, માનસિક, બૌધ્ધિક અને સાંસ્કૃતિક રીતે વિકસિત અને કુશળ બનાવવા માટે ત્રણ-ચાર વર્ષના વિચાર-વિમર્શ પછી, લાખો સલાહસૂચન અને તેના પર થેલા મંથન પછી, રાષ્ટ્રીય શિક્ષણનીતિને સ્વીકૃતિ મળી છે. જોમાં ગ્રાથમિક અને ઉચ્ચશિક્ષણક્ષેત્રે માતૃભાષા શિક્ષણનો વિચાર એ આપણા માટે અને રાષ્ટ્ર માટે મહત્વનો છે. જે વિષય અંગે આજે આપણે ચિંતન કરવાના છીએ.

આપણી શિક્ષણનીતિ-૨૦૨૦ના કમાંક ૪.૧૧માં દર્શાવ્યા પ્રમાણો “એ સર્વવિદ્યિત છે કે નાનાં બાળકો તેમના ઘરમાં બોલાતી ભાષા એટલે કે માતૃભાષામાં મહત્વના મૂર્ત કે અમૂર્ત ઝ્યાલોને વધુ જરૂરથી શીખે છે અને ગ્રહણ કરે છે. ઘરોમાં સામાન્ય રીતે માતૃભાષા અથવા સ્થાનિક સમુદ્દરો દ્વારા બોલવામાં આવતી ભાષાનો ઉપયોગ થાય છે. જોકે, કેટલીક વખત બહુભાષી કુટુંબોમાં, કુટુંબના અન્ય સભ્યો દ્વારા

બોલાતી ભાષા ઘરેલું ભાષા હોઈ શકે છે, જે ક્યારેક માતૃભાષા અથવા સ્થાનિક ભાષાથી અલગ હોઈ શકે છે. જ્યાં સુધી શક્ય હોય ત્યાં સુધી ઓછામાં ઓછા ધોરણ 4 સુધી, પણ વધુ યોગ્ય તો ધોરણ 8 સુધી, શિક્ષણનું માધ્યમ ઘરની ભાષા/ માતૃભાષા/ સ્થાનિક ભાષા/ પ્રાદેશિક ભાષા હશે. આ ધોરણો પછી પણ ઘર/ સ્થાનિક ભાષાને શક્ય હોય ત્યાં સુધી શાળામાં એક વિષય તરીકે શીખવવામાં આવશે. સરકારી અને ખાનગી બંને પ્રકારની શાળાઓએ આ સૂચનાનું પાલન કરવાનું રહેશે. વિજ્ઞાન સહિત દરેક વિષયોનાં ઉચ્ચ ગુણવત્તાયુક્ત પાઠ્યપુસ્તકોને ઘરમાં બોલાતી ભાષા કે માતૃભાષામાં ઉપલબ્ધ કરાવવામાં આવશે. બાળક દ્વારા બોલાતી ભાષા અને શિક્ષણના માધ્યમ વચ્ચે કોઈ પણ અંતર હોય તો તેને સમાપ્ત કરવાના તમામ પ્રયાસો તાત્કાલિક ધોરણે કરવામાં આવશે. જ્યાં ઘરની ભાષા/ માતૃભાષામાં પાઠ્યપુસ્તક સામગ્રી ઉપલબ્ધ ન હોય તેવા કિસ્સાઓમાં શિક્ષકો અને વિદ્યાર્થીઓ વચ્ચે વ્યવહારની ભાષા, શક્ય હોય ત્યાં ઘરેલું ભાષા/માતૃભાષા રહેશે. એવા વિદ્યાર્થીઓ જેના ઘરની ભાષા/માતૃભાષા શિક્ષણના માધ્યમથી મિન્ન છે, તેમના માટે દ્વિભાષી અધ્યયન-અધ્યાપન સામગ્રી સહિત દ્વિભાષી અભિગમનો ઉપયોગ કરવા માટે શિક્ષકોને પ્રોત્સાહિત કરવામાં આવશે. બધી જ ભાષાઓ તમામ વિદ્યાર્થીઓને ઉચ્ચ ગુણવત્તા સાથે શીખવવામાં આવશે; એક ભાષાને સારી રીતે શીખવવા અને શીખવા માટે તેને શિક્ષણનું માધ્યમ બનાવવું જ પૂરતું નથી તેને એક વિષય તરીકે ઊર્ધ્વાશપૂર્વક શીખવવી જોઈએ.”

આ સંદર્ભે શિક્ષણનીતિ-૨૦૨૦માં આપણા વડપ્રધાનની નજરે જોઈએ તો -“બાળકના ઘરની બોલી અને શાળામાં ભાષાવાતી ભાષાનું માધ્યમ એક જ હોવાથી બાળકોના શીખવાની પ્રક્રિયા ગતિ ઘણી સરળ અને ઝડપી થાય છે. આ એક મૌનું કરારણ છે કે જ્યાં સુધી સંભવ થાય ત્યાં સુધી બાળકોને પાંચમા ધોરણ સુધી તેમની માતૃભાષામાં જ ભાષાવવાની સહમતી આપવામાં આવી છે. એનાથી બાળકોની સમજણનો પાયો તો મજબૂત થશે જ સાથો-સાથ તેમના ભણતર માટેનો પણ વધુ મજબૂત થશે”

માતા અને માતૃભૂમિથી વિશેષ કશું જ નથી. એમાં ‘માતૃભાષા’ ઉમેરાય એટલે સોનામાં સુગંધ ભણે. બાળકને માટે માતાનું ધાવણ શ્રેષ્ઠ ખોરાક છે, એમ એના વ્યક્તિત્વના વિકસ માટે માતૃભાષા શ્રેષ્ઠ માધ્યમ છે. ક્યાંક હોટલનો ખોરાક ખાવાથી પેટાં દુખે એવી વાત સાંભળી હશે, પણ માતાનું ધાવણ કે માતાના હાથના બનાવેલ રોટલાથી પેટ ભરાય, પોષજા મળે. બેબીફૂડની જહેરાત ગમે તેટલી આકર્ષક કેમ ન હોય, પણ સમગ્ર સંસારમાં માતાના ધાવણની બરાબરી કોઈ જ બેબીફૂડ કરી શકે તેમ નથી. બસ, આટલો જ બેદ માતૃભાષા અને અન્ય ભાષા

વચ્ચે સમજવાનો છે. ‘ઊગે એને કોઈ ન પૂરો’ માણસે મહોરવું હોય, ખીલવું હોય, સર્જનાત્મક બનવું હોય, તો જીવનરૂપી ક્યારીમાં માટી તો માતૃભાષાની જ હોવી જોઈએ. એમ જ્યારે શિક્ષણનીતિમાં માતૃભાષાની વાત થઈ તે યોગ્ય છે. નાનું બાળક પોતાના ઘરની ભાષામાં વિચારે અને બોલતાં શીખે છે. એના માનસપટ ઉપર માતૃભાષાની છાપ વર્તાય ત્યારે બાળકની શીખવાની પ્રક્રિયા ઝડપી બને છે. આપણા જાણીતા સહિત્યકાર શ્રી ગુણવંતભાઈ શાહ માતૃભાષા વિષે કહે છે કે, ‘માતાના ધાવણ પછીના કરે માતૃભાષા આવે છે.’

ગર્ભાવસ્થાથી બાળકનું સંપૂર્ણ શારીરિક-માનસિક બંધારણ ઘડાતું હોય તેમાં માતાના વર્તન-વ્યવહાર, જીવનશૈલી અને બોલાતી ભાષાનો બાળમાનસ ઉપર ઘણો પ્રભાવ પડતો હોય છે. ભાષાને સાંભળી સમજવાની, શીખવાની શક્તિ બાળક ગર્ભમાં હોય ત્યારથી જ કાર્યરત થઈ જાય છે. બાળક જો બે વર્ષમાં બોલતાં ના શીખે તો એના કાનની દવા કરાવવી જોઈએ, કારણ કે જ્યાં સુધી બાળક સાંભળી ન શકે ત્યાં સુધી બોલી શકતું નથી. બાળક ગર્ભમાંથી જ માતાની ભાષા શીખે તેથી તે માતૃભાષા કહેવાય છે. બાળક પાંચ વર્ષમાં માતૃભાષાના જેટલા શબ્દોને અર્થ અને ભાવ સાથે ગ્રહણ કરે, એટલા શબ્દો અન્ય ભાષામાં ધોરણ-૧૦ સુધી ભણ્યા પછી પણ અર્થ અને ભાવ સાથે ગ્રહણ નથી કરી શકતો.

કેટલાય ભાવપૂર્ણ શબ્દોના અંગ્રેજી ભાષામાં શબ્દો નથી. જેમ કે ‘પ્રસાદ’ શબ્દનો અંગ્રેજી અનુવાદ થઈ શકે તેમ નથી, કારણ કે ત્યાં એ પ્રસાદનો ભાવ નથી. ‘ચરણ પખાળવા’ એનો અનુવાદ અંગ્રેજીમાં શક્ય નથી, અને શક્ય કરીશું તો એ ભાવ આવશે? આ વિચાર કરવાની આવશ્યકતા છે. અરવલ્લી જિલ્લાના મેધરજ કે બિલોડા તાલુકામાં અંગ્રેજી માધ્યમનો વિદેશમાં ભણેલો ડોક્ટર આવશે તો યોગ્ય ન્યાય આપી શકશે? ત્યારે આ શિક્ષણનીતિમાં જે માતૃભાષાનો વિચાર થયો તે સાર્થક થશે, ત્યારે આ રાષ્ટ્રની સમસ્યાઓનું સમાધાન મળશે. આ રાષ્ટ્રનો સાચો ઇતિહાસ અભ્યાસમાં આવશે. અને ચારિન્યવાન બાળકો એને પોતાની ભાષામાં અધ્યયન કરી રાષ્ટ્રને સમર્પિત થશે.

કમ્પ્યુટર રૂપી મગજમાં સહુથી વધુ બંધ બેસે તેવી ભાષા માતૃભાષા છે. તેથી અન્ય ભાષાના શબ્દો કે વાક્યપ્રયોગોનું પહેલાં આ કમ્પ્યુટર માતૃભાષામાં રૂપાંતર કરશે. પછી, વિષયવસ્તુને સમજવા માટે મગજનો ઉપયોગ કરશે. જે ભાષામાં બાળકનો ઉછેર થયો હોય તે જ ભાષામાં ગ્રહણશક્તિ, સમજશક્તિ અને વિચારશક્તિ ખીલે છે. ઘરમાં બોલાતી ભાષા એ જ શિક્ષણનું શ્રેષ્ઠ માધ્યમ કહેવાય. બાળમાનસને સમજનાર વિદ્વાનો પણ માને કે “ઘર અને શાળાની ભાષા જુદી પડે ત્યારે બાળક મૂळાય અને લઘુતાગ્રંથિનો કે માનસિક

હતાશાનો ભોગ બને છે. તેના કારણે તેનો બૌદ્ધિક વિકાસ રૂધ્યાય છે. માતૃભાષા શ્રેષ્ઠ ભાષા જ્યારે આપણા માટે અંગેજ ગેસ્ટ ભાષા છે. માતા અને આવાનો ફરક સમજવો પડશે.

માતૃભાષાના સંદર્ભમાં વિશ્વના અનેક દેશોમાં સર્વેક્ષણો થયાં છે. તેનાં તારણો આવ્યાં એમાં માતૃભાષામાં ભાગેલ બાળકનો આત્મવિશ્વાસ અને જીવન સામે પડકારો જીલવાની ક્ષમતા વધુ હોય છે. આજે જાપાન, જર્મની, ઈજરાયલ જેવા દેશો આગળ છે એનું કારણ માતૃભાષામાં શિક્ષણ છે. આપણે વિશ્વના દેશોનાં ઉદાહરણ સમજવાની જરૂર નથી લાગતી, આપણા ભવ્ય ભૂતકાળને યાદ કરો જે ‘સોને કી ચીડિયા’ કહેવાતો મોરારિબાપુ કહે છે: અંગેજ કામની ભાષા છે. તેથી તેની પાસેથી કામવાળીની જેમ કામ લેવાય, ગૃહિણીનું સ્થાન ન અપાય. ચંદ્રકાંત બક્ષીએ એક જગ્યાએ લખ્યું છે કે, “જગતમાં કોઈ અક્ષલવાળી પ્રજા બાળકને પહેલો કક્કો માતૃભાષા સિવાયનો શીખવતી નથી. વિચાર, સ્વભાવ, લાગણી, રુદ્ધન અને કોઇ જેવા આવેગો જે ભાષામાં રજૂ થાય, તે શિક્ષણનું શ્રેષ્ઠ માધ્યમ ગણાય.” તો ગાંધીજીએ લખ્યું છે કે, “માતાના ધાવણ સાથે જે સંસ્કાર અને જે મધુર શાબ્દો મળે છે, તેની અને શાળાની વચ્ચે જે અનુસંધાન હોવું શકે તે પરભાષા મારફિત કેળવણી લેવામાં તૂટે છે. માતૃભાષાનો જે અનાદર આપણે કરી રહ્યા છીએ તેનું ભારે પ્રાયશ્કિત આપણે કરવું પડશે.”

વિશ્વમાં હિંદુસંસ્કૃતનો ડંકો વગાડનાર સ્વામી વિવેકાનંદ, ‘જીતાંજલિ’ કાવ્યસંગ્રહ માટે નોબલપ્રાઇઝ પ્રાપ્ત કરનાર રવીન્ડ્રનાથ ટાગોર, અર્થશાસ્ત્ર માટે નોબલ પુરસ્કાર પ્રાપ્ત કરનાર અમર્ત્ય સેન, વિજાનક્ષેત્રે નોબલ પુરસ્કાર જીતનાર સી.વી. રામન, વિખ્યાત અણ્ણુવિજ્ઞાની અને ભૂતપૂર્વ રાષ્ટ્રપતિ અભ્યુલ કલામ, અવકાશયાત્રા દરમ્યાન પોતાના પ્રાણ આપનાર અને વિશ્વભરમાં પોતાનું નામ રોશન કરનાર કલ્યાન ચાવલા, સ્વતંત્ર ભારતના બંધારણના ઘડવૈયા તરીકે જે ઓળખાય છે તે બાબાસાહેબ આંબેડકર, રાષ્ટ્રપતિ મહાત્મા ગાંધી, ઉદ્યોગપતિ ધીરુભાઈ અંબાણી, સમર્થ અગ્રણી અને વિચક્ષણ બુદ્ધિપતિભાના ધારક શેઠ શ્રી કસ્તુરભાઈ લાલભાઈ, જ્ઞાનપીઠ એવોઈ વિજેતા ઉમાશંકર જોશી, પન્નાલાલ પટેલ, રાજેન્ડ્ર શાહ, રઘુવીર ચૌધરી વગેરે... રાષ્ટ્રની વિકલ્પ પ્રતિભાઓએ પ્રાથમિક શિક્ષણ પોતાની માતૃભાષામાં લીધું અને અનેક સિદ્ધિઓ હાંસલ કરી.

તક્ષશિલા, નાલંદા, વિકમશિલા અને વલભી જેવાં પ્રાચીન ભારતનાં સંસ્થાનોમાં પ્રાચીન ભારતની માતૃભાષા સંસ્કૃતમાં અધ્યયન-અધ્યાપન થતું હતું. આ જ શિક્ષણવ્યવસ્થાને કારણે ચરક, સુશ્રૂત, આર્યભાત્, વરાહમિહેર, ભાસ્કરાચાર્ય, બ્રહ્મગુપ્ત, ચાણક્ય, ચક્ષપાણિ, પાણિની, પતંજલિ, નાગાર્જુન, ગૌતમ, મૈત્રેયી, ગાર્ગી,

થિસુવલ્યુવર જેવા અનેક માહન વિદ્ધાનો આ રાષ્ટ્રને મળ્યા છે. આ વિદ્ધાનોનું વિશ્વમાં આજે પણ એમનું વિશિષ્ટ યોગદાન જેમ કે, ગણિત, ખગોળવિજ્ઞાન, ધ્યાતુવિજ્ઞાન, ચિકિત્સાવિજ્ઞાન, વૈદ્યકીયા, શાલ્યચિકિત્સા, વાસ્તુવિજ્ઞાન, રસાયણવિજ્ઞાન, યોગ, દિશાજ્ઞાન વગેરે વિશ્વપ્રસિદ્ધ છે.

મહાવીર સ્વામી લોકભાષા પ્રાકૃતમાં જ ધર્મોપદેશ આપતા હતા. ભગવાન બુદ્ધે પણ પ્રાદેશિક ભાષામાં ઉપદેશ આપ્યો. સંત તુલસીદાસે ‘રામચરિત માનસ’ની રચના લોકભાષા ‘અવધી’માં કરી. સંત જ્ઞાનેશ્વરે ‘જ્ઞાનેશ્વરી ગીતા’ મરાઈમાં રચ્યું. એક સરેરાશ અંગેજ કરતાં મહાત્મા ગાંધીનું અંગેજ વધારે સારું હતું, તે છતાં પોતાની આત્મકથા ‘સત્યના પ્રયોગો’ તેમણે માતૃભાષા ગુજરાતીમાં લખી એ માતૃભાષા પ્રત્યેનો આગ્રહ બતાવે છે. એટલે આ શિક્ષણનીતિમાં જે માતૃભાષાનો વિચાર થયો એનાથી આપણા દેશનાં બાળકો આપણા દેશને સમજ એનાં સાંસ્કૃતિક મૂલ્યોને સમજવાનો પ્રયત્ન કરશે.

ઉચ્ચ શિક્ષણક્ષેત્રે પણ ભાષા સંવર્ધન માટેનો વિચાર થયો છે. આપણા બંધારણની આઠમી અનુસૂચિમાં દર્શાવેલ ૨૨ ભાષાઓ પણ વિવિધ સમસ્યાઓનો સામનો કરી રહી છે ત્યારે આ ભારતીય ભાષાઓને શાળા-મહાશાળાઓમાં સ્થાન મળશે અને ભાષાઓ જીવંત બનશે. વિવિધ શાળા-મહાશાળાના વિવિધ વિષયોને તજ્જીવો દ્વારા પોતાની માતૃભાષામાં અનુવાદ કરીને સાહિત્ય ઉપલબ્ધ કરાવવામાં આવશે. ગુજરાતમાં પણ ગુજરાત ટેકનોલોજી યુનિવર્સિટી, ગુજરાત યુનિવર્સિટી દ્વારા કેટલાક અધ્યાસક્રમો માતૃભાષામાં જાહેર કર્યા છે, એ શિક્ષણનીતિનો અમલ બતાવે છે. આરોગ્યક્ષેત્રમાં પણ આનો અમલ થવા જઈ રહ્યો છે. વર્ષ ૨૦૩૦ સુધીમાં એનો અમલ થવા જઈ રહ્યો છે ત્યારે, આપણે પણ વિશેષ જવાબદારી અને મહત્વની ભૂમિકા નિભાવવી પડશે.

- આપણે આપણાં સંતાનોને માતૃભાષામાં ભાષાવવાનો આગ્રહ રાખવો પડશે.
- અધ્યાપન કરાવતા શિક્ષકો-ગ્રાધ્યાપકોએ પોતાની અધ્યયન સામગ્રીને બાળકની પોતાની ભાષામાં તૈયાર કરીને પીરસવી પડશે.
- આપણે પણ આપણા વ્યવહાર પોતાની ભાષામાં કરીશું તો જ એ જીવંત બનશે.
- સમગ્ર સરકારી તંત્રનો કારભાર પ્રાદેશિક ભાષા અને હિન્દી ભાષામાં કરવાનો આગ્રહ વધારવો.
- બેન્કો કે વિવિધ સહકારી સંસ્થાઓએ પોતાનું સાહિત્ય અને પોતાનાં પત્રકો પ્રાદેશિક અને હિન્દી ભાષામાં તૈયાર કરવાં.
- દેશમાં જેટલી પણ સ્પર્ધાત્મક પ્રવેશ-પરીક્ષાઓ લેવાય તે પણ આ જ રીતે પ્રાદેશિક અને હિન્દી ભાષામાં લેવાય.

- દરેક ન્યાયાલયોનો કારભાર પણ આપજી ભાષાઓમાં થાય અને બધા ચુકાદા હિન્દી તેમજ પ્રાદેશિક ભાષાઓમાં અપાય.

- બધાં કાર્યાલયો અને દુકાનો શો-રૂમનાં નામપત્ર પણ પ્રાદેશિક અને હિન્દી ભાષામાં લખવાનો આગ્રહ શરૂ થાય.

આવા અનેક વિષયોને જોડિને ભૂમિકા નિભાવશું તો સાચા અર્થમાં શિક્ષણનીતિ-૨૦૨૦માં માતૃભાષાનો વિષય સાર્થક થશે. માતૃભાષા દરવાજા જેવી છે, અંગ્રેજી ભાષાને બારી કહી શકાય. બારી બહાર ડેક્કિયું કરવા કમ લાગી શકે. પણ, આવન-જાવન તો દરવાજા દ્વારા જ થઈ શકે. તો આવો ‘એક હાથે તાલી નહીં પડે’ સહિયારા પ્રયત્નોથી સપનાં સાકાર થશે.



‘જ્ઞાનસુધા’ અને પ્રાર્થનાસમાજ

ડૉ. અંજય રાવલ

એસોસિયેટ પ્રોફેસર, શ્રી ઉમિયા આટ્ર્સ એન્ડ કોમર્સ કોલેજ, સોલા

જેની સ્થાપનાનું સાર્ધશતાબ્દી વર્ષ છે એ ‘ઈશ્વર પ્રાર્થનાસમાજ’ અને એનું વિચારપત્ર – ‘જ્ઞાનસુધા’, એની સામગ્રીનું વિહંગાવલોકન કરવાનું ધાર્યું છે.

જેની સ્થાપનાનું સાર્ધશતાબ્દી વર્ષ છે – સ્થાપના 1871, 17 ડિસેમ્બર – ‘ઈશ્વર પ્રાર્થનાસમાજ’ અને એનો ઇતિહાસ જેમાં સચ્ચવાયેલો છે એ સંસ્થાનું વિચારપત્ર ‘જ્ઞાનસુધા’ કેટલું તો મહત્વનું છે એની વાત મારા લેખમાં કરવા ધાર્યું છે. ભલે ‘સમાચારપત્રો’, ‘સામયિકો’, ‘વિચારપત્રો’, ‘ચોપાનિયાં’ ઊગે – આથમે, પણ એ તત્કાલીન સમયને પામવાનો મહત્વનો આધાર બની રહેતાં હોય છે – અને જો એમ ન હોત તો સો કરતાંય વધારે વર્ષ પહેલાં બંધ થઈ ગયેલા વિચારપત્રની વાત આજે આપણે શા માટે કરીએ છીએ? તો સ્પષ્ટ છે કે ‘જ્ઞાનસુધા’ થકી જ આપણે ‘પ્રાર્થનાસમાજ’ને વધારે સારી રીતે સમજ શકીએ છીએ. એ તત્કાલીન સમયનો મહત્વપૂર્ણ દસ્તાવેજ છે.

જન્મની સાર્ધશતાબ્દીએ ‘સકલપુરુષ’^૧ રમણભાઈ નીલકંઠના (1868-1928) 60 વર્ષના આયુક્તાને અવલોકીએ છીએ ત્યારે આ વિશેષજ્ઞ કેવું તો સાર્થક લાગે છે! ને આ ફળ જેનું છે એ ઝડને એમ આખોય વંશવેલો ગુજરાતના નીલકંઠ પરિવારની કથાર પર નિરાંતે, નજર નાખવા જેવી છે પણ અલમ્ભ ઠિક! ‘સકલપુરુષ’ વિશેષજ્ઞ જે કાર્ય થકી મળ્યું એનું એક ઉજ્જવળ પાસું એટલે સંપાદક રમણભાઈ (‘જ્ઞાનસુધા’ અને ‘વસંત’) તેને એમાંય ‘જ્ઞાનસુધા’ના સંપાદક: રમણભાઈ નીલકંઠ એમ મારા વક્તવ્યની સીમા બંધાય... સમયની સીમામાં એની વાત.

જો ટાઇમમશીનમાં બેસીને જઈએ પંડિતયુગમાં. સહેજ સીમા ભણે સુધારકયુગમાં અને જરાક અડે ગાંધીયુગને એ ગુજરાતી સાહિત્યનો ગાળો પણ એ તો આજે; એ વખતે તો માત્ર સાહિત્યની જ વાત કયાં હતી? સાહિત્ય, ઇતિહાસ, તત્ત્વજ્ઞાન, ધર્મ, રાજકારણ, સમાજ, શિક્ષણ, વિજ્ઞાન એમ અનેક વિષયના પાટલા એકીસાથે મંડતા - સાવ અડોઅડ.

એક બાજુથી કેળવાતી જતી કાવ્ય-સાહિત્યની સમજ, નવાં નવાં પ્રગતાં સાહિત્યસ્વરૂપો, પ્રગટ થતાં પુસ્તકોનાં અવલોકનો-સમીક્ષા, પૂર્વ-પશ્ચિમ સંસ્કૃતિ વચ્ચે

સંધર્ષ, ધર્મનું સ્વરૂપ સ્પષ્ટ કરવા થયેલાં મંથનો, ઉગ્ર વાદ-વિવાદ, બદલાતી જતી જીવનરીતિ, પરંપરા માટે અતિઆગ્રહ, સુધારાપદ્ધતિ -જેમાં જન્યાં એ ચોપાનિયાં-કહેતાં સામયિકો જેમાં ઇચ્છારામ સૂર્યરામ દેસાઈનું ‘ગુજરાતી’ (1880), મણિલાલ નભુભાઈનું ‘પ્રિયંવદા’ (1885) અને ‘સુદર્શન’ (1890), મુખ્યત્વે, રમણભાઈ નીલકંઠનું ‘જ્ઞાનસુધા’ (1892), ભગુભાઈ ફેટેહચંદ કારબાસનું ‘સમાવોચક’ (1896) અને મુખ્યત્વે, આનંદશંકર ધૂવનું ‘વસંત’ (1902) જેવાં સામયિકો પંડિતયુગમાં શરૂ થયાં અને આખાયે યુગ ઉપર અને ગુજરાતી સાહિત્ય ઉપર પણ ભારે પ્રભાવી રહ્યાં આ સામયિકો તત્કાલીન સમયનો અમૃત્ય જ્ઞાનવારસો છે. એની ‘કાચા સોના’ જોવી સામગ્રી આજેય સંશોધકો-અભ્યાસીઓ માટે અતિ ઉપયોગી છે. એટલું જ નહિ, શોધન અને સંશોધન માટે, સાહિત્યિક ઈતિહાસના લેખન માટે, તત્કાલીન સામાજિક, સાહિત્યિક, ધાર્મિક ઘટનાઓના અભ્યાસ માટે મહત્વપૂર્ણ છે. આજે અનુચાધુનિકતાના સમયમાં આપણે આવ્યા છીએ ત્યારે એમના સાંસ્કૃતિક સંદર્ભો ફરીથી જોડવાના છે ત્યારે ‘જ્ઞાનસુધા’ સામયિક અને એના સંપાદક રમણભાઈની કેટલીક વિગતો તત્કાલીન પરિપ્રેક્ષયમાં જોવી અનિવાર્ય છે.

પ્રાર્થનાસમાજની સ્થાપના અને ‘જ્ઞાનસુધા’નું પ્રકાશન:

1871ની 17મી ડિસેમ્બરે અમદાવાદમાં ભોળાનાથ સારાભાઈ અને મહીપતરામે એક ઈશ્વરમાં માનતી પ્રાર્થનાસમાજ નામની સંસ્થા સ્થાપી. આ પ્રાર્થનાસમાજે જાચા ધર્મસ્વરૂપનો ફેલાવો કરવા ધર્મપચારક સભા સ્થાપી. અને ધર્મપચારક સભાના આશ્રયે ‘જ્ઞાનસુધા’ નામનું શરૂઆતમાં થોડા અંગેજ લખાણવાળું ગુજરાતી પજવાડિક દેવનાગરી લિપિમાં શરૂ કર્યું. જોકે, ‘જ્ઞાનસુધા’ના આરંભના અંકો પ્રાપ્ત થતા નથી; એથી, બીજા સંદર્ભોને આધારે એનું પ્રકાશન 1886માં થયું હોય એમ લાગે છે. જેમ કે, ‘બુદ્ધિપ્રકાશ’ની- પૃ. 34, અંક-5, પૃ.118 ઉપર ‘પુસ્તકોની પહોંચ’માં ‘અમદાવાદ પ્રાર્થનાસમાજનો પંદરમો વાષ્પિક વૃત્તાંત અને 1886નો’૪ આમ ત્યારે ‘જ્ઞાનસુધા’ મુખ્યપત્ર શરૂ થયું હોય એમ લાગે છે.

‘જ્ઞાનસુધા’ અને રમણભાઈ નીલકંઠનું સંચાલન:

1887માં રમણભાઈ નીલકંઠ ઓફિન્સ્ટન કોલેજ, મુંબઈમાંથી બી.એ. બીજા વર્ગમાં ઉત્તીર્ણ થયા. એ અરસામાં જ તેમને ‘જ્ઞાનસુધા’નું સંચાલન સોંપવામાં આવ્યું હતું. ‘જ્ઞાનસુધા’ એ વખતે સાત્તાહિક હતું. પદ્ધી, પાકિક થયું ને 1892ના જાન્યુઆરીથી તે માસિકપત્ર બન્યું. ધીરુભાઈ ટાકરેપ કરેલી સૂચિ મુજબ 1892ના જાન્યુઆરી અંક-2, પુસ્તક-6થી એના અંકો મળે છે પણ અગાઉના અંકો વિશે,

એની સામગ્રી વિશે કંઈ ખાતરીપૂર્વક કહેવાય એવાં સાધનો-આધાર મળતાં નથી, પરંતુ ‘જ્ઞાનસુધા’ની જે શાબ બંધાઈ અને એ પંડિતયુગનું એક મહત્ત્વનું સામાયિક બન્યું એ તેના 1892 પછીની અભ્યાસ સામગ્રીને લીધે જ, એમ જરૂર કહી શકાય. આ ગાળના સંસારસુધારા, સાહિત્યિક, સામાજિક અને ધાર્મિક એમ અનેક વિષયની મૂલ્યવાન સામગ્રી આ સામયિકમાં પ્રગટ થઈ હતી. તો ‘જ્ઞાનસુધા’નું પ્રકાશન 1919 સુધી થયું છે, છેલ્લું પુસ્તક-32, જાન્યુઆરીથી સપ્ટેમ્બર- અંક-1થી 9, ઓક્ટોબર-અંક1થી 12 સુધીની અંકવાર સૂચિ થયેલી છે. આમ, 1892થી 1919 સુધીનાં 27 વર્ષ અને એ પહેલાંનાં પાંચ પુસ્તકોનાં 5 વર્ષ જોડી દઈએ તો 32 વર્ષ સુધી આ સામયિક ગુજરાતના સાંસ્કૃતિક અને સાહિત્યિક જીવન ઉપર છવાયેલું રહ્યું એમાં સિંહકણો એના સંપાદક/તંત્રી રમણભાઈ નીલકંઠનો છે, એ નિઃશંક છે. અહીં વર્ષ/અંક અંગે બે અભ્યાસીઓએ સંભવત: સરતચૂકથી ખોટી વિગતો આપી છે એ નોંધવું જરૂરી છે.

એક, નિરંજન ભગત - “1886-87થી તે આયુષ્યના અંત લગી 1928 લગી, 42 વર્ષ લગી તેઓ સતત ‘જ્ઞાનસુધા’ના તંત્રી રહ્યા હતા.”⁶ અને બે) હસિત મહેતા - “ચાર બાદ પ્રાર્થનાસમાના મંત્રી ગટુલાલ દ્વિવના હાથમાં ‘જ્ઞાનસુધા’નું સંચાલન આવ્યું અને 1919માં ‘જ્ઞાનસુધા’નો છેલ્લો-32મો અંક બહાર પડ્યો.”⁷ જ્યારે 1919માં ‘જ્ઞાનસુધા’નું પ્રકાશન જ બંધ થયું તો, પછી 1928 લગી -42 વર્ષ લગી- એ વિગતો સુસંગત નથી, તેથી નિરંજન ભગતે જે વર્ષ કહ્યા એ બરાબર નથી. એવી રીતે હસિત મહેતા ‘જ્ઞાનસુધા’ના 32 અંક કહે છે, એ ખરેખર પુસ્તકોના કમાંક છે, અંક તો એનાથી ઘણા બધા વધારે છે, કેમ કે, 1892 પછી એ માસિક પણ બને પછી વર્ષના બાર અંકો એમ અંકની સંખ્યા ઘણી મોટી થાય.

‘જ્ઞાનસુધા’માંથી પ્રગટ થતો રમણભાઈ નીલકંઠનો સંપાદકીય દાસ્તિકોણ:

કોઈ પણ સામયિકનો આકાર એના સંપાદકના દાસ્તિકોણને લઈને ઘડતો હોય છે. એ પછી સંપાદકીય લખાણ હોય, પ્રકાશિત થતી સામગ્રી હોય, એમાં પ્રગટ થતા ચર્ચાપત્રો હોય, એનું નિયમન સંપાદકના હાથમાં હોય છે. સંપાદક જેટલો જાગૃત સામયિક એટલું જીવંત. ‘જ્ઞાનસુધા’ એ પ્રાર્થનાસમાજનું મુખપત્ર હોવાથી અને રમણભાઈ પણ પ્રાર્થનાસમાજના સક્રિય સમર્પણ હોવાને લીધે તેઓ ધર્મ-સમન્વયના સ્ત્રીઓની માનતા હતા. ધર્મસાધનામાં તેઓ ઈશ્વરની ભક્તિ, ઉપાસના અને પ્રાર્થનાને મહત્વ આપે છે. ‘જ્ઞાનસુધા’નું સંચાલન સંભળતા રમણભાઈ નીલકંઠ જાન્યુઆરી, 1892 પુ.6, અંક-1ની શરૂઆત જ ભોળાનાથ સારાભાઈના ‘પ્રાર્થના’

નામે બે અભંગ પ્રસ્તિક્ષ કરીને કરે છે. ભંગવમહાન તમે ભગવાન, કરો કૃપાદાન નિરંતર' એ પંક્તિ શરૂ થતા અભંગથી કરે છે ને પછી એનું પાંડિત્યપૂર્ણ અર્થદર્શન પણ કરાવે છે.

તો, એ જ અંકમાં 'કવિત્વરીતિ' નામે કાવ્યત્વ વિચારણાનો અભ્યાસપૂર્ણ લેખ છે, જે પછી 'કવિતા અને સાહિત્ય' ભાગ-1માં ગ્રંથસ્થ થયેલો છે અને બીજી બાજુ આ જ અંકમાં સંસારસુધારાના ભાગરૂપે સમાજલક્ષી લેખમાળા 'વ્રત'નો આરંભ-ઉદ્ઘેશ લોકેના મનનાં વહેમ અને અંધશ્રદ્ધ દૂર કરવાનો છે, જુઓ: "હિન્કુ જનમંડળના વહેમી વર્ગમાં વ્રતનો મહિમા ઘણો ગવાય છે. એકાદશી, પૂર્ણિમા હિત્યાદિ અમુક દિવસોએ અમુક વ્રત કરવું એમ આશા કરનાર વચનોને આધારે વ્રત કરવાનો પ્રચાર ઘણો છે. અનાં વ્રત કેટલાં નિરાકારણ છે તે બતાવવાના હેતુથી એમાંના મુખ્ય મુખ્યનો સાર આપીયે છીએ."

તો, 'ઉંડી રજની' નામનું કાવ્ય અને 'ભક્તિ અને નીતિ-1' નામનું પ્રાર્થનાસમાજમાં નરસિંહરાવ દિવેટિયાએ આપેલું વ્યાખ્યાન પછી અહીં છે.

પહેલા અંકથી જ રમણભાઈ નીલકંઠ 'પ્રાર્થનાસમાજ' નિમિત્તે ધર્મ, 'કાવ્યત્વરીતિ' નિમિત્તે સાહિત્ય-વિવેચન અને 'વ્રત' નિમિત્તે સમાજ/સંસારસુધારો એમ વિવિધ દિશામાં આ સામયિક આગળ વધશે એના સંકેત આપી દીધા છે. તો સર્જનાત્મક સાહિત્યને પણ તે આવકારશે એવી જાંખી અહીં આરંભે જ થયા વગર રહેતી નથી. સંપાદકની દાસ્તિ માત્ર સાહિત્યિક નથી પણ ઘણા બધા વિષયોને આવરી લેવાની મહત્વાકંક્ષા પણ પ્રગટે છે. આ પ્રથમ અંકથી જ જાણો ભાવિનો નકશો અંકાઈ જાય છે ને પછી એનો ઉત્તરોત્તર વિસ્તાર થાય છે.

'જ્ઞાનસુધા'ની સામગ્રી:

'જ્ઞાનસુધા'માં ત્રણ દાયકથી પણ વધારે વર્ષો દરમિયાન પ્રગટ થયેલી સામગ્રી ઉપર નજર કરતાં જણાય છે કે અહીં સાહિત્ય, ધર્મ, સમાજ, તત્ત્વજ્ઞાન, ઈતિહાસ, વિજ્ઞાન, શિક્ષણ - એમ વિવિધ વિષયોનો સમાવેશ થયો છે. જો એ સામગ્રી કેટલી માત્રામાં પ્રગટ થઈ એ જોઈએ તો એમાંથી સંપાદકનો દાસ્તિકોણ પ્રગટ થતો જણાશે.

સૌથી વધારે સંખ્યામાં સાહિત્યને લગતા લેખો પ્રકાશિત થયા છે. પછી ધર્મવિષયક 192 જેટલા લેખો, સમાજવિષયક 54 જેટલા લેખો, તત્ત્વજ્ઞાનના 13 જેટલા લેખો, રાજક્રિયાના 07 લેખો, વિજ્ઞાનના 06 લેખો, શિક્ષણના 04, ઈતિહાસનો 01 લેખ, આમાં વર્ગીકૃત ન થયા હોય એવા પ્રકીર્ણ લેખો 35 જેટલા છે, તો દેશ અને દુનિયાના મહાનુભાવોને શ્રદ્ધાંજલિરૂપે લાયેલા 36 જેટલા લેખો - આ બધી સામગ્રીમાંથી

સંપાદકની બહુશુત્તા અને વ્યાપક એવી દર્શિ પામી શકાય છે. તો,

સાહિત્યકાર પિતાના સંસકાર વારસામાં લઈને તેજરવી અભ્યાસ કારકિર્દી સાથે રમણભાઈ અમદાવાદ ગુજરાત કોલેજ અને મુંબઈ એલ્ફિન્સ્ટન કોલેજમાં ઘડાયા. કોલેજ અભ્યાસ દરમ્યાન જ એ જ કોલેજની ગુજરાતી સભામાં ‘કવિતાની ઉત્પત્તિ અને સ્વરૂપ’ એ વિશે વ્યાખ્યાન 1887માં આચ્યું ને પછી 1888માં અને વિસ્તારીને ‘બુદ્ધિપ્રકાશ’માં હપ્તે હપ્તે પ્રગટ કર્યું. રમણભાઈ નીલકંઠને લાગ્યું હતું કે ‘કવિતા જેવા મહત્વના સાહિત્યપ્રકાર માટે ગુજરાતી પુસ્તકસમૂહમાં સમૂળગી ચર્ચા જ નથી.’ અને તેથી એમણે કાવ્યચર્ચાનો પ્રકલ્પ હાથ ધર્યો અને આરંભ ફક્ત 20 વર્ષની વિદે ‘કવિતા’ નામના કાવ્યના મહત્વપૂર્ણ લેખથી કર્યો. એ પછી ‘જ્ઞાનસુધા’ના ઇ.સ. 1892 જાન્યુઆરી-પુ.6, અંકમાં ‘કવિત્વરીતિ’ પ્રગટ થયો ત્યારે ઉંમર 24 વર્ષ. પછી એ જ સામચિકિયાં ઇ.સ. 1895માં ‘છંદ અને પ્રાસ’, ઇ.સ. 1900 ‘વૃત્તિમય ભાવાભાસ’ અને ઇ.સ. 1901માં ‘કાવ્યાનંદ’ નામના લેખ - આમ, કાવ્યતત્ત્વ વિચારના મહત્વના પાચ નિબંધમાંથી ચાર નિબંધ ‘જ્ઞાનસુધા’માં 1892થી 1901 સુધીમાં પ્રગટ થયા હતા. આ બધા નિબંધો તેમના ‘કવિતા અને સાહિત્ય’ વો-1માં સંગ્રહયેત્તા છે. જોકે, એમની વિવેચનપ્રવૃત્તિ ત્યાર બાદ પણ ચાલતી રહી હતી હતી પણ લગભગ બાર-તેર વર્ષ દરમિયાન કવિતાવિષયક ઉત્તમ કાવ્યવિચારણા એમણે કરી હતી ને કમશા: એમનો વિચાર પુખ્ત બનતો જગ્યાય છે અને ‘જ્ઞાનસુધા’ રમણભાઈ નીલકંઠની કાવ્યતત્ત્વવિચારણા માટે અગત્યનું વાહન બની રહે છે તો બીજી બાજુ, સર્જનાત્મક લેખનનો પ્રારંભ પણ 1892માં ‘ભર્દુભદ્ર’ નામની હાસ્યકથાથી થાય છે ત્યારે રમણભાઈ 24 વર્ષના હતા. આઠ વર્ષ સુધી 51 હપ્તામાં ‘જ્ઞાનસુધા’ પ્રકાશિત થઈ અને ઇ.સ. 1900માં એ પુસ્તકરૂપે પ્રકાશિત થાય છે. આમ, એક બાજુ સર્જન અને બીજી બાજુ વિવેચન એમ લગભગ સાથોસાથ ચાલ્યું છે. એક રાઈનો પર્વત નાટક સિવાય - મોટા ભાગનું સર્જનાત્મક સાહિત્ય ‘જ્ઞાનસુધા’માં પ્રગટ થયું છે.

‘ભર્દુભદ્ર’ના પ્રકાશનથી ગુજરાતી સાહિત્યમાં ખળભળાટ મર્યા ગયો હતો. બે પક્ષ હતા - એકમાં નરસિંહરાવ આદિ સુધારાવાઈ તો સામે પક્ષે મહિલાલ નભુભાઈ દ્વિવેહી, આનંદશક્ર ધ્રુવ આદિ. આનંદશક્રે ‘ભર્દુભદ્ર’ની આકરી આવોચન કરી હતી - સુધારકો ઉપર ઠોક બોલાવી હતી. તો એને આવકાર પણ ઘણો મળેલો. ખ્યાત હાસ્યલોખક જ્યોતીન્દ્ર દવે ‘હાસ્યમંદિર’માં લખે છે - “રમણભાઈએ હાસ્યમંદિરની રચના કરી છે, પરંતુ એના પર કલશ-સ્થાને સોહે છે ભર્દુભદ્ર... ભર્દુભદ્રને પદભાષ કરે એવો મહાનુભાવ હાસ્યસૃષ્ટિમાં હજી જન્મવો બાકી જ છે.”

તત્કાલીન સામાજિક સંદર્ભ તો અગત્યનો છે જ, પણ સ્વતંત્ર હાસ્ય નવલકથાનો -સંભવત: ભારતમાં પણ- આ પ્રથમ પ્રયોગ છે. એ દસ્તિએ પણ એનું મહત્વ ઘણું બધું છે. જેમ 'સમાલોચક'માં આપણને વિચારક ગોવર્ધનરામ મળે છે, એ જ રીતે 'જ્ઞાનસુધા'માં આપણને હાસ્યલેખક રમણભાઈ નીલકંઠ મળે છે.

'જ્ઞાનસુધા'માં રમણભાઈનું મોટો ભાગનું સર્જનાત્મક-વિવેચનાત્મક લખાણ પ્રગટ થાય છે. આ રીતે રમણભાઈનાં સ્વકીય વિચારો, માન્યતાઓ, આગ્રહો વગેરેના ફેલાવા માટે એક સશક્ત માધ્યમ એટલે 'જ્ઞાનસુધા'. 'જ્ઞાનસુધા'નું લેખકવૃદ્ધ રમણભાઈ નીલકંઠ ઉપરાંત નરસિંહરાવ દિવેટિયા, 'કાન્ત', બ.ક. ધકોર, નહાનાલાલ, આનંદશંકર ધ્રુવ જેવા સાક્ષરોનું બનેલું હતું, તો એના પ્રબળ પ્રતિસ્પદી મણિલાલ નભુભાઈના 'પ્રિયવદા' અને 'મુર્દૂર્ણ' જેવાં સામયિકોમાં પ્રગટ થતા લેખોએ પણ, રમણભાઈની વિક્રતાને ધાર કાઢવામાં મોટો ફાળો આપ્યો છે.

તો નહાનાલાલ, બ.ક. ધકોર, 'કાન્ત', આનંદશંકર ધ્રુવ જેવાના સાહિત્યપ્રવેશમાં પણ 'જ્ઞાનસુધા' નિમિત્ત બન્યું. 'પ્રેમભક્તિ' ઉપનામથી નહાનાલાલનું 'વસંતોત્સવ' કાવ્ય સૌ પ્રથમ 'જ્ઞાનસુધા'માં પ્રકાશિત થયું પછી તો 'કાન્ત'નાં ઘણાં કાવ્યો આ સામયિકમાં પ્રગટ થયાં. એવું જ બળવંતરાય કટ્યાડારાય ધકોર, 'કાન્ત', આનંદશંકર ધ્રુવના ઘડતરકણની રચનાઓ અહીં પ્રકાશિત થઈ. આમ, પંડિતયુગના પ્રમુખ સર્જક-વિવેચકના ઘડતરમાં આ સામયિકનું યોગદાન બહુમૂલ્ય છે.

તો, ધનસુખલાલ મહેતા, ચાંપશીભાઈ ઉદ્દેશી, વિદ્યાગૌરી નીલકંઠ જેવી નવી કલમોને 'જ્ઞાનસુધા'એ ભોંય પૂરી પાડી. 'વસંતોત્સવ' - નહાનાલાલ, 'પ્રેમનો દિવસ' સોનેટાળાનાં કેટલાંક સોનેટ - બ.ક. ધકોર, 'વત્સલનાં નયનો'- 'કાન્ત' જેવી કવિતાઓ પછી પણ અભ્યાસીઓને આકર્ષણી રહી. આથી કહી શકાય કે રમણભાઈ નીલકંઠનાં કાવ્યપસંદગીનાં ધોરણો ઊંચાં હતાં. જ્યારે 'ચિહ્ની' 'ટપાલીની મુસાફરી' એ જેવી વાર્તાઓ એ સ્વરૂપના ઘડતરની નજીક જતી દેખાય છે, જ્યારે સ્વરૂપની શરૂઆત હોય ત્યારે એ પૂર્ણ ન હોય એ સ્વાભાવિક છે. કેમ કે, ગુજરાતી સાહિત્યમાં હજુ આ સ્વરૂપ પૂર્ણરૂપે આવ્યું ન હતું. 'જ્ઞાનસુધા' ઊહાપોહ-૧ ઊભા થયેલા પ્રશ્નો, એ નિમિત્ત થયેલી તત્ત્વચર્ચા, ગુજરાતી સાહિત્યનું એક યાદગાર અંગ છે. આ ઊહાપોહની ભૂમિકા કેવી રીતે પૂરી પાડવામાં આવી હતી એ જોઈએ.

ડેલનશૈલી વિશે ઊહાપોહ:

'પ્રેમભક્તિ' ઉપનામથી નહાનાલાલનું 'વસંતોત્સવ' નામનું બંડકાવ્ય -માર્યથી ડિસેમ્બર 1898માં પ્રસિદ્ધ થયું- એની પ્રસ્તાવનામાં નહાનાલાલે - કાવ્યમાં

ઇંદની આવશ્યકતા નથી એવું મંતવ્ય પ્રગટ કર્યું હતું, એની સામે નરસિંહરાવે ‘જ્ઞાનસુધા’ના તંત્રીને પત્ર લખીને આવા ‘ભૂલમરેલા’ લખાણે જ્ઞાનસુધામાં સ્થાન આપ્યું એ બાબતે વાંધો લીધો તો નહાનાલાલનો પક્ષ લેતાં રમણભાઈએ ‘ઇંદની ખામી છતાં ‘પ્રેમભક્તિ’ની ઉચ્ચસિદ્ધતાથી ‘વસન્તોત્સવ’માં રુચિકર્તા રહેલી છે, તેથી આ યાત્રાદાતા વાચકો સમક્ષ એ નિબન્ધન ૨જૂ કર્યું છે. એમ સ્પષ્ટ કરે છે’- નવોદિત હોવા છતાં પ્રયોગશીલ વલણનું સ્વાગત કરતી સંપાદકીય સૂજુ અહીં વર્તાય છે. નહાનાલાલ - ગેયતા કવિતાને આવશ્યક નથી, કવિતાની વાણીમાં ડેલન હોવું જ જોઈએ, વાણીનું એ ડેલન અણસરખું પણ હોય એમ જણાવે છે એના જવાબમાં નરસિંહરાવ આ અછાંદસ રચનાની ટીકા કરે છે. આ કાવ્ય પદ્યમય નથી, એનું રસમય કલાસ્વરૂપ બંધાતું નથી ને એનાં તાર્કિક તારણો આપીને નહાનાલાલના કાવ્યની ટીકા કરે છે. પછી એ જ ડેલનશૈલી નહાનાલાલની ઓળખ બની.

‘હદ્યવીણા’ – ન.ભો. દિવેટિયાનો બીજો કાવ્યસંગ્રહ પ્રગટ થયો. એનું વિસ્તૃત અવલોકન 1897ના અપ્રિલના ‘સુર્દર્શન’ અંકમાં મણિલાલ નભુભાઈએ કર્યું. એમાં કાવ્યસંગ્રહ કૃત્યા વર્ગને આનંદ આપશો તે કહી શકતું નથી એમ કહીને વિદેશી સંગીતના આલાપો તથા બાધ દાઢિથી કરેલાં વર્ણનોની ટીકા કરી છે. આ દેશના સંગીત અને અધ્યાત્મથી ટેવાયેલા વાચકને આ કાવ્યો આકર્ષી શકશો નિહિ એવો સ્પષ્ટ અભિપ્રાય આપીને છેલ્દે આપણી ભાષામાં નવી જ પદ્ધતિની અને અંગ્રેજી અનુકરણવાળી કવિતાના નમૂનારૂપે પુસ્તક ભાષાના અભ્યાસીઓને, વિચારકમના વિલોકનારને અને નવી કવિતાના શોખીનોને સંગ્રહમાં રાખવા યોગ્ય છે. આના જવાબરૂપે રમણભાઈ ‘જ્ઞાનસુધા’ 1897ના જૂનમાં ‘હદ્યવીણા’ના પ્રશ્નમાં લેખ લખે છે, જે ‘જ્ઞાનસુધા’ના પછીના ત્રણ અંકમાં વિસ્તરે છે. કુલ 108 પાનાંનો આ લેખ નરસિંહરાવનાં કાવ્યોની ખૂલ્લીઓનું વિગતે વિશ્વેષણ કરીને કવિત્વની વિશાળતા, રસ આદિની પ્રશંસા કરે છે. કવિતા અને સંગીતના અલૌકિક મિશ્રણથી બનેલી આ કાવ્યોની અપૂર્વ રસિકતા ગુજરાતી સાહિત્યમાં સહેવ તીર્તિસ્તંભરૂપ રહેશે. આમ, નરસિંહરાવના કાવ્યસંગ્રહ નિમિત્ત કાવ્યવિવેચનમાં ઉમ્મિકાવ્યની સ્પષ્ટ વિભાવના બનાવી ગુજરાતી વિવેચનની એ દિશામાં કાર્ય રમણભાઈ નીલકંઠે કર્યું.

આમ, આવા ઘણા સાહિત્યિક ઊઠાપોહનું નિમિત્ત ‘જ્ઞાનસુધા’ બન્યું અને ગુજરાતી સાહિત્યને નિરામય રાખવામાં સજાગ સંત્રીની ભૂમિકા રમણભાઈએ સુપેરે બજાવી હતી.

સંસારસુધારા અંગે ઉહાપોહ :

જેમ 'શાનસુધા' સાહિત્યિક ઉહાપોહ માટે નિમિત્ત બન્યું હતું, એવું જ નિમિત્ત સમાજમાં વ્યાપેલાં કેટલાંક અનિષ્ટોના સુધારા માટે પણ સતત ઉગ્ર વાદ-વિવાદ, ઉહાપોહ કરીને બન્યું બે'ક વાત આ અંગે:

(1) વિધવાવિવાહ તથા લગ્નના સંમતિવયનો કાયદો કરાવવા અંગે સુધારકોની હિંલચાલે મણિલાલ નભુભાઈને તેમની સાથે લાંબા વિવાદમાં ઉત્તરવાની ફરજ પાડી હતી. શ્રી બહેરામજી મલબારીએ 1866થી 1891 દરમ્યાન વિધવાવિવાહ માટે કાયદો કરાવવા તથા હિંદુ કાયદામાં લગ્નનું સંમતિવય વધારવા માટે આંદોલન ઉભું કર્યું હતું. 1891માં સરકારે મલબારીએ માગ્યા મુજબ સંમતિવયમાં સુધારો કરતો કાયદો પસાર કર્યો... ત્યાર બાદ દાદાજી રૂક્માબાઈના 1887માં બનેલા બનાવે મણિલાલ અને સુધારકો વચ્ચે કાયમનું અંતર પાડી દીધું.

મણિલાલ અને રમણભાઈ વચ્ચે જિંદગીભરનો અંટસ પડી ગયો, જેના પરિણામે બધા જ જાહેર પ્રશ્નોની ચર્ચામાં બને વચ્ચે તીવ્ર મતભેદ ઉભો રહ્યો. મણિલાલે પિનલકોડના સુધારા અંગે કંઈક મતાગ્રહી ગણાય તેવું વલણ દાખલ્યું હતું અને હિંદુ સમાજની જૂની પ્રણાલિકનો બચાવ કરવામાં થોડીક રૂઢિયુસ્તતા પણ બતાવી હતી, તેમ છતાં સમજાવેલું કે સુધારાનું તત્ત્વ એકંદરે મધ્યમ માર્ગનું જ ઘોતક છે. 'સુધારો', 'સુધારાનો કમ', 'નવીન અને પ્રાચીન', 'પ્રાચીન અને નવીન' ઈત્યાદિ વેખો વાંચનારે તરત સમજાય તેમ છે. રમણભાઈએ ચર્ચાલેખો દ્વારા મણિલાલની વિચારશ્રોણીનો ઉગ્ર વિરોધ કર્યો હતો. 'ભર્દંભર્દ' લખીને તેમની તેમ જ સનાતન હિંદુધર્માંઓની 'તત્ત્વરાતિ'નો ઉપહાસ કર્યો એની પાછળ આ જ મતભેદ નિમિત્ત બન્યો હતો. તો બીજી બાજુ મણિલાલ નભુભાઈએ 'સિદ્ધાંતસાર' ધર્મવિચારનો દીર્ઘ નિબંધ રચ્યો હતો. આ ગ્રંથમાં મણિલાલે આર્થધર્મની તાત્ત્વિક અને ઐતિહાસિક દાસ્તાએ વિશેષતા પ્રગટ કરી દુનિયાના બીજા ધર્મો કરતાં એની ઉત્કૃષ્ટતા સિદ્ધ કરવા પ્રયત્ન કર્યો.

(2) 'સિદ્ધાંતસાર'નું અવલોકન નિમિત્તે મણિલાલ અને 'કાન્ત' વચ્ચેનો ઉહાપોહ ઉક્ત 'સિદ્ધાંતસાર'નું અવલોકન કાન્તે 'કાન્તા'ના છિદ્ર નામે 'શાનસુધા' માર્ય 1894થી ઓગસ્ટ, સપ્ટેમ્બર 1896 દરમ્યાન પંદર પત્ર રૂપે કર્યું, જેમાંથી એક પત્રમાં 'કાન્ત'એ 'કાન્ત'ને ઉત્તર આપેલો છે. આખું અવલોકન પત્રરૂપે પ્રકાશિત થયું છે. મણિલાલ નભુભાઈના વિચારોનું 'કાન્ત' ખંડન-મંડન કરે છે. બને વિદ્યાનો ભિન્ન ભિન્ન વિચારસરણીના આગ્રહી હોવાથી પોતાના પક્ષને સાચો સાબિત કરવા

‘કાન્ત’ શબ્દછળ કે તર્કછળની મદદથી પોતાના આગળ કરીને આકમક રીતે વ્યક્ત થાય છે. સિદ્ધાંતસારના અવલોકન નિમિત્તે થયેલો આ વિવાદ-ધર્મ જેવા ગંભીર વિષયની ચર્ચા સામે રોમેન્ટિક રીતે પણ થાય, એ વડે જોઈ શકાય છે કે એમાં ખંડન વિશેષ છે કે, રૂઢિવાદીઓનો ઉપહાસ વધારે છે - એ પણ વેદાંતશાસ્ત્ર પૂરું સમજ્યા વિના. વેદાંતશાસ્ત્રના નિષ્ઘાત તરીકે મણિલાલ નભુભાઈની છબી સમગ્ર ભારતમાં જ્યાત હતી. ‘શાનસુધા’માં પ્રગટ થયેલા સાહિત્યવિષયક લેખો એ પછી સર્જનાત્મક હોય કે વિવેચનાત્મક, એક વસ્તુ ચોક્કસ જજ્ઞાય છે કે એનો આશય ‘શુદ્ધ સાહિત્યિક’ ન હતો, પણ અનેક બીજા આશય એના સર્જન-વિવેચન પાછળ હતા. વળી કિયા-પ્રતિકિયાના રૂપે આ સાહિત્ય-સર્જન-વિવેચન લખાયું એ સુધારાતરફી હોય કે સુધારાવિરોધી, એમ પણ કહી શકાય કે, એનો પક્ષ કે વિપક્ષ એ જ તત્કાલીન સર્જન અને વિવેચનનું મુખ્ય ચાલકબળ બની રહ્યું એટલે ‘ભર્દંભદ્ર’ જેવી નવલકથા હોય કે એનું આનંદશંકરે કરેલું અવલોકન હોય, ‘સિદ્ધાંત-સાર’ નિબંધ હોય અને એનું કાન્તે કરેલું અવલોકન હોય - એક કિયા તો બીજી પ્રતિકિયા! આજની પરિભાષામાં કહીએ તો - કૃતિકન્દ્રી કે કૃતિલક્ષી નહીં પણ ‘કૃતિ’ માત્ર નિમિત્ત અને એનું કેન્દ્ર બહાર હતું. સુધારાતરફી કે સુધારાવિરોધી બનેની સ્પર્ધા પરસ્પરને પરાસ્ત કરવાની રહેતી ને એના ભાગરૂપે જ જાણે સધળી વ્યૂહરચના ગોઈવાતી એના આધારો પણ હવે તો પ્રાપ્ત છે.

જેમ કે, ‘સિદ્ધાંતસાર’ વિશે આકરી ટીકા કરવાનું ‘કાન્ત’ મન બનાવી બેદ હતા અને આ અંગે તેમણે રમણભાઈ નીલકંઠને પત્ર લખેલો:

જુઓ: 14/9/1882ના રોજ કાન્તે રમણભાઈને લખેલા પત્રનો આ અંશ:

‘For some month past I have been constantly thinking of writing a vigorous attack on વેદાંત... I wish to write either in form of a review of ‘સિદ્ધાંતસાર’ or in the form of letter or in some other form where humour also can come in’ (‘કાન્ત માળા’, પૃ.332)

(છેલ્લા કેટલાક મહિનાથી હું વેદાંત ઉપર આકમણરૂપ લખાણ કરવાનું સતત વિચારી રહ્યો છું... ‘સિદ્ધાંત-સારના અવલોકનરૂપે અથવા પત્રરૂપે અથવા જ્યાં વિનોદ પણ આવી શકે એવા બીજા કશાક સ્વરૂપમાં લખવાની મારી ઈચ્છા છે.) (કેટલાક સાહિત્યિક વિવાદો, ધીરુભાઈ ધકર, પૃ.45 પરથી, આ. રતના, વિશ્કોશ ટ્રસ્ટ, અમદાવાદ)

એ પછી ‘શાનસુધા’માં સાહિત્ય પછી સૌથી વધારે સંખ્યામાં ધર્મના લેખો-192

પ્રસિદ્ધ થયા છે. રમણભાઈ પ્રાર્થનાસમાજ, સમાજસુધારક અને મૂર્તિપૂજાના વિરોધી એકેશ્વરવાદી હતા. ધર્મવિષયક તેમણે પુષ્ટગ લખાણ કરેલું છે. આ લખાણમાંથી મોટા ભાગનું લખાણ ‘જ્ઞાનસુધા’માં પ્રકાશિત થયું છે, જે પછી એના ‘ધર્મ અને સમાજ’-1 (1932) અને ‘ધર્મ અને સમાજ’-2 (1935) એમ બે ખંડોમાં ગ્રંથસ્થ થયું છે. તો ધર્મની સમાજલક્ષ્ણતા અને સમાજ સંદર્ભે ધર્મની પ્રસ્તુતતા આ રીતે ‘ધર્મ’ અને ‘સમાજ’ એવા કેન્દ્રથી બંધાયેલાં ઘણાં લખાણો ‘જ્ઞાનસુધા’માં સ્થાન પામે છે.

રમણભાઈ નીલકંઠ જ્ઞાનમીમાંસા, તત્ત્વમીમાંસા, નીતિમીમાંસા અને ધર્મમીમાંસા એમ ચાર શાખાઓની ગતિવિધિની ચર્ચા આ નિભિતે કરી છે.

- જ્ઞાનમીમાંસા અંતર્ગત તાર્કિકતાનો સ્વીકાર, કાલ્પનિકનો અસ્વીકાર, બુદ્ધિવાદનો સ્વીકાર - અહીંની ઊંડી ચર્ચાઓમાં છે.
- તત્ત્વમીમાંસા અંતર્ગત ઈશ્વરનું સ્વરૂપ, જગતનો કર્તા - ઈશ્વર, સૃષ્ટિ-સંસાર, જીવાત્માનું સ્વરૂપ, મોક્ષ, વિચાર વગેરેની ચર્ચા કરે છે.
- જીતિમીમાંસામાં જાતિ ઉત્પત્તિ, સદાચારણ, સદગુણ, સત્ય, પરોપકાર, ન્યાય, પાપ આદિ મૂળભૂત બાબતે ચર્ચાઓ છે.
- ધર્મમીમાંસા અંતર્ગત કર્મ અને વિજ્ઞાન, ધર્મ અને તત્ત્વજ્ઞાન, ધાર્મિક જીવન, પ્રાર્થનાનું મહત્વ વગેરે બાબતોની ચર્ચા છે.

‘જ્ઞાનસુધા’નાં ધર્મવિષયક મોટા ભાગનાં લખાણો રમણભાઈ નીલકંઠનાં છે પણ આ ઉપરાત નરસિંહચાવ ભોળાનાથ, રઘુનાથ મોરારજી, બાળાસાહેબ ભોળાનાથ, વિદ્યાગૌરી નીલકંઠ, મધુઘોષ (દેસાઈ ઠકોરલાલ હ.), ન્યા.મુ. રાન્ડે, જગજીવન દયાળજી મોટી આદિનાં ઘણાં ધર્મવિષયક લખાણો અહીં મળે છે. તો ધર્મસંસ્થા અહેવાલો, પ્રાર્થનાસમાજના વાણિકોત્સવની વિગતો દર વર્ષના ડિસેમ્બરમાં આપવામાં આવતી.

સમાજસુધારો-સંસારસુધારો એ આ યુગનો દેશમંત્ર હતો. ‘જ્ઞાનસુધા’માં ‘સમાજ’વિષયક ખાસ તો સમાજસુધારા વિષય અંતર્ગત મૂડી શકાય એવા ઘણા લેખો પ્રસિદ્ધ થયા છે.

‘સંસારસુધારાની પદ્ધતિ’ - રમણભાઈ નીલકંઠ, ‘કૌટુંબિક જીવન’, ‘વહેમ’, ‘વહેમખંડન’, ‘વિધવાવિચાર’, ‘હિન્દુ અભણા’, ‘હુનર-કોશલ્ય’ વગેરે અનેકવિધ વિષયોની છણાવટ અહીં થઈ છે. તો સમાજસુધારાની સંસ્થાઓની પ્રવૃત્તિઓ-પરિષદ્ધના અહેવાલો - પ્રાર્થનાસમાજ, બ્રહ્મસમાજ, ઈન્ડિયન નેશનલ સોશિયલ કોન્ફરન્સ, પ્રાંતિક સંસારસુધારા-સમાજ વગેરેના અહેવાલો અહીં સ્થાન પામ્યા છે. ‘સંસારસુધારો’ની દિશામાં આ પત્રનું મહત્વનું યોગદાન છે.

તો માત્ર સાહિત્ય, ધર્મ કે સમાજ નહિ, વ્યક્તિવિશેષના મૃત્યુ નિમિત્તે લખાયેલી શ્રદ્ધાંજલિ-રૂપે આવેલા લેખો કે સમગ્ર સમાજના પ્રતિનિધિઓના અવસ્થાન નિમિત્તે એમનાં કાર્યોની નોંધ લઈને અપાયેલી શ્રદ્ધાંજલિના લેખો – અહીં 36 જોટલા મળે છે તેમાંના મોટા ભાગના રમણભાઈ નીલકંઠ દ્વારા લખાયેલા છે. જ્યાં એક બાજુ મહારાણી વિકટોરિયાના પૌત્ર પ્રિન્સ આલ્બર્ટ રવિક, જાપાનના રાજા મુટ્રસુહિદ્રો, શાહ એડવર્ડ, પ્રિન્સ હેન્રી ઓફ બ્રેનવર્ગ – એમ વિવિધ મહાનુભાવોને અંજલિ છે તો બીજી બાજુ ગોવિંદ રાનકે, ચિન્તામણિ નારાયણ ભણુ, વામન અબ્બાજી મોડક, ગોપાલ કૃષ્ણ ગોખલે જેવા ભારતના જ્યાત મહાનુભાવો અને ગુજરાતના મણિલાલ નભુભાઈ, રણાંદ્રલાલ છોટલાલ, નરસિંહરાવ દિવેટિયા, કેશવ હ. ધ્રુવ, લાલશંકર ઉમિયાશંકર, મનસુખરામ મૂ. નિપાઠી, શેઠ વલ્લભલાલ પોપટ આદિ જે-તે ક્ષેત્રના મોભીઓને ઉચિત અંજલિ આપી છે જે આમ તો ‘સમાજ’વિષયક લેખોનો જ એક વિભાગ ગણાય.

તો, રમણભાઈનું જાગર્તિક ઘટના અંગે કેવું તો ધ્યાન હતું એનો દાખલો ‘યાઈટેનિક’ આગબોટનું હૂબું – એ વિશે નોંધ લઈ એને વિશે ‘પ્રાર્થનાસમાજ’માં ભાષ્યક કરે છે એ ઘટનાથી આવે છે.

તો અહીં જાહેરભાર રસશાસ્ત્ર – [Esthetics of Advertisement] જેવા નવા વિષય પર પણ નોંધ જોવા મળે છે.

કુલ મળી – આ બધી વિગતોનો સરવાળો એટલે રમણભાઈનું સંપાદન કાર્ય: સમગ્ર જીવન પ્રાર્થનાસમાજના ધર્મસિદ્ધાંતનું સમર્થન કરી મૂર્તિપૂજા, વહેમ, અજ્ઞાનનો સતત વિરોધ કર્યો. આ નિમિત્તે ‘વહેમખંડન’, ‘પ્રત’ જેવી લેખમાળાઓ, ‘ભર્દંભદ’ જેવી હાસ્યનવલનું નિમિત્ત – આટલું જ હોત તો પણ એ કાંઈ ઓછું છે?

સંદર્ભસૂચિ

- આનંદશંકર ધ્રુવ, ‘સાહિત્યવિચાર’, પૃ. 315 (‘ભાઈ રમણભાઈનો દેહ પડ્યો! ગુજરાતને ગઈ સહીમાં અને આ સહીમાં કાલની અનેક કીમતી મ્હોરાં ખોયાં છે, પણ આવી ખોટ કદી અનુભવી નથી.... ગુજરાતે એવો સકલપુરુષ, એની સ્મરણશક્તિ પહોંચે છે ત્યાં સુધી, કદી જોયો નથી’)
- ‘એકલો જાને રે... ગુજરાતના નીલકંઠ પરિવારની કથા’ - શૈલજા કાલેલકર-પરીખ, અક્ષરા પ્રકાશન, અમદાવાદ 2013
- જુઓ – ‘રમણભાઈ નીલકંઠ’ – (પૃ. 28) ડૉ. બિપિન જવેરી, 12માં ગુજરાત ક્રીકેજનો વહીવટ સરકારને સોંપવામાં આવ્યો. સરકારી નોકર બનવાથી એ

કોલેજના પ્રોફેસર આનંદશંકર ધ્રુવને પોતાનું ‘વસંત’ માસિક બંધ કરવાનો પ્રસ્તંગ આવ્યો. તેમને આ વિપત્તિમાંથી છોડવવા રમણભાઈએ ‘વસંત’ના તંત્રી તરીકે પોતાનું નામ મૂકવાનું કબૂલ કર્યું અને ‘વસંત’નો આષાઢ 1868નો અંક આ કાપલી સાથે બહાર પાડ્યો: ‘આનંદશંકર બાપુભાઈ ધ્રુવ બંધ થયા છે, અને એ કામ રા. રમણભાઈ મહીપત્રરામ નીલકંઠ – એમણે સ્વીકાર્યું છે, માટે આ અંકના પૂંઠ ઉપર તંત્રી તરીકે પ્રો. આનંદશંકર ને બદલે રા.બ. રમણભાઈનું નામ વાંચવું ‘વસંત’ નિયમિત રીતે પ્રસ્તિક્ષ થયા કરશે. – વ્યવસ્થાપક.’ જોકે રમણભાઈએ તંત્રી તરીકે પોતાનું નામ મૂકવા સ્વીકાર્યું... (પણ) ‘વસંત’ના સંપાદનમાં બહુ ભાગ નથી લીધો.

4. એજન, પૃ. 102
5. ધકર ધીરુભાઈ, ‘જ્ઞાનસુધા’ – સ્વાધ્યાય અને સૂચિ, આ. ડિસેમ્બર – 1987, પ્ર. ગુજરાત સાહિત્ય અકાદમી, ગાંધીનગર
6. ભગત નિરંજન, ‘નરસિંહથી નહાનાલાલ’. પૃ. 152, આ. 2018, પ્ર. ગુજરાત ગ્રંથરત્ન કાર્યલય, અમદાવાદ
7. મહેતા હસ્તિ, ‘સાહિત્યિક સામયિકો’, પૃ. 68, આ. મે, 2012, પ્ર. રન્નાટે પ્રકાશન, અમદાવાદ
8. ધ્રુવ આનંદશંકર, ‘દિંદર્શન’, પૃ. 254-65, જુઓ: ‘ભર્દંભર’ના પાત્રમાં આરોપણ, ભાષણ, વ્યસન, દંબ આદિ દોષોનું સુધારકોમાં આરોપણ કર્યું છે તેમજ તે ગ્રંથને સુધારાને સબળ કરવાને બદલે એના માર્ગમાં એક વિક્ષેપ તરીકે દર્શાવે છે.
9. વિવેચક – દ્વિદેશી મ.ના સમગ્ર શ્રેણી-3, પૃ. 480થી 85



કુટુંબકથા નિમિત્તે ભારતીય મૂલ્યોની શોધ કરતી પ્રશ્નાએ ઉદ્દિયા નવલકથા : ‘માટીનો માનવી’

ડૉ. અરવિંદ વાઘેલા

સી.યુ. શાહ આટ્રેસ કોલેજ, અમદાવાદ

ભારતના સત્ત્વશીલ પ્રાંતીય સાહિત્યને સાચા અર્થમાં ભારતીય સાહિત્ય બનાવવા માટે સતત પ્રયત્નશીલ રહેલ સાહિત્ય અકાદમી, ભારતીય ભાષાઓની ઉત્તમ કૃતિઓને વિવિધ ભાષામાં અનુવાદિત કરાવવાની પ્રશંસનાય પ્રવૃત્તિ કરે છે. ઉદ્દિયા ભાષાની આ સીમાચિહ્નનું કૃતિને અકાદમીએ પસંદ કરી ભારતની વિવિધ ભાષાઓના ભાવકો સુધી પહોંચાડવાનું પડકારજનક કાર્ય કર્યું છે. આ કૃતિને ગુજરાતી ભાષામાં અનુવાદિત કરવાનો પડકાર ઉશ્વવાનું કામ શ્રીમતી ઉત્તરા દેસાઈ અને શ્રી નારાયણ દેસાઈએ કર્યું છે. આ કાર્ય પાછળ શ્રી ઉમાશંકર જોશીની પ્રેરણા પણ મહત્વનું પરિબળ બન્યું. અનુવાદ આમ તો ભારે કપડું કામ છે પરંતુ અનુવાદકો કહે છે તેમ – ‘અમારા પૈકી એકની માતૃભાષા ઓડિયા અને બીજાની ગુજરાતી છે, એટલે એક અનુવાદકને જે સગવડ ન મળે તે અમને મળી છે.’ (માટીનો માનવી, પૃ.5) અને એટલે જ તો ‘માટીનો માનવી’ આપણી પોતીકી કૃતિ લાગે છે. સુરતી બોલીની આધી છાંટ ધરાવતો અનુવાદ કૃતિને ગુજરાતીપણું આપે છે. મૂળકૃતિ પ્રત્યેની વજાદારી અનુવાદમાં જળવાઈ રહે અને છાંટ પોતાપણનો અહેસાસ થતો રહે છે. કદાચ કૃતિના કથાવસ્તુમાં પડેલ પેલાં સનાતન ભારતીય મૂલ્યો એના માટે કારણભૂત હશે. ‘માટીનો માનવી’ એ શીર્ષકથી ગુજરાતીમાં અનુષ્ટાનિત કૃતિ, ‘માટીર મણિષ’ એ મૂળ તો ઉદ્દિયા ભાષાના મૂર્ધન્ય સાહિત્યકાર શ્રી કાલિન્દીચરણ પાણિગ્રહીની નોંધપાત્ર નવલકથા છે. મૂળે નવલકથાકાર શ્રી કાલિન્દીચરણ પાણિગ્રહીની અન્ય જાણીતી નવલકથાઓમાં ‘લુહાર મણિષ’ અને ‘અમરચિત્ર’ છે. નવલકથા ઉપરાંત કવિતા, નિબંધ અને નવલિકાના સ્વરૂપને તેમને સફળતાપૂર્વક જોડ્યું છે. ‘સાગરિકા’, ‘શેષરશિમ’ અને ‘રાશિફલ’ એમના વાર્તાસંગ્રહો છે. ‘માટીર મણિષ’ એમની અત્યંત લોકપ્રિય અને અકાદમી એવોઈ વિજેતા કૃતિ છે.

ભારતીય કૃષિસંસ્કૃતિ અને રામાયણના કથાબીજ પર રચાયેલી જનપદ

વિશેષની આ કૃતિ ધરતીનો પોપડો ફાડીને સ્વયંભુ પ્રગટી હોય એમ લાગે છે. ઉદ્ઘાટા ભાષામાં ગ્રામીણ જીવનને આવેખતી નવલકથાઓમાં ઉદ્ઘાટાના ટોમસ હાર્ડી ગણાત્મક ફીલર મોહન સેનાપતિ પાસેથી 1901માં કૃષિસંસ્કૃતિના કથાબીજ પર આધારિત ‘ઈ માણ આઠ ગુંડ’ નામની પ્રશિષ્ટ કૃતિ મળે છે. ઉદ્ઘાટા નવલકથાના બીજા એક મહાન સર્જક ગોપીનાથ મહંતી ‘અમૃતર સંતાન’ નામની એક આતિવિશેષ, એક જનપદવિશેષની અમર કૃતિ આપે છે. કાન્દુચરણ મહંતીની ‘શાસ્ત્રિ’(સાજા) ઉદ્ઘાટા ભાષાની કલાત્મક નવલકથા ગણાય છે. ઉદ્ઘાટા નવલકથાની આવી સમૃદ્ધ પરંપરામાં શ્રી કાલિન્દીચરણ પાણિગ્રહી પોતાની આગવી લાક્ષણિક છાપ છોડી જતા સર્જક છે.

‘માટીનો માનવી’ ચુસ્ત રચનાસંવિધાન ધરાવતી એક નાનકડી કથા છે. તદ્દન સામાન્ય લાગતી કૌટુંબિક કથાની પશ્ચાદ્ભૂત સર્જક ઓરિસ્સાના કૃષિ આધારિત ગ્રામજીવનના વાસ્તવિક અને વૈવિધ્યસભર રંગો પ્રગટાવે છે. સદીઓથી ભારતીય સંસ્કૃતિનાં મૂલ્યોને સાચવીને બેઠેલાં ગામડાં અને ગ્રામીણોના માનવીય ગુણોનું તેમજ ઓરિસ્સાના જનપદનું સૂક્ષ્મ અને વિગતસભર આવેખન કરતાં લેખક કથાના પોતમાં કુટુંબકથાના તાણાવાણા ગુંથતા જાય છે. ભારતીય સામાજિક પરંપરામાં ચાલી આવતી સંયુક્ત કુટુંબપ્રથા અને તેમાં ઈધરણું, વિધનસંતોષીઓ દ્વારા નખાતાં રોડાંની વાતને લેખક કમિક રીતે ભાવકો સમક્ષ ઉઘાડતા જાય છે.

શ્રી કાલિન્દીચરણ પાણિગ્રહી નવલકથાનો મંચ ઓરિસ્સાના કટક જિલ્લાના પધાનપાડા નામના નાનકડા ગામમાં ગોઠવે છે. ગામમાં શામુ પધાન નામનો એક ભલો સજજન ખેડૂત રહે છે. આજુબાજુનાં ગામડાંઓમાં એની સારી શાખ છે. એનું ઝૂંપડું – ‘ધરના મોટા કદને લીધે નહિ પણ મુરબ્બીની માણસાઈને લીધે – બધા લોકોમાં જાણીતું હતું’, – ‘ભલે એના ધરમાં પથ્થરનાં પગથિયાં ન હોય, ભલે એની ભીતો ઈટોની બનેલી ન હોય, માટીની ભીત અને પરાળનું છાપડું.’ માટીનો માનવી, પૃ. 10) વારંવાર ભાંગતું અને ફરી પાછું ઊતું થતું આ ધર, જાણે હજારો વર્ષોથી વિદેશી આકમણો સામે ખંડિત થતી ને પાણી જીણોદ્વાર પામતી ભારતીય સંસ્કૃતિ! રામાયણા કથાબીજ પર રચાયેલી આ કૃતિમાં લેખક અહિસા, સહિષ્ણુતા, ત્યાગ અને ભાતૃપ્રેમ જીવાં સનાતન ભારતીય મૂલ્યોનું આવેખન સાદી ભાષામાં સરળ કલ્પન, પ્રતીકો અને મિથના પ્રયોગથી કરે છે.

શામુ પધાન અને શામુ પત્ની રામીની સેવા અને આતિથ્યભાવના જુઓ, ‘ગામમાં ક્રોઈ જોગી બિખારી આવે તો લોકો એને શામુ પધાનનું ધર ચીંધી આપતા..’ (માટીનો માનવી, પૃ.10) પરોપકારી અને મદદ માટે સદા ઉત્સુક શામુ

પદ્ધાન, ગામમાં થતી ઝડપના સમાધાન માટે, કોઈ સાજુ માંહું હોય તો દવાદારુ માટે, વળની ખરીદારીમાં, ભજાતર કે ભાગવતપાઠમાં મદદ માટે હંમેશા તૈયાર રહેતો. આપત્તિના સમયમાં કોઈ તેડે કે ન તેડે તે સામેથી મદદ માટે દોડી જતો અને લોકોને કહેતો પણ ખરો કે, ‘કેમ અલ્યા! શામલો શું મારી પરવાર્યો?’ (માટીનો માનવી, પૃ. 11) મારામારી કે ઝડપના પ્રસંગે સમાધાન માટે વિનમ્ર પ્રયાસ કરતો, કોઈની દાઢીમાં હાથ ઘાલતો, કોઈના પગ પકડતો પણ કોઈ કરેરી ન થવા હેતો. ભારતીય ગ્રામીણોના દિલમાં આ ગુણો જ તો સામાજિક ઐક્યને ટકાવી રાખ્યું છે.

શામુની પત્ની રામી, ભારતીય ગ્રામીણ નારીનું પ્રતિનિધિત્વ કરતું પાત્ર છે. ઘરરખ્યું ગૃહિણી હોવાની સાથે એ ખેતીવાઈમાં મદદરૂપ થતી અને પત્તિના પગલે ચાલી પરોપકારનું કર્ય પણ કરતી. જરૂરિયાતવાળાને મદદ પણ કરતી અને કહેતી પણ ખરી કે, ‘કેમ અલી પોરી ઘરમાં મારે ભલેને કાંઈની હોય, તેથી શું થિયું? તારાં પોયરાં સામે જોઉં તો મારા પોયરાં સામું કો’ક તો જોશો કે નહિ?’ (માટીનો માનવી, પૃ. 12) ગામની સ્ત્રીઓ સુધ્યાં તેનાં વખાડા કરતી – ‘પદ્ધાનને ત્યાંની ડોશી ધન્ય છે.’ શામુની પત્ની રામી પરંપરાગત સાસુ પણ છે, બંને વહુઓ પર પ્રભાવશાળી કડબ ધરાવે છે તો બંનેને પ્રેમ પણ એરલો જ કરે છે. બંને વહુઓને હળીમળી રહેવા સમજાવે છે અને જો ઝડપો થાય તો દુઃખી થઈ જાય છે.

શામુ દંપતીને બે પુત્રો હતા, ડોશીએ દેવદેવીઓ પૂજાને, વ્રત ઉપવાસ કરીને પ્રાપ્ત કરેલા. અહીં ભારતીય નારીનો પરંપરાગત માન્યતાઓ પ્રત્યેનો વિશ્વાસ, આસ્થા-શ્રદ્ધા જોઈ શકાય છે. પુત્રવત્સલ ડોશી બંને દીકરાઓને વહાલથી કે પછી બાધા-આખરીને કારણો, તેઓના નામથી બોલાવવાને બદલે બરજૂને ‘ઉચ્છેદિયો’ અને છકોડીને ‘અવળયંડો’ કહુને બોલાવતાં.

મોટો બરજૂ ગામની ચાટશાળામાં ભણીને ગુમાસ્તાનું કામ કરે છે. બરજૂ સંવેદનશરીલ, વિચારશરીલ અને આશાંકિત પુત્ર છે. જ્યારે નાનો છકોડી છેલબયાઉ, મેળાઓમાં ફરવાનો શોખીન અને શહેરની જકજમાળથી આકષાયેલો હતો. જેથી ઘણી વાર એ શહેરમાં નોકરીએ જવા દેવા પિતાને વિનંતી કરતો, પરંતુ ધરતીપુત્ર શામુ એને ઠપકો આપતો કે, ‘કેમ રે, ગામની મારી કાંઈ ગંધાઈ ઉઠી કે શું?’ (માટીનો માનવી, પૃ. 18) અહીં શામુની, એક કૃષકની પોતાની ભૂમિ સાથે જોડયેલા રહેવાની મમત અને પ્રેમ દેખાય છે. ખેડૂત હોવાનું ગૌરવ કરતો શામુ, મોટા પુત્ર બરજૂને પણ નોકરી છોડી દેવા સમજાવતાં કહે છે કે, ‘આપણે તો નાના માણસ, આપણાને એ ઠાડ વળી શાના? ભોંય જેડવામાં તો બાપદાદાની સાત પેઢી વીતી

ગઈ, હળ વાકું મૂકી, કલમ જાલી આપજો વળી કયા સ્વર્ગ જવાના?" (માટીનો માનવી, પૃ. 22) અહીં લેખકે કૃષિ અને ગ્રામસંસ્કૃતિનો મહિમા કર્યો છે. પિતા આ સંસ્કાર પુત્રોને વારસારૂપે આપે છે. પત્નીના મૃત્યુ પછી શામુને પોતાનો અંતકળ પણ નજીક જણાતાં, પોતાના અનુભવનું જ્ઞાન પુત્રોને વારસારૂપે આપતાં કહે છે કે, 'અરે ગંડા! ધન એકટું કરવું એ ગંડપણ છે, કહેવાય છે ને કે, દીકરો યોગ્ય હોય તો ધનસંગ્રહ શા સારુ કરવો?' (માટીનો માનવી, પૃ. 23) શામુ પધાન મૃત્યુ પૂર્વે બંને ભાઈઓને હળીમળીને સાથે રહેવાનો સંદેશ આપે છે, ખાસ કરીને બરજૂને જયેષ્ઠપણાનું ભાન કરાવતાં કહે છે, 'એક વાત યાદ રાખજો તમે બે ભાઈઓ છો, જેતર વચ્ચે પણ ન ઉભી કરવી પડે, એનું ધ્યાન તું જ રાખજો.' (માટીનો માનવી, પૃ. 24) વારસામાં ધર્મ મૂકીને ડેસા મૃત્યુ પામ્યા, પિતાની અંતિમકિયા પછી બરજૂ ઘર અને જેતરની સંઘળી જવાબદારી ઉશ્વા લઈ પિતાની આજ્ઞાનું પાલન કરે છે. પરંતુ વાસણ હોય તો ખખડે તો ખરા, એમ દેરાણી-જેશણીના ઝઘડા શરૂ થાય છે. બરજૂની પત્ની (હારાની મા) અને છકોડીની પત્ની નેત્રમણિ વચ્ચે ઘરકામ બાબતે તેમજ ઈર્ષા અને અભિમાનને કારણે ઝઘડા વધતા જાય છે. નાની નાની વાતો મોટા ઝઘડાનું સ્વરૂપ ધારણ કરવા લાગી... ઓરિસ્સામાં કોઈને ભૂલથી પગ લાગી જાય તો 'વિષ્ણુ' કહી પગે લાગવાનો રિવાજ છે. એક વાર જેશણીને દેરાણીનો પગ અડકી જાય છે, નેત્રમણિ 'વિષ્ણુ' કહીને જાય છે પરંતુ હારાની મા ગુર્સામાં એની સાથે ઝઘડો કરે છે - 'કેમ અલી? માણસ દેખાતાં નથી તે રસ્તે ચાલતાં લાત ઠોકી જાય છે.' (માટીનો માનવી, પૃ. 34) છકોડી પત્નીને ઉશ્કેરે છે. તે પણ સામું બોલવા માંડે છે, ...મેં તો કાંઈ રાંડનું ખાંધું છે કે મને આટ આટથું સંભળાવી જાય!' (માટીનો માનવી, પૃ. 20) છકોડી પણ પત્નીનો પક્ષ લઈ ભાભીને ગાળો ભાંડી મારવા દોડે છે. ઈર્ષા, અદેખાઈને કારણે સંયુક્ત કુટુંબમાં વૈમનસ્યની આગ ભભૂકી ઉઠે છે. બરજૂની પત્ની સ્વભાવે કંકાસિયણ હતી, જેતીનું કામ કરી થાકેલા બરજૂ પાસે દિયર-દેરાણીની ફરિયાદ કરતી. અહીં ઘરકામ, સહિયારી મિલકત, કુટુંબનો આણિક બોજો વગેરે સંયુક્ત કુટુંબમાં ઝઘડાનું, કંકાસનું કારણ બને છે. સાસુ-સસરાના મૃત્યુ પછી દેરાણી-જેશણીના સંબંધોમાં વધુ ખયાલ આવે છે, એકના મોદનો બોલ બીજી સાંખી શકતી નથી, બોલે બોલે તડ ને ફડ જવાબ મળે છે. બંને વચ્ચે સહેજ પણ સુમેળ નથી. સ્વભાવ અને વિચારની બિન્નતાને કારણે વૈમનસ્ય ઊભું થાય છે. સંયુક્ત કુટુંબ માટે વિઘાતક એવી આ પરિણિતિનું યથાર્થ દર્શાન બંને વહુઓ વચ્ચેના ઝઘડામાં જોઈ શકાય છે.

ક્રૈંટિનિક ઝડપનું એક કારણ નિઃસંતાનપણું છે. મોટી વહુને ચાર સંતાન છે જ્યારે નાની નિઃસંતાન છે. આ વેદનાને કારણે નેત્રમણિ મોટીનાં સંતાનોને નહીં રત કરે છે. બરજૂ પધાનની દીકરીઓ હારા, સોનાનાં લગ્નો વખતે નેત્રમણિ રિસામણાં લે છે એટલું જ નહિ છકોડીને પણ લગ્નમાં જતો અટકાવે છે, ‘જોજે ભાઈ-ભાભીનો લાડકો થવા જઈશ તો મારી પાસે ફરકવા નહિ દઉં.’ (માટીનો માનવી, પૃ. 37) ઘરમાં લાગેલી આ આગમાં હરિમિશ્ર જેવા સમાજના વિનસંતોષીઓ ધી નાખે છે. લગ્નનો હિસાબ, પહેરમણી બાબતે, છકોડી-નેત્રમણિની કાનભંભેરણી કરે છે, પરિણામે સોનાનાં લગ્ન ટાણે નેત્રમણિ જેધાણી સાથે ઝડપો કરી ગાળો દે છે, ‘બધા મૌંની, દાંજ્યા મૌંની, રંડ તારું નખ્યોં જાય, તારી પોરિયોના ચૂડલા ભાંગો.’ (માટીનો માનવી, પૃ. 64) બરજૂની પત્ની પણ સામે ઝડપો કરે છે પણ બરજૂ પત્નીની આ ભૂલનું પ્રાયશીત્ત કરે છે. જેનાથી એનું હૃદયપરિવર્તન થાય છે.

ઘરનાં બંને દંપતીઓના સ્વભાવ અને વિચારોમાં આભજમીનનો તફાવત છે. બરજૂ પત્નીને ઝડપથી દૂર રહેવા સમજાવે છે, મોટા હોવાને નાતે સમજદારી દર્શાવવા કહે છે. બરજૂ મૌન અને ઉપવાસના ગાંધીચીધ્યા માર્ગે, અથાક પ્રયત્નો પછી હારાની માનું હૃદયપરિવર્તન કરાવવામાં સફળ રહે છે. ‘હારાની માના દિવલમાંના દેવે શેતાનને હરાવી દીધો.’ (માટીનો માનવી, પૃ. 70) અસદ્દ પર સદ્ધનો વિજય થાય છે. બરજૂના સત્ય પ્રતિના વિશ્વાસનો વિજય થાય છે. બીજી તરફ કાચા કાનનો છકોડી પત્નીનો ગુલામ બની જાય છે. નેત્રમણિ, છકોડીને વારંવાર અપમાનિત કરે છે અને ભાઈની વિરુદ્ધ ઉશ્કેરે છે. નેત્રમણિને હરિમિશ્રનો સાથ મળે છે. હરિમિશ્ર બ્રાહ્મણ હોવા છતાં ચાંડાળ કરતાંય હીન પ્રકૃતિનો છે. બરજૂની લોકપ્રિયતાની ઈર્ઝ્યા કરતો મિશ્ર છકોડીને પોતાનો હથો બનાવે છે. છકોડીની જુદા થવાની વાતથી તેને ખૂબ હુંબ થાય છે. બરજૂ પોતાની પત્નીના હૃદયને તો ઉપવાસ અને સત્યાગ્રહથી બદલે છે પણ નાના ભાઈને ન સમજાવી શકવાનું એને થારે હુંબ થાય છે. તુટતા કુટુંબને બચાવવા મથતો બરજૂ ઘસાતી જતી ભારતીય સંસ્કૃતિનો પ્રતિનિધિ છે. કોઈ પણ ભોગે ઘરના ભાગલા થતા અટકાવવા એ કટિબદ્ધ છે.

ધર્મ પર અખૂટ શ્રદ્ધા ધરાવતો આ ભારતીય ગ્રામીણ જેડૂત બરજૂ, અધર્મ અને અત્યાચાર સામે લડવા પ્રાર્થના કરે છે કે, ‘હે ધર્મ, મને બળ આપો, હિંમત આપો, જ્યાંય અધર્મ છે, પાપ છે, ત્યાં હું સામો થાઉં, ખાપી જાઉં, અધર્મ અને પાપનો ક્ષય કરવા મારાં હાડકાંનાં હથિયાર થાઓ.’ (માટીનો માનવી, પૃ. 87) સત્ય અને અહિંસાનાં ગાંધીમૂલ્યોથી પ્રભાવિત બરજૂ ગરીબ અને શ્રમિકોનો હમદર્દ, મિત્ર

બનીને ઊભો રહે છે. ખેડૂત ભાઈઓને વિશ્વાસ અપાવતાં કહે છે કે, ‘આપણે નકમા નથી ભાઈઓ કઠણ ખડક પર ફણગો ઉગાડી શકીએ તેવા આપણે ખેડૂત- મજૂરો છીએ!’ (માટીનો માનવી, પૃ. 78) શોષિત પાડિત લોકોને એકતા અને અહિસાના પાઠ શીખવી બરજૂ લોકનેતા બને છે. દુનિયાના શક્તિશાળી, ધનવાન લોકોના પિડમાં દયા ધર્મ વસે એ માટે પ્રાર્થના કરતાં કહે છે કે, ‘હે ધર્મ! હે સત્ય! તેમને તમે માનવ બનાવો... માનવને માનવ તરીકે પિછાને, સ્નેહ કરે, આદર કરે, નાનો મોટાને અદેખાઈની નજરે ન જુએ, એ મોટો થથો તેથી તેનું અમંગળ ન ઠાંછો.’ (માટીનો માનવી, પૃ. 87) બરજૂના પાત્રનો આ સ્વથી સમાચિ સુધીનો ચેતોવિસ્તાર ભારતીય સંસ્કૃતિના વિશ્વબંધુત્વ અને માનવતાવાદનો પુરસ્કાર છે.

હરિમિશ્ર અને નેત્રમણિ સતત છકોડીને જુદા થવાની દુષ્પ્રેરણા આપે છે, પરંતુ બરજૂ દંપતી મૌન રહી સહિષ્ણુતા દાખવે છે. પત્નીનાં મહેષાંયોષાથી કંયાળેલો છકોડી આખરે હરિમિશ્રની મદદથી મોટાભાઈ સમક્ષ મિલકતના ભાગ પાડવાની રજૂઆત કરે છે. બરજૂને ઘરની વાતમાં કોઈ ત્રાહિતની દખલગીરી મંજૂર નથી. ઘરના જવાબદાર વ્યક્તિ તરીકે, પિતાની આજ્ઞાનું પાલન કરનાર પુત્ર તરીકે બરજૂનું ઉદાત્ત વ્યક્તિત્વ અહીં પ્રગટે છે. મિલકતના ભાગ કરવાને બદલે પિતાની ઠથાને માન આપવાનું પસંદ કરે છે. જુઓ, બરજૂ કહે છે કે, ‘મિલકત વહેંચાશે નહિ. બધું તારું થયું, ઘરબાર, ખેતર, બગીચો, ઢોરઢંખર જે કાંઈ છે તે બધું જ. હું કાલે છોકરાંઓને લઈને ઘર છોડી જતો રહું છું.’ (માટીનો માનવી, પૃ. 95) સર્વસ્વના ત્યાગનો બરજૂનો આ નિર્ણય છકોડીને આશર્થચકિત કરી દે છે. છકોડીના હંદયના ઊંડાણમાંથી એક શબ્દ આવે છે, ‘ના.’ છકોડીનું આ ઉચ્ચારણ સર્ચાઈભર્યું છે, ન એમાં નેત્રમણિની નફરત કે હરિમિશ્રની ચાલાકી ભળી હતી. બરજૂના આ નિર્ણયને નેત્રમણિ હળવી મજાક તરીકે જુઓ છે, એટલું જ નહિ પણ છકોડીને ધમકાવતાં કહે છે કે, ‘કહેવું’તું ને કે જવું હોય તો જા ને!... કેટલા ઘરબાર છોડીને જતા રહ્યા છે, તે આ નાસી જવાના હતા?’ (માટીનો માનવી, પૃ. 96)

બરજૂ અડગ મનનો માણસ છે. બીજે દિવસે છકોડીને ખેતર ક્યારી, ઢોરઢંખર, બિયારણ વગેરેની સમજ આપી, પિતાની આજ્ઞા હતી મિલકતના ભાગ ન પાડવાની, એનું પાલન કરતાં, કંઈ પણ લીધા વિના બરજૂ સપરિવાર ગૃહત્યાગ કરે છે. ગામમાં આ વાત પ્રસરતાં મિત્રો અને ગામલોકો એના પ્રત્યેના પ્રેમને કારણે રોકાઈ જવા વિનંતી કરે છે પણ બરજૂ મક્કમ છે. અશ્વસભર આંખે ગામની વિદાય પામતા બરજૂ માટે એક વૃદ્ધના મુખે ઉચ્ચારાયેલ આ શબ્દો એના સદ્ગુણી વ્યક્તિત્વની

ઓળખ છે, ‘આ ગામમાંથી શું ધરમ છેક જ જતો રહ્યો?’ (માટીનો માનવી, પૃ. 101) બરજૂનો આ ત્યાગ જોઈ ખેતરમાં કામ કરતા મજૂરો પણ રસ્તે આવી પગે લાગે છે. હરિપુરનો ગૌરાંગ સેણ તો નાના બાળકની જેમ હઠ લઈ બરજૂને પોતાને ઘેર લઈ જાય છે. પોતાના ગામ સિવાય આજુબાજુના પંથકમાં પણ બરજૂના સજજન વ્યક્તિત્વની શાખ કેવી છે તેનું આ ઉદાહરણ છે.

બરજૂ પાસેથી બધું સંભાળી લઈ છકોડી હાટ કરવા શહેર જાય છે, ત્યાં પણ એ સતત વિચારતો રહે છે કે, એમ ખરેખર મિલકત છોડીને કોઈ જતું હતો? એક ભાઈ બીજા ભાઈ માટે આટલો મોટો ત્યાગ કરી શકે? લાંબા મનોમંથન પછી એને ઉત્તર પ્રાપ્ત થાય છે, ‘હા, દાખલો છે ખરો! રામ રાજા થયા વિના ભરતને રાજગાડી આપી રાજ્ય છોડીને જતા રહ્યા હતા.’ (માટીનો માનવી, પૃ. 103) ઇતાંએ શંકશીલ છકોડી તો વિચારે છે કે, એ બધી જૂની વાત છે. આજે એવું શક્ય નથી. હાટમાં એને ઉચ્છ્વ ભોઈ નામનો એક વ્યક્તિ સમાચાર આપે છે કે, બરજૂ, બૈરી-છોકરાં સાથે ઘર છોડી જતો રહ્યો છે. આ સંભાળી આભો બની ગયેલો છકોડી નિરાશ થઈ ઘરે પાછો આવે છે. ઘરની નિઃસ્તબ્ધતા એને ઘેરી વળે છે. ભાઈનાં છોકરાં વિનાનું સૂનું આંગણું એને ખાવા ધાતું હોય એવો અહેસાસ થાય છે. ભાઈના જવાથી બેચેન થઈ ઘરમાં આંટા મારે છે. વસ્તુઓ ગોઠવવા કહેતી નેત્રમણિ પર ગુસ્સે થઈ જાય છે, ‘આખો દહાડો કચકચ કેમ કરે છે?’ એ તો ઘર છોડીને ચાલી ગયા છે, કોઈ બધું લઈ થોડું જાય છે?’ (માટીનો માનવી, પૃ. 105) પતિ-પત્ની વચ્ચે બોલાચાલી થાય છે. ભાઈ ઘર છોડી ગયા એ અંગે છકોડી પોતાને દોષી ગણે છે. ત્રણ દિવસ પછી છકોડી ભાઈનું ઘર ખોલી, બધી વસ્તુઓ એમની એમ હોવા છતાં ફંઝોસે છે, જાણે કશું ખોઈ નાખ્યું હોય! છકોડીની નજર એક વસ્તુ પર આવીને અટકે છે – દબાવવાથી ચૂં ચૂં બોલે તેવો રબરનો હંસ. ભત્રીજા-ભત્રીજીઓ માટે પોતે મેળામાંથી લાવેલ એ રમકડાને લઈ છાતીએ ચાંપી વિલાપ કરે છે. ભત્રીજા-ભત્રીજીઓ સાથેની સ્મૃતિઓ એની નજર સામે આવે છે. છકોડી ચોધાર આંસુએ રડે છે. નેત્રમણિ એ જોઈ હસે છે અને ‘બાયલો, ભાઈબેલો થાય છે.’ (માટીનો માનવી, પૃ. 107) કહી એની મજાક ઉડાવે છે. ભાઈના વિયોગમાં દુઃખી છકોડી સાંજે ઓટલે બેસે છે ત્યારે સાધુની વૃદ્ધ મા એને ટપકો આપે છે, ‘હાય, છેલ્લે આવું કર્યું... આ આંગણું કેવું ખરાબ દેખાયું? કોઈનું એ શું બગાડતો હતો?... છે બીજો કોઈ દીકરો એના જેવો આ ગામમાં? પધાન ડેશી હોત તો આવું થાત કે?’ (માટીનો માનવી, પૃ. 107) ડેશીના આ મર્મવચનથી વ્યાકુળ થઈ છકોડી ગાંડાની જેમ ભાઈ

ભાઈ કરતો ઘરમાં દોડે છે, ખાવાનું ભૂલી રડે છે, ઉંઘમાં પણ ભાઈ બબડે છે. નેત્રમહિને પણ કોઈ જવાબ આપતો નથી. પોતાની ભૂલ સમજાતાં જ પશ્ચાત્તાપ કરે છે, છકોડીનું હૃદયપરિવર્તન થાય છે. બીજે દિવસે ભાઈની શોધમાં નીકળેલ છકોડી હરિપુરના ગૌરાંગ સેણના ઓટલે આવી બેસે છે. નાનો દામુ, કાક આવ્યાની ખબર માને આપે છે. બરજુ, ભાઈને ઘરમાં લાવી અહીં આવવાનું કારણ પૂછે છે કે, ‘તું ક્યાં જવાનો અલ્યા?’ જવાબમાં છકોડી, ‘તમે જ્યાં જશો ત્યાં.’ માટીનો માનવી, પૃ. 108) કહેતો મોટા ભાઈને સમપિત થાય છે. બરજુનો ત્યાગ અને સત્યાગહ, અસત્ય અને અસદ્ધનો પરાભવ કરે છે. સંયુક્ત કુટુંબનાં મૂળિયાં આજે પણ ઊંડે મજબૂતાઈથી વિસ્તરી રહ્યાં હોવાની અનુભૂતિ કરાવે છે.

ભારતીય સાંસ્કૃતિક મૂલ્યોને ઉજાગર કરવા સર્જક કાલિન્દીચરણ પાણિગ્રહીએ રામાયણનો સંદર્ભ લઈ સંયુક્ત કુટુંબવ્યવસ્થા અને આતૃભાવનાનું ગૌરવ કર્યું છે. બદલાતા માનવસ્વભાવ અને વર્તમાન પરિસ્થિતિમાં આપણા સમાજમાં, આપણાં નજીકનાં સ્વજનોમાં સ્વાર્થ, દંભ, ઈર્ષા, અદેખાઈ અને કુટિલ કાવાદાવા જેવા દુર્ગુણો પ્રવેશ્યા છે, જે આપણાં સાંસ્કૃતિક મૂલ્યોની જડ પર કદૂરાઘાત કરી રહ્યાં છે. સંયુક્ત કુટુંબવ્યવસ્થા ખતરામાં આવી પડી છે. આધુનિક સમયમાં વિભક્ત કુટુંબવ્યવસ્થાનું પ્રચલન વધવા માંડયું છે. ભૌતિકતાવાદી આ યુગમાં યાંત્રીકરણ અને આધુનિકીકરણની અસર માણસ પર થઈ છે. પ્રેમ, દયા, સહાનુભૂતિ અને સહિષ્ણુતાનાં મૂલ્યો ભૂલીને સ્વકેન્દ્ર બનેલા માણસને માટે લાલભતી ધરતી આ ઉડિયા નવલકથા ભારતીય મૂલ્યોનું સંવર્ધન કરતી નવલકથા છે. ગાંધીનો માનવતાવાદ, માર્ક્સિસ્મ અને ભારતીય આર્દ્ધવાદના સંદર્ભોની વિશાળ શ્રેષ્ઠી કૃતિમાં રજૂ થઈ છે.

‘ઓરિસ્સા રિવ્યુ’ નામના સામયિકમાં જિતેન્દ્ર નારાયણ પટનાયક નોંધે છે કે, ‘The complex plot of ‘Matir manish’ encompasses a wide range of context and theme such as the Gandhian and Marxist ideology, post war social conditions, agrarian culture, rustic life, joint family system and human relationship, it is a poignant story that uphold the human values of moral concern and sacrifice delineates the landscape and tradition of typical Orissan village and present life in its multiple dimensions of good and evil, love and hatred, joy and sorrow.’ (Nov. 2008, પૃ. 67)

માનવી માનવી વર્ચેના સૂક્ષ્મ સંબંધોની મીમાંસા કરતી આ કલાત્મક કૃતિ કૈટુંબિક સંઘર્ષોની પશ્ચાદ્ભૂમાં ઓરિસ્સાના કૃષિ આધ્યારિત ગ્રામીણ જીવનનું જીવંત ચિત્ર રજૂ કરે છે. ચુસ્ત રચનાસંવિધાનના કલાત્મક સૌનંદર્ય સાથે કહેવાયેલી આ સાદી કુટુંબકથાની પાછળ આખો ભારતીય સમાજ જીવંત આલેખન પામ્યો છે.

ભારતની મારીમાંથી પેદા થયેલો એક એક ભારતીય ‘મારીનો માનવી’ છે.

સંદર્ભ

- મારીનો માનવી
- Orissa Review
- ભારતીય નવવલકથા-૧, રમણલાલ જોશી
- આધુનિક ભારતીય સાહિત્ય (ઉડિયા સાહિત્ય), અનુ. જ્યંત બક્ષી
- ઓડિયા સાહિત્ય દર્શન, અનુ. વર્ષા દાસ



‘યુગવંદના’ ઝવેરચંદ મેઘાણી વિશે વિવેચકો

પ્રો. નિર્મલા જોશી

આસિસ્ટન્ટ પ્રોફેસર, શ્રી ઉમિયા આટર્સ એન્ડ કોમર્સ કોલેજ, સોલા

મેઘાણીના અત્ય આયુષ્માં સાહિત્યિક કારડિઈ તો માત્ર પચીસ વર્ષની જ. ૮૮ જેટલાં પુસ્તકો આ અઢી દાયકમાં આય્યાં. અવર્ધીનિયુગના સમગ્ર તટ પર એક મેઘાણી જ એવા કવિ થયા જેમણે ‘યુગકવિ’ અને ‘રાષ્ટ્રીય શાયર’નાં બિરુદ્ધો ક્રમાવી આપે તેવા જનતાના ઉત્તમ કવિ તરીકે કર્તવ્ય બજાવ્યું હતું.

‘યુગવંદના’ ઝવેરચંદ મેઘાણીનો ત્રીજો કાવ્યસંગ્રહ છે. જે ઈ.સ. ૧૯૭૫માં બહાર પડ્યો. મેઘાણીના અન્ય કાવ્યસંગ્રહો ‘સિંહુડો’ (૧૯૭૦), ‘વેણીનાં ફૂલ’ (૧૯૭૨), ‘કિલ્લોલ’ (૧૯૭૩), ‘એકતારો’ (૧૯૮૦), ‘બાપુનાં પારણાં’ (૧૯૮૩), ‘રવીન્દ્ર-વીજા’ (૧૯૮૪) છે.

યુગવંદના વિશે

‘યુગવંદના’ નામ સંદર્ભે મેઘાણી લખે છે, ““યુગવંદના” નામ એ અર્થમાં અપાવ્યું છે કે કોઈ ચિરંજીવી કાવ્યતત્ત્વથી પ્રેરાયેલ નહીં પણ ચાલુ કાળનાં જ બળોએ સ્કુરાવેલાં સમયજીવી ગીતો આમાં પ્રધાનસ્થાને છે, એટલે આ યુગને જ અર્પણ થયેલ અંજલિથી અધિક મહિમાને એ ન માગી શકે તેવાં છે.” પણ આજે પણ આમાનાં કેટલાંક કાવ્યો આપણને આર્ક્ષે છે તે અંગે, જ્યાંત્ત પાઠક લખે છે કે, “કવિ કોઈ પ્રસંગથી પ્રેરાઈને લખે, તત્કાલીનતાના તકાદાને વશ થઈને લખે તોપણ, જો એ શક્તિશાળી કવિ હોય તો તેની કૃતિમાં કેટલુંક ચિરંજીવી, ટકાઉ તત્ત્વ પણ આવી જ જવાનું. મેઘાણીની કવિતામાં માત્ર તત્કાલીનતા હોત તો એનો મહિમા કદાચ ગંધીયુગ સાથે જ આથમી ગયો હોત.”

‘યુગવંદના’ના પ્રારંભે મુક્યાયેલું ‘કસુંબીનો રંગ’ કાવ્ય ભરત મહેતાની દસ્તિએ એમના સમગ્ર સાહિત્યની પ્રસ્તાવના છે, પૂર્ણાઙ્ગુહિ છે. જ્યાં જ્યાં એમણે કસુંબીનો રંગ જોયો ત્યાં ત્યાં એમણે કલમ દોડાવી. એમ કરતાં મુખર બન્યા, તે મુખરતાનો સ્વીકાર કર્યો. ...મેઘાણી હાલરકું લખે તો શિવાજીનું, બાળકાવ્ય લખે તો ચૌદ વરસની ચારણ કન્યાએ ગીરના સાવજને નસાડ્યાનું, (આવાં કાવ્ય ભણતરમાં આવે તો ભયગ્રંથિઓ તૂટે) કે વીરાજ કેરી ભીતે / ભેટે જૂલતી તલવારનું, શિષ્ટ

ଓમିକାବ୍ୟ ଲଖେ ତୋୟ ‘ଵିଦ୍ୟାୟ’, ‘ଫୁଲମାଣ’ କେ ‘ଵୀର ଜତୀନ୍ଦ୍ରନାଂ ସଂଭାରଣାଂ’ନୁ, ଜେମନା ପର ‘ଆଂତିଯତାନୀ ଗ୍ରଂଥିଥୀ ପୀଡାତା’ ହୋଲାନୋ ଆକ୍ଷେପ ମୁକ୍ତାଯେଲୋ ଏବା ମେଘାଣୀ ପାସେଥି ‘ଫୁଲମାଣ’ ଜେବି ଗାଂଧୀବିଚାରଧାରାଥୀ ସ୍ପଷ୍ଟପଣେ ଅବଳ ପଡ଼ତାଂ ଭଗତସିଂହବିଷ୍ୟକ କବିତା, ‘ଵୀର ଜତୀନ୍ଦ୍ରନାଂ ସଂଭାରଣାଂ’ମାଂ ପଣ ବଂଗାଳନା ଜ ଶହୀଦ, ‘କଣ୍ଠକ’ ନବଲକ୍ଷ୍ମୀମାଂ ସୁଭାଷଚଂଦ୍ର ବୋଜନୁ ଆଲେବନ କରତାଂ ସର୍ଜନୋ ମଧ୍ୟାଂ ଛେ. ‘ଛେଲ୍ଲୋ କଟୋରୋ’ ନାମନୀ ଗାଂଧୀଜିବିଷ୍ୟକ କବିତା ଵାଂଚିନେ ଗାଂଧୀଜିଙ୍କେ ଏମନେ ‘ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ଶାୟର’ କହିବା ହତା ତେମ ଛିତାଂ ତେବୋ କ୍ୟାରେଯ ସଂପୂର୍ଣ୍ଣପଣେ ଗାଂଧୀଜିଙ୍କା ଆଭାରତୁଳମାଂ ଆବ୍ୟା ନହିଁ.

ଯୁଗବଂଦନା ବିଶେ ବିବେଚକୋନା ଅଭିପ୍ରାୟୋ

ଆ ତତ୍କାଳୀନ ତକାଦାନେ ସୌଥି ପଢେଲାଂ ମୁକ୍ତନାରା ମେଘାଣୀ ଜ ହତା ଏବୋ ମତ ବ୍ୟକ୍ତ କରତାଂ ବିଶ୍ଵନାଥ ଭଣ୍ଡ ଲଖେ ଛେ କେ, “ଆଗାମୀସଙ୍ଗେ ତେବୀନା ବାଙ୍ଗ୍ୟନା ବାସ୍ତଵଦଶୀ ଦୀନଜନ ବାତସତ୍ୟ ଆପିଦି ଜେ ପ୍ରେରକବଣୋ ଗଣ୍ଯାବେଳାଂ ତେମାଂନା କେଟଲାଂକ ଆପଣୀ କବିତାମାଂ ସୌଥି ପଢେଲାଂ ଜେ କୋଈଏ ମୂର୍ତ୍ତ କର୍ତ୍ତା ହୋଇ ତୋ ତେ ‘ଯୁଗବଂଦନା’ନା ଜ କବିଏ. ଆ ଦିଲ୍ଲିଏ ଏମନା ଏ କାବ୍ୟସଂଗ୍ରହନୁ ନାମ ସର୍ବଥା ସାର୍ଥକ ଛେ.”

ମେଘାଣୀନୀ କବିତାଓନା ଦେଖିତା ବେ ଭାଗ ପରି ଜୟ ଛେ: (୧) ମୌଲିକ ସର୍ଜନ ଅନେ (୨) ଅନୁସର୍ଜନ.

ପଢେଲାଂ ମେଘାଣୀନୀ ମୌଲିକ କବିତା ବିଶେ ଜୁଦା ଜୁଦା ବିବେଚକୋନା ମତ ଜୋଈଏ. କୁଞ୍ଚୁବଳ ରଂଗନୀ କବିତା: ଧୀରୁଭାଈ ଧକେ ‘ଯୁଗବଂଦନା’ ବିଶେ ଆ ମତ ୨ଜୁ କର୍ତ୍ତା ଛେ. “‘ଯୁଗବଂଦନା’ ଏକ ରୀତେ ଯୁଗବଣୋନେ ଜୀବେ ଛେ ତେମ ତେମାଂ ଗୃହଜୀବନନା ତଣପଦା ଭାବେ ପଣ ପ୍ରଗଟ ଥାଯ ଛେ. ତେମାଂ ଥୋରାଂକ ପଣ ସୁନ୍ଦର ଦ୍ୟାମ୍ପତ୍ୟପ୍ରେମନାଂ ଆତମଲକ୍ଷ୍ମୀ କାବ୍ୟୋ ଛେ. ମାନବହନ୍ୟନା ଭବ୍ୟ ଅନେ କୋମଣ, ଦୁକ୍ର ଅନେ କୁରୁଷା, କୁତ୍ସିତ ଅନେ ସୁନ୍ଦର ଭାବୋନେ ଉତ୍କଟ ସଂବେଦନରୂପେ ଚିରସ୍ଥାୟୀ କରନାରୁ କୁଞ୍ଚୁବଳିନା ରଂଗନୁ ତଣପଦୁ ରୂପକ ତେମନୀ ପାସେଥି ମଣେ ଛେ ତେ ଶିତେ ତେମନୀ କବିତାନୁ ପଣ ପ୍ରତିକ ବନୀ ରହେ ଛେ.”

ଆବେ ଜ ମତ ଈଶ୍ଵରଲାଲ ଦଵେନୋ ଛେ, “ମେଘାଣୀନୀ କବିତାଓ କୁଞ୍ଚୁବଳ ରଂଗନୀ କବିତା ଛେ. ‘କୁଞ୍ଚୁବଳିନୋ ରଂଗ’ ଏ କାବ୍ୟ ମେଘାଣୀନୀ କବିତାମାଂ ବିଜରୂପେ ଛେ. ମେଘାଣୀନୀ କବିତା ଆ ବିଜମାଂଥି ପ୍ରସରୀ ଛେ. ମେଘାଣୀନୀ କବିତାନା ବଧା ରଂଗୋ ଆ କାବ୍ୟମାଂଥି ଜ୍ଞାଣେ ପ୍ରସର୍ୟ ଛେ. କୁଞ୍ଚୁବଳିନୋ ରଂଗ କବିନୀ ଜୀବନଭାବନାନୁ ପ୍ରତିକ ବନୀ ରହେ ଛେ.”

ମେଘାଣୀନୁ ଅନୁସର୍ଜନ: ମେଘାଣୀନୀ କବିତାଓମାଂ ଧାରୀ ବଧି ଅନୁଵାଦ କେ ରୂପାଂତର କେ ଅନ୍ୟମାଂଥି ସ୍ଫୁରେତୀ କବିତାଓ ଛେ. ଆ ବିଶେ ମେଘାଣୀ କହେ ଛେ କେ, “କବିତାକରୋନୋ ଏକ ସମ୍ଭୂତ ପୋତାନା ଉରସଂବେଦନୋ ଶବ୍ଦସ୍ଥ କରତେ ହଶେ, ପଣ ବିଜୋ ଏକ ସମ୍ଭୂତ ଛେ, ଜେ ବହୁଧା ପରାନୁଭବୋନେ ଜ ପୋତାନା ଉଭି-ତନ୍ତ୍ରନୀ ବିଜ୍ଞା କେ ଏକତାରା ପର ଭଜବା

મથે છે, એટલે કે મુખ્યત્વે એ કલ્યક છે, નિજાનુભવી નથી..” (‘એકતારો’, ઝવેરચંડ મેધાણી) આ ઉપરાંત, ધરતીનું ધાવણ-ભાગ-રમાં Process of transformation અર્થાત્ રૂપાન્તર કરવાની જે રસાયનકિયાની આવશ્યકતા મેધાણી સ્વીકારે છે.

વિવેચકોએ મેધાણીની અનુસર્જિત કવિતાઓને જુદા જુદા દષ્ટિકોષથી તપાસી છે. અનિરુદ્ધ બ્રહ્મભંગ લખે છે, “કવિતાના શબ્દ જ્યાં જ્યાં ઘૂંઠાઈને રસાયન પ્રક્રિયામાંથી પસાર થઈને આવ્યા છે ત્યાં ત્યાં મેધાણીની કવિતાસિદ્ધ જોવા મળે છે; અનુસર્જનો પણ લોકહૈયામાં રમી રહે તેવું વાણીસ્વરૂપ પ્રાપ્ત કરે છે. ‘કોઈનો વાડકવાયો’ એનું સમર્થ ઉદાહરણ છે.”

જ્યન્ત પાઠકના મતે, “મેધાણી લોકસાહિત્યના અભ્યાસી સંશોધક ને લોકગીતોના રાગઢળના જાગકાર હોઈ એમણે આપણાં તેમજ પશ્ચિમનાં કેટલાંક કથાકાયોને ગુજરાતીમાં ઉતાર્યા છે. આવી રચનાઓમાં તેઓ સંસ્કૃત રૂપમેળ વૃત્તોનો ઉપયોગ બહુ કરતા નથી, બહુધા લોકપ્રચારિત બળમાં જ કથાનિરૂપણ કરે છે.”

તો ધીરુભાઈ શકર લખે છે કે, “વર્ણનાત્મક રચનાઓને ગુજરાતીમાં ઉતારવાનું તેમને જેટલું ફાવે છે તેટલું સૂક્ષ્મ અને નાજુક ભાવલહરીઓને ઉતારવાનું બની શકતું નથી. ઊંઠું ચિન્તન અને ઉક્તિનું લાઘવ મેધાણીની બુલંદ વાણીને જીલાંતું ફાવતું નથી.”

ઈશ્વરલાલ દવે મેધાણીના રૂપાંતરને ઉત્તમ અનુસર્જન લેખતાં કહે કે, “અનુવાદ કે રૂપાંતર કરવામાં મેધાણીની પ્રતિભા જાણે પોતાની નિજી રચના હોય એવી માવજત કરી શકે છે. અનુસર્જન કરવામાં મેધાણીનું કવિત્વ ઉત્તમ રૂપમાં ખીલી ઉંડે છે. કેટલીક વાર તો મૂળ ફૂતિ સાધારણ હોય તોપણ કવિ એને ઉચ્ચ કક્ષાનું સર્જન બનાવી શકે છે.”

‘સૂના સમદરની પાળે’ અંગ્રેજી બેલેડ ‘Bingen on The Rhine’ પરથી સૂચિત મેધાણીનું કાચ્ય છે. આ કાચ્ય અંગે ચંદ્રકાન્ત ગોપીવાળા લખે છે કે, “મેધાણીમાં જવલે જોવા મળતી high aesthetic senseનો અનુભવ કરાવે છે.”

સંદર્ભ-સૂચિ

- અર્વાચીન ગુજરાતી સાહિત્યની વિકાસરેખા, ગાંધીયુગ અને અનુગાંધીયુગ – ધીરુભાઈ શકર
- યુગવંદના અંગે વિવેચકો, અજ્ય રાવલ, સન્નિધાન-૫
- મેધાણી સાહિત્યની પૂર્વભૂમિકા, ભરત મહેતા, સન્નિધાન-૫

